Class: **B.A. 2 year** **Course Code: MUSA204PR**

Subject: **Music (Vocal/Instrumental)** **Course Name: Viva-Voce**

MUSIC
(Viva-Voce)

Lesson : 1 - 16

Dr. Mritunjay Sharma

Centre for Distance & Online Education (CDOE)
Himachal Pradesh University
Gyan Path, Summer Hill, Shimla-171005

विषय सूची

क्रम	इकाई	विषय	पृ. सं.
1		विषय सूची	ii
2		प्राक्कथन	iii
3		पाठ्यक्रम	iv
4	इकाई - 1	बागेश्री राग का विलंबित ख्याल (गायन के संदर्भ में)	1
5	इकाई - 2	जौनपुरी राग का विलंबित ख्याल (गायन के संदर्भ में)	13
6	इकाई - 3	मियां मल्हार राग का विलंबित ख्याल (गायन के संदर्भ में)	25
7	इकाई - 4	बागेश्री राग की विलंबित गत/मसीतखानी गत (वादन के संदर्भ में)	40
8	इकाई - 5	जौनपुरी राग की विलंबित गत/मसीतखानी गत (वादन के संदर्भ में)	52
9	इकाई - 6	मियां मल्हार राग की विलंबित गत/मसीतखानी गत (वादन के संदर्भ में)	65
10	इकाई - 7	बागेश्री राग का छोटा ख्याल (मध्य लय/ द्रुत लय ख्याल) (गायन के संदर्भ में)	77
11	इकाई - 8	जौनपुरी राग का छोटा ख्याल (मध्य लय/द्रुत लय ख्याल) (गायन के संदर्भ में)	89
12	इकाई - 9	मियां मल्हार राग का छोटा ख्याल (मध्य लय/ द्रुत लय ख्याल) (गायन के संदर्भ में)	100
13	इकाई - 10	बागेश्री राग की द्रुत गत/रजाखनी गत (वादन के संदर्भ में)	112
14	इकाई - 11	जौनपुरी राग की द्रुत गत/रजाखनी गत (वादन के संदर्भ में)	124
15	इकाई - 12	मियां मल्हार राग की द्रुत गत/रजाखनी गत (वादन के संदर्भ में	136
16	इकाई - 13	ताल • चौताल • रूपक ताल • कहरवा	149
17	इकाई - 14	धमार	162
18	इकाई - 15	बागेश्री राग की द्रुत गत/रजाखनी गत (एकताल में)	172
19	इकाई - 16	लोक गीत / लोक धुन	184
20		महत्वपूर्ण प्रश्न	194

प्राक्कथन

संगीत स्नातक के नवीन पाठ्यक्रम के क्रियात्मक विषय के MUSA204PR में संगीत से सम्बन्धित उपयोगी सामग्री का समावेश किया गया है। संगीत में प्रायोगिक तथा सैद्धान्तिक दोनों पक्षों का योगदान रहता है। गायन तथा वादन में भी इन्हीं दोनों पक्षों का महत्वपूर्ण स्थान रहता है। संगीत में क्रियात्मक पक्ष के अंतर्गत मंच प्रदर्शन तथा मौखिकी का भी महत्वपूर्ण स्थान रहता है। प्रस्तुत पाठ्यक्रम में संगीत की क्रियात्मक तथा मौखिकी परीक्षा को ध्यान में रखकर पाठ्य सामग्री दी गई है। इस पुस्तक के

इकाई 1 में गायन के संदर्भ में बागेश्री राग का परिचय, आलाप, विलंबित ख्याल, तानों आदि का वर्णन किया गया है।

इकाई 2 में गायन के संदर्भ में जौनपुरी राग का परिचय, आलाप, विलंबित ख्याल, तानों आदि का वर्णन किया गया है।

इकाई 3 में गायन के संदर्भ में मियां मल्हार राग का परिचय, आलाप, विलंबित ख्याल, तानों आदि का वर्णन किया गया है।

इकाई 4 में वादन के संदर्भ में बागेश्री राग का परिचय, आलाप, विलंबित/मसीतखानी गत, तोड़ों आदि का वर्णन किया गया है।

इकाई 5 में वादन के संदर्भ में जौनपुरी राग का परिचय, आलाप, विलंबित/मसीतखानी गत, तोड़ों आदि का वर्णन किया गया है।

इकाई 6 में वादन के संदर्भ में मियां मल्हार राग का परिचय, आलाप, विलंबित/मसीतखानी गत, तोड़ों आदि का वर्णन किया गया है।

इकाई 7 में गायन के संदर्भ में बागेश्री राग का परिचय, आलाप, छोटा ख्याल, तानों आदि का वर्णन किया गया है।

इकाई 8 में गायन के संदर्भ में जौनपुरी राग का परिचय, आलाप, छोटा ख्याल, तानों आदि का वर्णन किया गया है।

इकाई 9 में गायन के संदर्भ में मियां मल्हार राग का परिचय, आलाप, छोटा ख्याल, तानों आदि का वर्णन किया गया है।

इकाई 10 में वादन के संदर्भ में बागेश्री राग का परिचय, आलाप, द्रुत गत/रजाखनी गत, तोड़ों आदि का वर्णन किया गया है।

इकाई 11 में वादन के संदर्भ में जौनपुरी राग का परिचय, आलाप, द्रुत गत/रजाखनी गत, तोड़ों आदि का वर्णन किया गया है।

इकाई 12 में वादन के संदर्भ में मियां मल्हार राग का परिचय, आलाप, द्रुत गत/रजाखनी गत, तोड़ों आदि का वर्णन किया गया है।

इकाई 13 में ताल पक्ष से चौताल, धमार ताल, रूपक ताल, झपताल का परिचय तथा बोलों का एकगुण, दुगुण, तिगुण व चौगुण में वर्णन किया गया है।

इकाई 14 में गायन के संदर्भ में धमार गरयन शैली का वर्णन किया गया है।

इकाई 15 में वादन के संदर्भ में बागेश्री राग की द्रुत गत/रजाखनी गत (एकताल में) में तोड़ों सहित दी गई है।

इकाई 16 में लोक गीत / लोक धुन दी गई है।

प्रत्येक इकाई में शब्दावली, स्वयं जांच अभ्यास प्रश्न तथा उत्तर, संदर्भ, अनुशंसित पठन, पाठगत प्रश्न दिए गए हैं।

प्रस्तुत पाठ्यक्रम को लिखने के लिए स्वयं के अनुभव से, संगीतज्ञों के साक्षात्कार से तथा संगीत से सम्बन्धित पुस्तकों द्वारा शिक्षण सामग्री एकत्रित की गई है। मैं उन सभी संगीतज्ञों तथा लेखकों का आभारी हूं जिनके ज्ञान द्वारा तथा जिनकी संगीत संबंधी पुस्तकों द्वारा शिक्षण सामग्री को यहां लिया गया है। आशा है कि विद्यार्थियों के लिए यह पुस्तक लाभप्रद होगी।

डॉ. मृत्युंजय शर्मा

CODE MUSA204PR

Hindustani Music (Vocal/Inst.)

Paper-IIV Practical (Unit-II)

Title - Viva-Voce

Max Marks 50 (35+15 Assesment) **Credit 3**

Rãga

- Bageshri
- Jaunpuri
- Miyan Malhar

1. One VilambitKhyãl/ MaseetKhani Gat in any of the Rãgas.

2. MadhyalayaKhyãl/ Razakhani Gat in all the Rãgas.

3. Dhrupad/Dhamar in any one of the Rãgas or Drut Gat in any Tãla (other than Teentãla)

4. Ability to recite the Thekas of Chautãl, Rupak, Kaherva ,

5. Knowledge of playing National Anthom or Himachali Folk songs on Harmonium/Sitar.

इकाई-1
बागेश्री राग का विलंबित ख्याल
(गायन के संदर्भ में)

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
1.1	भूमिका
1.2	उद्देश्य तथा परिणाम
1.3	राग बागेश्री
1.3.1	बागेश्री राग का परिचय
1.3.2	बागेश्री राग का आलाप
1.3.3	बागेश्री राग का विलंबित ख्याल
1.3.4	बागेश्री राग की तानें
	स्वयं जांच अभ्यास 1
1.4	सारांश
1.5	शब्दावली
1.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
1.7	संदर्भ
1.8	अनुशंसित पठन
1.9	पाठगत प्रश्न

1.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA204PR की यह पहली इकाई है। इस इकाई में गायन संगीत के संदर्भ में, राग बागेश्री का परिचय, आलाप, विलंबित ख्याल/बड़ा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग का, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग बागेश्री के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, विलंबित ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग बागेश्री का आलाप, विलंबित ख्याल तथा तानों को गा सकेंगे।

1.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- बागेश्री राग के स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- बागेश्री राग के आलाप, विलंबित ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- बागेश्री राग के आलाप, विलंबित ख्याल तथा तानों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को गायन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी गायन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा

- बागेश्री राग के आलाप, विलंबित ख्याल तथा तानों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- बागेश्री राग के आलाप, विलंबित ख्याल तथा तानों को गाने में सक्षम होंगे।
- राग बागेश्री के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

1.3 राग बागेश्री

1.3.1 बागेश्री राग का परिचय

राग - बागेश्री

थाट - काफ़ी

जाति - औडव संपूर्ण

वादी - मध्यम

संवादी - षड्ज

स्वर - गंधार तथा निषाद कोमल (ग़ नि़)

वर्जित - आरोह में रिषभ तथा पंचम

समय - रात्रि का तीसरा प्रहर

समप्रकृतिक राग - रागेश्री

आरोह – नी़ सा ग़ म ध नि़ सां

अवरोह - सां नि़ ध, म प ध ग़, म ग़ रे सा

पकड़ - सां नि़ ध म प ध ग़, रे सा

बागेश्री राग काफी थाट का एक राग है। इसकी जाति औडव-संपूर्ण मानी जाती है। वादी स्वर मध्यम तथा संवादी स्वर षड्ज है। इस राग में गंधार तथा निषाद कोमल प्रयुक्त होते हैं। बागेश्री राग के आरोह में रिषभ तथा पंचम वर्जित रहते हैं। इसका समय रात्रि का तीसरा प्रहर माना जाता है। बागेश्री एक अत्यन्त मधुर राग है। इस राग का उपयोग कर विद्वानों ने कई मधुर सांगीतिक रचनाएं की हैं।

आरोह करते समय रिषभ वर्जित रहता है अतः प्रारम्भ में नी सा ग म ध, नी सा ग म आदि किया जाता है। इस राग में षड्ज से सीधे मध्यम पर भी आते हैं। जैसे-नी सा म ग रे सा। षड्ज से मध्यम पर आना इस राग की अपनी विशेषता है। बागेश्री राग में पंचम का अल्प प्रयोग होता है।

राग का अवरोह करते समय पंचम का प्रयोग केवल एक विशेष ढंग से किया जाता है, जैसे सां नी ध, म प ध ऽ ग, म ग रे सा। पंचम का सीधा प्रयोग राग में नहीं किया जाता है, जैसे सां नी ध प म आदि।

इस राग का प्रमुख स्वर समुदाय ध़ नी सा म, ग म ध नी ध तथा म प ध ग ऽ है। इन्हीं के आधार पर आलाप तान आदि की रचनाएं की जाती हैं। इस राग में ध ग की संगति प्रयुक्त होती है, जैसे म प ध ग, रे सा।

बागेश्री राग का आरम्भ (आलाप) सा नी ध़ नी सा म या ध़ नी सा म करते हुए ही करना चाहिए। इसका समप्रकृतिक राग रागेश्री है। दोनों में अंतर यह है कि बागेश्री में पंचम का प्रयोग किया जाता है वही रागेश्री में पंचम वर्जित रहता है।

बागेश्री में कोमल गंधार का प्रयोग है वहीं दूसरी ओर रागेश्री में गंधार शुद्ध है जैसे- बागेश्री - नी सा म ग, म ध नी ध, म प ध ग, म ग रे सा। रागेश्री – नी सा ग म, ग म ध नी ध म, ग म रे सा।

1.3.2 बागेश्री राग का आलाप

- सा, नी॒ सा, सा, ऩी॒ ध़ - सा रे सा,
- ध़ ऩी॒ ऩी॒ ध़ ऩी॒ सा, सा ऩी॒ ध़ म़ -, म़
  ध़ ऩी॒ ऩी॒ सा, सा,
- ध़ ऩी॒ सा म ग॒ – म ग॒ रे सा
- सा ऩी॒ ध़ ऩी॒ ध़ -, म़ म़ ध़,
  म़ ध़ ऩी॒ ऩी॒ सा, सा
- ध़ ऩी॒ सा म -, ग॒ म ग॒ रे सा, ग॒
  म ग॒ – ग॒ म ध – म ग॒, म ग॒ रे सा
- म ग॒ ध, ध म – ध नी॒ ध म,
  म ध नी॒ नी॒ सां, सां
- सां – गं॒ गं॒ रें सां -, ध नी॒ नी॒ सां,
  मं गं॒ रें सां सां,
- सां नी॒ ध नी॒ ध – म प ध ग॒ – म ग॒
  रे सा, ध़ ऩी॒ ऩी॒ सा म ग॒ रे सा, सा

1.3.3 बागेश्री राग विलंबित ख्याल/बड़ा ख्याल

राग: बागेश्री **ताल: एकताल** **लय: विलम्बित लय**

स्थायी

कासे कहूँ मन की बतियाँ, तरपत बीतत रतियाँ।

अन्तरा

सुजन पिया – परदेस गवन किनो, लिखी न पतियाँ।।

स्थायी

X		0		2		0		3		4	
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
								सां	नि	धप	धनि
								का	ऽ	ऽऽ	सेक
सां	ऽ	नि	ध	मपध	ग	रे	सा				
हूँ	ऽ	म	न	कीऽऽ	ब	ति	यां				
								ध	नि	सा	सा
								त	रे	प	त
म	ध	नि	ध	ग	रे	सा	ऽ				
बी	ऽ	त	त	र	ति	यां	ऽ				

अंतरा

								म	ध	नि	निध
								सु	ज	न	पिऽ
सां	ऽ	नि	सां	मं	गं	रें	सां				
या	ऽ	प	र	दे	ऽ	स	ग				
X		0		2		0		3		4	
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
								नि	ध	म	सां
								व	न	की	ऽ
नि	ध	मपध	ग	म	ग	रे	सा				
नो	लि	खीऽऽ	न	प	ति	यां	ऽ				

1.3.4 बागेश्री की तानें

- दूसरी मात्रा से मुखड़ा

सा॒नी॒ध॒नी॒	सागमध	नीनीधम	गरेसा-

- दूसरी मात्रा से मुखड़ा

सा॒नी॒ध॒नी॒	सागमध	नीसांनीध	मपध-
सांनीधम	धनीधम	गरेसा-	

- सम से मुखड़ा

मधनीसां	धनीसानी	धमगम	गरेसा-
गमधनी	सां-गम	धनीसां-	गमधनी

- पांचवीं मात्रा से मुखड़ा

ध॒नी॒सा॒नी॒	सा-ध॒नी॒	सा॒नी॒सा-	ध॒नी॒सा॒नी॒

- दूसरी मात्रा से मुखड़ा

सा॒नी॒ध॒नी॒	रेसा॒नी॒सा	मगरेसा	धमगम
नीधसांनी	धमगम	गरेसा-	

- पांचवीं मात्रा से मुखड़ा

मगरेसा	गरेसा॒नी॒	रेसा॒नी॒ध॒	सा॒नी॒ध॒नी॒
सासा॒नी॒सा	गगसाग	ममगम	धधमध
नीनीधनी	सांसांनीसां	गंगरेंसां	नीधसांनी
धनीधम	गमधनी	सांनीधम	धमनीसां

- सम से सम

साऩीध़ऩी	रेसाऩीध़	मग़रेसा	धमग़म
नीधनीध	सांनीसांनी	रेंसारेंसां	नीधनीध
सासाधनी	धमगम	गरेसासा	गमधनी

- सम से मुखड़ा

ऩीसागग	सागमम	गमधध	मधनीनी
धनीसांसां	नीसांगंगं	रेंसांनीसां	धनीधम
मगरेसा	मगरेसा	ऩीसाध़ऩी	सा-धनी
सां---	मगरेसा	ऩीसाध़ऩी	सा-धनी
सां---	मगरेसा	ऩीसाध़ऩी	सा-धनी

स्वयं जांच अभ्यास 1

1.1 बागेश्री राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) म

ख) नि

ग) नी

घ) ग

1.2 बागेश्री राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) सा

ग) प

घ) म

1.3 बागेश्री राग का समय निम्न में से कौन सा है?

क) दिन का प्रथम प्रहर

ख) दिन का तीसरा प्रहर

ग) रात्रि का तीसरा प्रहर

घ) दोपहर

1.4 बागेश्री राग में, निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में कोमल होता है?

क) कोई भी नहीं

ख) षड़ज

ग) मध्यम

घ) गंधार

1.5 बागेश्री राग में निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में वर्जित होता है?

क) प

ख) म

ग) म

घ) सा

1.6 बागेश्री राग का थाट निम्न में से कौन सा है?

क) कल्याण

ख) काफी

ग) भैरवी

घ) तोड़ी

1.7 बागेश्री राग के संदर्भ में निम्न में से कौन सी स्वर संगति ठीक है?

क) ध नि ध प, म॑ ग

ख) ध सां नि ध प, म ग

ग) नि ध म प ध ग

घ) ध नि सां नी ध म ग

1.8 बागेश्री राग की बंदिशों/गतों में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 9

ख) 16

ग) 2

घ) 1

1.9 बागेश्री राग की बंदिशों/गतों के साथ केवल एकताल का ही प्रयोग होता है।

क) नहीं

ख) हां

1.10 बागेश्री राग, काफी तथा श्री रागों के मिश्रण से बना है।

क) सही

ख) गलत

1.4 सारांश

बागेश्री राग भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रचलित राग है। शास्त्रीय संगीत की गायन विधा के अंतर्गत इस राग को गाया जाता है। शास्त्रीय संगीत में रागों के प्रस्तुतिकरण के लिए तथा संगीत के अभ्यास के लिए राग का अभ्यास शुरू से ही किया जाता है। बागेश्री राग का आलाप अनिबद्ध (ताल रहित) होता है। इस राग में विलंबित ख्याल/बड़ा ख्याल, विलंबित लय में गाया जाता है। इसमें तानों का अपना महत्व है और विभिन्न प्रकार की तानों को इसमें विभिन्न प्रकार की लयकारियों के साथ गाया जाता है।

1.5 शब्दावली

- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप सें राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।

- विलंबित ख्याल/बड़ा ख्याल: गायन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी गीत रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा विलंबित लय में गाई जाती हो उसे विलंबित ख्याल/बड़ा ख्याल कहते हैं।
- तान: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, गाया जाता है तो उसे तान कहते हैं।
- लय: गायन/वादन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।
- विलंबित लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत धीमी गति मे चलती है तो उसे विलंबित लय कहते हैं।

1.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

1.1 उत्तर: क)

1.2 उत्तर: ख)

1.3 उत्तर: ग)

1.4 उत्तर: घ)

1.5 उत्तर: क)

1.6 उत्तर: ख)

1.7 उत्तर: ग)

1.8 उत्तर: घ)

1.9 उत्तर: क)

1.10 उत्तर: ख)

1.7 संदर्भ

मिश्र, शंकर लाल (1998).नवीन ख्याल रचनावली, अभिषेक पब्लिकेशन, चंडीगढ

अत्रे, डॉ. प्रभा. (2007). स्वरंजनी रात्रिकालीन रागों की बंदिशों का संकलन, बी. आर. रिदम्स, दिल्ली।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

1.8 अनुशंसित पठन

भातखंडे, विष्णुनारायण. (2017). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

मिश्र, शंकर लाल (1998).नवीन ख्याल रचनावली, अभिषेक पब्लिकेशन, चंडीगढ

झा, पं. रामाश्रय. (2040). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

1.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग बागेश्री का परिचय लिखिए/बताइए।

प्रश्न 2. राग बागेश्री का आलाप लिखिए।

प्रश्न 3. राग बागेश्री के विलंबित ख्याल/ बड़ा ख्याल को लिखिए।

प्रश्न 4. राग बागेश्री में पांच तानों को लिखिए।

इकाई-2
जौनपुरी राग का विलंबित ख्याल
(गायन के संदर्भ में)

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
2.1	भूमिका
2.2	उद्देश्य तथा परिणाम
2.3	राग जौनपुरी
2.3.1	जौनपुरी राग का परिचय
2.3.2	जौनपुरी राग का आलाप
2.3.3	जौनपुरी राग का विलंबित ख्याल
2.3.4	जौनपुरी राग की तानें
	स्वयं जांच अभ्यास 1
2.4	सारांश
2.5	शब्दावली
2.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
2.7	संदर्भ
2.8	अनुशंसित पठन
2.9	पाठगत प्रश्न

2.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA204PR की यह दूसरी इकाई है। इस इकाई में गायन संगीत के संदर्भ में, राग जौनपुरी का परिचय, आलाप, विलंबित ख्याल/बड़ा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग का, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग जौनपुरी के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, विलंबित ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग जौनपुरी का आलाप, विलंबित ख्याल तथा तानों को गा सकेंगे।

2.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- जौनपुरी राग के स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- जौनपुरी राग के आलाप, विलंबित ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- जौनपुरी राग के आलाप, विलंबित ख्याल तथा तानों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को गायन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी गायन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा

- जौनपुरी राग के आलाप, विलंबित ख्याल तथा तानों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- जौनपुरी राग के आलाप, विलंबित ख्याल तथा तानों को गाने में सक्षम होंगे।
- राग जौनपुरी के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

2.3 राग जौनपुरी

2.3.1 जौनपुरी राग का परिचय

राग - जौनपुरी

थाट – आसावरी

जाति - षाडव-संपूर्ण

वादी - धैवत

संवादी - गंधार

स्वर - गंधार, धैवत, निषाद कोमल, अन्य स्वर शुद्ध

वर्जित - आरोह में गंधार

न्यास के स्वर - गंधार, धैवत, पंचम

समय - दिन का दूसरा प्रहर

आरोह – सा रे म प ध॒ नी॒ सां

अवरोह - सां नि॒ ध॒ प म ग॒ रे सा

पकड़ - म प, नी ध प, ध म प ग रे म प

राग जौनपुरी, आसावरी थाट का एक राग है। इसके आरोह में गंधार स्वर वर्जित हैं। इसकी जाति षाड़व-संपूर्ण है। जौनपुरी का वादी स्वर धैवत तथा संवादी स्वर गंधार है। इस राग में गंधार, धैवत, निषाद कोमल, अन्य स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं तथा इसका गायन/वादन समय दिन का दूसरा प्रहर माना गया है। जौनपुरी राग के आरोह में गंधार वर्जित रहता है, जैसे - सा रे म प ध प । जौनपुरी राग में रे म प और प ग स्वरों की संगति बार बार सुनने को मिलती है। इस राग में ग स्वर पर म और ध स्वर पर नि का कण लगाया जाता है। राग में गंधार तथा धैवत स्वरों को आंदोलित किया जाता है।

2.3.2 जौनपुरी राग का आलाप

- सा रे म प ध प, ध म प ग – रे म प, प ध म प ग- रे सा रे सा, प ध म प, प नि ध प।
- सा रे म प ध प, म प नि ध प म प नि ध प, म प ध नि सां ध – प
- म प ध – नि सां सां नि ध प म प ध नि सां, प ध म प ध नि सां,
- प नि ध प म प ध नि सां रें नि ध प नि ध म प ध नि सां रे नि ध प ध म प – ग -रे म प ग रे सा।
- म प ध नि सां, सां रें गं – रें सां, रें मं गं -रें सां, रें मं प – गं – गं रें सां
- सां, नि सा रे नि ध प म प नि ध प , ध म प ग – रे सा, रे म प नि ध -प ।

2.3.3 जौनपुरी राग विलंबित ख्याल/बड़ा ख्याल

राग: जौनपुरी **ताल: तीनताल** **लय: विलम्बित लय**

x				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
स्थाई															
												रे	म	प	प सां नी सां
												कै	से	के	आऽ
नी	ध	प	-	धम	मप	धध	पमप	म ग	-	सारे	सा				
ऊूं	ऽ	ऽ	ऽ	पीऽ	याऽ	तोऽ	रेऽऽ	पा	ऽ	ऽ	स				
												नी सां	नी ध	नी ध	प
												दु	र	ज	न
पध	पधनी	धप	धम	म	म	प	प ध प धपमप	म ग	-	सा रे	सा				
लोऽ	ऽऽऽ	गाऽ	ऽऽ	क	रे	ऽ	ऽऽऽऽऽ	हा	ऽ	ऽ	सा				
अंतरा															
												म	म	प	प
												ए	क	ड	र
नी ध	-	नी ध	प	प सां	-	सां	सां	सां नी	सां	सां	-				
है	ऽ	मो	हे	सा	ऽ	स	न	नं	द	को	ऽ				
												ध	-	सां	रें
												दू	ऽ	जे	ऽ
सां गं	-	सां रें	सां	प नी	-	सां	रें	नी	ध	-	प				
सो	ऽ	त	न	के	ऽ	ऽ	ऽ	बा	ऽ	ऽ	ऽ				

2.3.4 जौनपुरी की तानें

- नीसारे सारेम रेमप मपध पधनी

  धनीसां सांनीध नीधप धपम पमग

  मगरे गरेसा

- मपपधप धनीनीधप मपपमग रेसासानीसा

  रे रेरे मप ध - रे रेरे मप ध - रे रेरे मप

- सारेमम रेमपप मपधध पधनीनी धनीसासा

  नीसारेरे सानीधप मगरेसा रेम रेम पधमप

  ध- रेम रेम पधमप ध- रेम रेम पधमप

- सासासा रेरेरे ममम पपप धधध

  नीनीनी सासासा रेरेरे सासासा नीनीनी

  धधध पपप ममम गगग रेरेरे ससासा

- सारेसारेम रेमरेमप मपमपध पधपधनी धनीधनीसा

  सनीसनीध नीधनीधप धपधपम पमपमग मगमगरे गरेगेरेसा

- रेरेरे पपप ममम धधध पपप

  नीनीनी धधध सासासा सासासा नीनीनी

  धधध पपप नीनीनी धधध पपप

ममम धधध पपप ममम रेरेरे सासासा

- नीनीध धधप पपम ममग गगरे

  रेरेसा सानीनीध नीधधप धपपम पममग गरेरेसा

- रेमपधनी मपधनीसा पधनीसारे धनीसरेग

  गरेसनीध रेसनीधप सानीधपम नीधपमग

  धपमगरे पमगरेसा सारेमपधनीसा धनीसा

  सारेमपधनीसा धनीसा सारेमपधनीसा धनीसा

- मपधनि सांनिधप मपधप मगरेसा

- सांसां निसा धप मप गरे सासा सानि ध़प़

  गम पध पध निध निसां रेसा सांनि धप

- सारे मप धनि धप मप धप मग रेसा

- सांनि धप मप धनि सांनि धप मग रेसा

- सारें गरें सांनि सांनि धपनिनि धप मग रे-सा-।

- मप मप धनि धप मप धप मग रेसा

  मप धनि सांनि धप मप गम गरे सासा

- सांनि धप निध मप धप मप गम रेसा

  सारें सांनि धनि धप मप धप मग रेसा

- मम रेम गरे सा- पप मप मग रेसा

  धप मप मग रेसा निनिधनि धप मग

  सांसां निसां धप मप गंगं रेंसां रेंरें सांनि

  सांसां निध निनि धप धधपम गरे सा-

स्वयं जांच अभ्यास 1

2.1 जौनपुरी राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) ध

ख) नि

ग) म

घ) ग

2.2 जौनपुरी राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) ग

ग) प

घ) सा

2.3 जौनपुरी राग का समय निम्न में से कौन सा है?

क) दिन का प्रथम प्रहर

ख) दिन का तीसरा प्रहर

ग) दिन का दूसरा प्रहर

घ) दोपहर

2.4 जौनपुरी राग में, निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में कोमल होता है?

क) ऋषभ

ख) षड़ज

ग) मध्यम

घ) कोई भी नहीं

2.5 जौनपुरी राग में निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में वर्जित होता है?

क) ग

ख) प

ग) म

घ) सा

2.6 जौनपुरी राग का थाट निम्न में से कौन सा है?

क) कल्याण

ख) आसावरी

ग) भैरवी

घ) तोड़ी

2.7 जौनपुरी राग के संदर्भ में निम्न में से कौन सी स्वर संगति ठीक है?

क) ध नि ध प, म॑ ग

ख) ध सां नि ध प, म ग

ग) ध नि ध प, ध म ग

घ) ध नि सां नी ध म ग

2.8 जौनपुरी राग की बंदिशों/गतों में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 2

ख) 16

ग) 9

घ) 1

2.9 जौनपुरी राग की बंदिशों/गतों के साथ केवल एकताल का ही प्रयोग होता है।

क) हां

ख) नहीं

2.10 जौनपुरी राग, मालकौंस तथा पूरिया रागों के मिश्रण से बना है।

क) सही

ख) गलत

2.4 सारांश

जौनपुरी राग भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रचलित राग है। शास्त्रीय संगीत की गायन विधा के अंतर्गत इस राग को गाया जाता है। शास्त्रीय संगीत में रागों के प्रस्तुतिकरण के लिए तथा संगीत के अभ्यास के लिए राग का अभ्यास शुरू से ही किया जाता है। जौनपुरी राग का आलाप अनिबद्ध (ताल रहित) होता है। इस राग में विलंबित ख्याल/बड़ा ख्याल, विलंबित लय में गाया जाता है। इसमें तानों का अपना महत्व है और विभिन्न प्रकार की तानों को इसमें विभिन्न प्रकार की लयकारियों के साथ गाया जाता है।

2.5 शब्दावली

- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप सें राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।
- विलंबित ख्याल/बड़ा ख्याल: गायन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी गीत रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा विलंबित लय में गाई जाती हो उसे विलंबित ख्याल/बड़ा ख्याल कहते हैं।
- तान: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, गाया जाता है तो उसे तान कहते हैं।
- लय: गायन/वादन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।
- विलंबित लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत धीमी गति मे चलती है तो उसे विलंबित लय कहते हैं।

2.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

2.1 उत्तर: क)

2.2 उत्तर: ख)

2.3 उत्तर: ग)

2.4 उत्तर: घ)

2.5 उत्तर: क)

2.6 उत्तर: ख)

2.7 उत्तर: ग)

2.8 उत्तर: घ)

2.9 उत्तर: क)

2.10 उत्तर: ख)

2.7 संदर्भ

मिश्र, शंकर लाल (1998).नवीन ख्याल रचनावली, अभिषेक पब्लिकेशन, चंडीगढ

अत्रे, डॉ. प्रभा. (2007). स्वरंजनी रात्रिकालीन रागों की बंदिशों का संकलन, बी. आर. रिदम्स, दिल्ली।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

झा, पं. रामाश्रय. (2040). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

2.8 अनुशंसित पठन

भातखंडे, विष्णुनारायण. (2017). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

मिश्र, शंकर लाल (1998).नवीन ख्याल रचनावली, अभिषेक पब्लिकेशन, चंडीगढ

अत्रे, डॉ. प्रभा. (2007). स्वरंजनी रात्रिकालीन रागों की बंदिशों का संकलन, बी. आर. रिदम्स, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

झा, पं. रामाश्रय. (2040). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

2.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग जौनपुरी का परिचय लिखिए/बताइए।

प्रश्न 2. राग जौनपुरी का आलाप लिखिए।

प्रश्न 3. राग जौनपुरी के विलंबित ख्याल/ बड़ा ख्याल को लिखिए।

प्रश्न 4. राग जौनपुरी में पांच तानों को लिखिए।

इकाई-3
मियां मल्हार राग का विलंबित ख्याल
(गायन के संदर्भ में)

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
3.1	भूमिका
3.2	उद्देश्य तथा परिणाम
3.3	राग मियां मल्हार
3.3.1	मियां मल्हार राग का परिचय
3.3.2	मियां मल्हार राग का आलाप
3.3.3	मियां मल्हार राग का विलंबित ख्याल 1
3.3.4	मियां मल्हार राग का विलंबित ख्याल 2
3.3.5	मियां मल्हार राग की तानें
	स्वयं जांच अभ्यास 1
3.4	सारांश
3.5	शब्दावली
3.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
3.7	संदर्भ
3.8	अनुशंसित पठन
3.9	पाठगत प्रश्न

3.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA204PR की यह तीसरी इकाई है। इस इकाई में गायन संगीत के संदर्भ में, राग मियां मल्हार का परिचय, आलाप, विलंबित ख्याल/बड़ा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग का, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग मियां मल्हार के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, विलंबित ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग मियां मल्हार का आलाप, विलंबित ख्याल तथा तानों को गा सकेंगे।

3.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- मियां मल्हार राग के स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- मियां मल्हार राग के आलाप, विलंबित ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- मियां मल्हार राग के आलाप, विलंबित ख्याल तथा तानों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को गायन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी गायन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा

- मियां मल्हार राग के आलाप, विलंबित ख्याल तथा तानों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- मियां मल्हार राग के आलाप, विलंबित ख्याल तथा तानों को गाने में सक्षम होंगे।
- राग मियां मल्हार के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

3.3 राग मियां मल्हार

3.3.1 मियां मल्हार राग का परिचय

राग - मियां मल्हार

थाट – काफी

जाति – संपूर्ण-षाडव

वादी - षड्ज

संवादी - पंचम

वर्जित स्वर – अवरोह में धैवत

स्वर – गंधार कोमल(ग) , दोनों निषाद (नी नी), अन्य स्वर शुद्ध

न्यास के स्वर – षडज, ऋषभ, पंचम, निषाद

समय – मध्य रात्रि

समप्रकृतिक राग – बहार

आरोह: ऩी सा, ᵐरे ऽ प, ᵐग ऽ ग म रे सा, म रे प, नी ऽ ध नी ऽ सा।

अवरोह: सां नि प, म प ᵐगऽ म रे ऽनि ऽ ध़ नि ऽ सा ऽ।

पकड़: , ᵐरे ऽ प, ᵐग ऽ ग म रे सा, ऽनि ऽ ध़ नि ऽ सा

मियां मल्हार राग, काफी थाट का एक मधुर राग है। इस राग की जाति संपूर्ण-षाडव है। मियां मल्हार राग का वादी स्वर ऋषभ तथा संवादी स्वर पंचम है। प्रस्तुत राग में गंधार कोमल(ग), दोनों निषाद (नी नी), अन्य स्वर शुद्ध लगते हैं। राग में अवरोह में धैवत स्वर वर्जित होता है। इस राग का प्रस्तुति समय मध्य रात्रि माना जाता है। इस राग में षडज, ऋषभ, पंचम, निषाद पर न्यास किया जाता है। इस राग की प्रकृति गंभीर है। माना जाता है कि तानसेन ने इस राग को रचा था।

प्राचीन ग्रन्थों में इस राग का वर्णन नहीं मिलता है। इस राग को मियाँ मल्हार के स्थान पर 'मल्हार' भी कहा जाता है। मियाँ मल्हार में गंधार कोमल(ग) रूप में प्रयुक्त होता है तथा आन्दोलित रहता है। अवरोह में गंधार का वक्र प्रयोग होता है (म प ग म रे सा), इसमें गंधार का आन्दोलन मध्यम का स्पर्ष करते हुए किया जाता है। मियाँ मल्हार के आरोह में सा रे ग म का सीधा प्रयोग नहीं किया जाता है परन्तु सा रे प के बाद ग म रे सा करते हैं। सा रे प या स्वर संगति मल्हार की विशेष या राग वाचक संगति भी कही गई है।

मियाँ मल्हार के आरोह में शुद्ध निषाद तथा अवरोह में कोमल निषाद का प्रयोग किया जाता है। साथ ही अवरोह में धैवत वर्जित रहने के कारण नि प की संगति रहती है, जैसे- सा म रे ऽ प, म प नि ध नि सां, सां नि प, म प ग म रे सा। कभी-कभी इस राग में दोनों निषादों का एक साथ प्रयोग किया जाता है, जैसे-ग म रे सा, नि़ ध़ नि़ नि़ सा। यह क्रिया अधिकतर मींड से ही ली जाती है। दोनों निषादों का एक साथ प्रयोग मियाँ मल्हार की निजी विशेषता है।

मियाँ मल्हार का समप्रकृतिक राग बहार है। स्वरों की दृष्टि से ये दोनों राग एक समान हैं। दोनों ही रागों में ग म रे सा, नि़ ध़ नि़ सा तथा नि प स्वर समुदाय प्रयुक्त किये जाते हैं। अन्तर की दृष्टि से देखे तो पता चलता है कि बहार राग उत्तरांग प्रधान है तथा मियाँ मल्हार राग मंद्र तथा मध्य सप्तक में अधिक गाया बजाया जाता है। बहार राग में गंधार का सीधा प्रयोग होता है। दूसरी ओर मियाँ मल्हार में गंधार हमेशा मध्यम का कण लेकर आंदोलित रहता है। मियाँ मल्हार में जहाँ रे प की संगति की जाती है वहीं बहार में सा म की संगति रहती है। यह संगतियाँ राग वाचक मानी जाती हैं, जैसे - मियाँ मल्हार (सा रे प, म प ग म रे सा) बहार (सा म म, म प ग म नि ध नि सां)। दूसरा मुख्य अंतर यह है कि नि़ ध़ नि सा स्वर समुदाय दोनों रागों में अलग अलग ढंग से लगते हैं। बहार राग में इस स्वर समुदाय के हर स्वर को सीधा लिया जाता है, जैसे-नि़ ध़ नि़ सा जबकि मियाँ मल्हार में दोनों निषादों को बढ़ाया जाता है, जैसे -नि़ ऽ ध़ नि़ ऽ सा

3.3.2 मियां मल्हार राग का आलाप

- सा ऽ रे ऽ सा, सा ऽ ऩी ऽ ध़ ऽ ऩी ऽ ऩी ऽ सा ऽ
- सा, ऩी सा, रे सा, ऩी सा ऽ ऩी ध़ ऩी ऽ नी ऽ सा, ऩी सा रे सा ऩी ऽ ध़ ऩी ऽ नी ऽ सा।
- ध़ ऩी म़ प़, म़ प़ ऩी ध़ ऩी ऽ ध़ ऩी ऽ सा, ऩी सा ध़ ऩी प़, प़, म़ प़ ऩी ध़ ऩी सा ऽ रे ऽ सा ऽ।
- सा, सा मरे ऽ प प, म प ग ऽ म रे, सा, म प ऽ प मग म रे रे सा, ऩी ध़ ऩी सा, सा
- साऽ म १ रे प ऽ, प, मग म रे ऽ सा, ऩी सा मरे प, प, म प नी ध नी प ऽ, मग ऽ म रे प, प म प ग म रे ऽ सा ।
- मरे प ऽ प, म प नी ऽ ध नी ऽ नी ऽ सां ऽ सां ऽ, नी सां नी प ऽ, नी म प मग म रे सा, मरे प ऽ ।

  प म प धनी ऽ धनी ऽऽ सां ऽ सां ऽ , रें नी सां, ध नी म प ध नी ऽ सां, सां ऽ,गं मं रें सां, सां, सां, ध नी म प ऽ, म प ध नी सां ऽ नी प मग म सारे सा ऽ, ऩी ऽ ध़ नी़ ऽ सा ऽ सा ऽ।

3.3.3 मियां मल्हार राग   विलंबित ख्याल/बड़ा ख्याल 1

राग: मियां मल्हार   **ताल: एकताल**   **लय: विलम्बित लय**

स्थायी

करीम नाम तेरो, तू साहिब सतार

अंतरा

दु:ख दरिद्र दूर कीजे, सुख देहो सबन को

अदारंग विनती करत सुन ले हो सतार

x		0		2		0		3		4	
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
स्थायी											
							-रे	सा	ऩीसा	(ध)ऩी	प़म़प़
							क	री	ऽऽ	ऽ	मऽऽ
(ध)ऩी	ऩीध़	ऩी	सा	(ध)ऩी	सा	सा	(नी)सा	-	सा	रे	सा
ना	ऽऽ	म	ते	ऽ	ऽ	रो	तू	ऽ	सा	हि	ब
(सा)प	(म)ग	(म)ग	म	रे	-	साऩीसा					
स	ता	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	रऽऽ					
							-रे	सा	ऩीसा	(ध)ऩी	प़म़प़
							क	री	ऽऽ	ऽ	मऽऽ
(ध)ऩी	ऩीध़	ऩी	सा	(ध)ऩी	सा	सा	(नी)सा	-	सा	रे	सा
ना	ऽऽ	म	ते	ऽ	ऽ	रो	तू	ऽ	सा	हि	ब
(सा)प	(म)ग	(म)ग	म	रे	-	साऩीसा					
स	ता	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	रऽऽ					

x		0		2		0		3		4	
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
अंतरा											
								मप	पनीध	नीध	नी
								दु:ख	दरि	ऽऽ	द्र
सां	ऽ	सां	सां	रें	सां	ध़नीध	नीध	नीध	नी	सां	सां
दू	ऽ	र	की	ऽ	जे	सुऽ	खऽ	ऽऽ	दे	ऽ	हो
रें	सां	सां	सांध	नी	प	म	प	मप	पनी	धनी	प
स	ब	न	को	ऽ	ऽ	अ	दा	ऽऽ	रं	ऽ	ग
मग	मग	म	रे	सारे	सा	म	प	मप	नीध	सां	सां
वि	न	ती	क	र	त	सु	न	ऽऽ	लेऽ	ऽ	हो
मप	मग	मग	म	रे	ऽ	साऩीसा					
स	ता	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	रऽऽ					

3.3.4 मियां मल्हार राग विलंबित ख्याल/बड़ा ख्याल 2

राग: मियां मल्हार **ताल: एकताल** **लय: विलम्बित लय**

स्थाई

बूँदन भीजे मोरी सारी
अब घर जाने दे बनवारी

अन्तरा

एक घन गरजे दूजो पवन चलत है
तीजे ननदी मोहे देत गारी

x		**0**		**2**		**0**		**3**		**4**	
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
स्थाई											
								पप	ग	म	रेसा
								बूँ	द	s	नs
रे	-	-	सा	नी	सा	नीसा	नी				
भी	s	s	जे	s	s	ss	मो				
								निध	नि	सा	सा
								रीs	सा	s	री
रे	सा	निसा	ध॒नी	नी	प	म	प				
अ	ब	ss	घ	s	र	जा	s				
								प	निध	नी	सा
								ने	देs	s	s
सा	सा	निसा	रे	-	सा	रेरेसानी	सारे				
ब	न	ss	वा	s	री	ssss	ss				
								पप	ग	म	रेसा
								बूँ	द	s	नs
रे	-	-	सा	नी	सा	नीसा	नी				
भी	s	s	जे	s	s	ss	मो				
								निध	नि	सा	सा
								रिs	सा	s	रि
रे	सा	निसा	ध॒नी	नी	प	म	प				
अ	ब	ss	घ	s	र	जा	s				
								प	निध	नी	सा
								ने	देs	s	s
सा	सा	निसा	रे	-	सा	रेरेसानी	सारे				
ब	न	ss	वा	s	री	ssss	ss				

x		0		2		0		3		4	
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
अन्तरा											
								मेरे	पप	निधनिध	नी
								एक	घन	गsरs	जे
सां	निसां	नी	प	म	प	प	पमनी				
दू	ss	ज़ो	s	प	व	न	चss				
								ग	म	रे	सा
								ल	त	है	s
नी	ध	नी	सा	रें	रें	सां	निसां				
ती	s	जे	s	न	न	दी	ss				
								सा	-	नी	प
								मो	s	हे	s
म	-	प	मपनी	ग	म	रे	सा,नीसारे				
दे	s	s	तss	गा	s	s	री,sss				
								मेरे	पप	निधनिध	नी
								एक	घन	गsरs	जे
सां	निसां	नी	प	म	प	प	पमनी				
दू	ss	ज़ो	s	प	व	न	चss				
								ग	म	रे	सा
								ल	त	है	s
नी	ध	नी	सा	रें	रें	सां	निसां				
ती	s	जे	s	न	न	दी	ss				
								सा	-	नी	प
								मो	s	हे	s
म	-	प	मपनी	ग	म	रे	सा,नीसारे				
दे	s	s	तss	गा	s	s	री,sss				

3.3.5 मियां मल्हार की तानें

- मपगम रेसा़निसा -ध़निसा -ध़निसा -ध़निसा
- नीनीपनी निपमप गमगम रेसानिसा –धसा
- गमरेसा नीसारेसा नी--- गमरेसा नीसारेसा नी--- गमरेसा नीसारेसा
- निधनिसा गमरेसा निसानिध निसारेपा मपगम रेसानीसा निधनिसा सासारे- मपगम रेसानीसा निधनिसा सासारे-पपमप गगमम रेरेसासा निधनिसा मरेपा- मपनिध निनिसा- गमरेसा निसारेसा मपनिध निनिसा- गमरेसा निसारेसा निधनिपा मपगम रेरेसासा निधनिसा
- धनिसासा निसारेरे सारेमम रेमपप मपनिनी धनिसासा निसारेरे सरेनिसा गमरेसा निसारेसा निधनिपा मपनिध निनिसा- मपगम रेरेसासा -निधसा
- निसारेनी सरेनिसा निधनिनी सारेनिसा गमगम रेसनिसा मपमप गमगम रेसानीसा रेपमप गमगम रेसनिसा मपमप गमगम रेसानीसा रेपमप मपनिधा निनीसानी रेसानीसा निनीपनी निपमप गमगम रेसानीसा निधनिनी सा--- निधनिनी सा--- निधनिनी सा---
- निससरेस गममरेसा निपपमप गममरेसा निसासारेसा सानिनीपनी पपपमप गमरेसा

- धनिनीसा धनिनीसा धनिधनि नीसारेसा नीनिधनी सारेरेम सारेरेम सारेसारे रेमपनी पपमप रेममप रेममप रेमरेम मपनिसा निनिपनी
- निसारे सारेमा रेमप मपनी धनिसा सनीपा निपम पमरे मरेसा रेसानी
- निसारेम सारेमप रेमपनी मपनीसा सनीपम निपमरे पमरेसा मरेसानी
- निनीनी सासासा रेरेरे ममम पपप निनीनी सासासा निनीनी पपप ममम रेरेरे सासासा निनीनी

स्वयं जांच अभ्यास 1

3.1 मियां मल्हार राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) सा

ख) नि

ग) म

घ) ग

3.2 मियां मल्हार राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) प

ग) ग

घ) सा

3.3 मियां मल्हार राग का समय निम्न में से कौन सा है?

क) दिन का प्रथम प्रहर

ख) दिन का तीसरा प्रहर

ग) मध्य रात्रि

घ) दोपहर

3.4 मियां मल्हार राग में, निम्न में से कौन सा स्वर अवरोह में कोमल होता है?

क) पंचम

ख) षड़ज

ग) मध्यम

घ) गंधार

3.5 मियां मल्हार राग में निम्न में से कौन सी स्वर संगति प्रमुख है?

क) रे प

ख) ग॒ प

ग) म सा

घ) प रे

3.6 मियां मल्हार राग का थाट निम्न में से कौन सा है?

क) कल्याण

ख) काफी

ग) भैरव

घ) तोड़ी

3.7 मियां मल्हार राग के संदर्भ में निम्न में से कौन सी स्वर संगति ठीक है?

क) म ग॒ रे सा

ख) ग म रे सा

ग) ग॒ म रे सा

घ) ग॒ म रे॒ सा

3.8 मियां मल्हार राग की बंदिशों/गतों में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 2

ख) 16

ग) 16

घ) 1

3.9 मियां मल्हार राग की बंदिशों/गतों के साथ केवल एकताल का ही प्रयोग होता है।

क) नहीं

ख) हां

3.10 मियां मल्हार राग, मल्हार तथा मियां रागों के मिश्रण से बना है।

क) सही

ख) गलत

3.4 सारांश

मियां मल्हार राग भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रचलित राग है। शास्त्रीय संगीत की गायन विधा के अंतर्गत इस राग को गाया जाता है। शास्त्रीय संगीत में रागों के प्रस्तुतिकरण के लिए तथा संगीत के अभ्यास के लिए राग का अभ्यास शुरू से ही किया जाता है। मियां मल्हार राग का आलाप अनिबद्ध (ताल रहित) होता है। इस राग में विलंबित ख्याल/बड़ा ख्याल, विलंबित लय में गाया जाता है। इसमें तानों का अपना महत्व है और विभिन्न प्रकार की तानों को इसमें विभिन्न प्रकार की लयकारियों के साथ गाया जाता है।

3.5 शब्दावली

- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप सें राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।
- विलंबित ख्याल/बड़ा ख्याल: गायन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी गीत रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा विलंबित लय में गाई जाती हो उसे विलंबित ख्याल/बड़ा ख्याल कहते हैं।

- छोटा ख्याल: गायन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी गीत रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा मध्य या द्रुत लय में गाई जाती हो उसे छोटा ख्याल कहते हैं।
- तान: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, गाया जाता है तो उसे तान कहते हैं।
- लय: गायन/वादन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।
- विलंबित लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत धीमी गति मे चलती है तो उसे विलंबित लय कहते हैं।
- द्रुत लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति मे चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।

3.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

3.1 उत्तर: क)

3.2 उत्तर: ख)

3.3 उत्तर: ग)

3.4 उत्तर: घ)

3.5 उत्तर: क)

3.6 उत्तर: ख)

3.7 उत्तर: ग)

3.8 उत्तर: घ)

3.9 उत्तर: क)

3.10 उत्तर: ख)

3.7 संदर्भ

मिश्र, शंकर लाल (1998).नवीन ख्याल रचनावली, अभिषेक पब्लिकेशन, चंडीगढ

अत्रे, डॉ. प्रभा. (2007). स्वरंजनी रात्रिकालीन रागों की बंदिशों का संकलन, बी. आर. रिदम्स, दिल्ली।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

झा, पं. रामाश्रय. (2040). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

3.8 अनुशंसित पठन

भातखंडे, विष्णुनारायण. (2017). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

मिश्र, शंकर लाल (1998).नवीन ख्याल रचनावली, अभिषेक पब्लिकेशन, चंडीगढ

अत्रे, डॉ. प्रभा. (2007). स्वरंजनी रात्रिकालीन रागों की बंदिशों का संकलन, बी. आर. रिदम्स, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

झा, पं. रामाश्रय. (2040). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

3.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग मियां मल्हार का परिचय लिखिए/बताइए।

प्रश्न 2. राग मियां मल्हार का आलाप लिखिए।

प्रश्न 3. राग मियां मल्हार के विलंबित ख्याल/ बड़ा ख्याल को लिखिए।

प्रश्न 4. राग मियां मल्हार में पांच तानों को लिखिए।

इकाई-4
बागेश्री राग की विलंबित गत/मसीतखानी गत (वादन के संदर्भ में)

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
4.1	भूमिका
4.2	उद्देश्य तथा परिणाम
4.3	राग बागेश्री
4.3.1	बागेश्री राग का परिचय
4.3.2	बागेश्री राग का आलाप
4.3.3	बागेश्री राग की विलंबित गत/मसीतखानी गत
4.3.4	बागेश्री राग के तोड़े
	स्वयं जांच अभ्यास 1
4.4	सारांश
4.5	शब्दावली
4.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
4.7	संदर्भ
4.8	अनुशंसित पठन
4.9	पाठगत प्रश्न

4.1 भूमिका

संगीत (वादन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA204PR की यह चौथी इकाई है। इस इकाई में वादन संगीत के संदर्भ में, राग बागेश्री का परिचय, आलाप, की विलंबित गत/मसीतखानी गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग का, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग बागेश्री के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, विलंबित गत/मसीतखानी गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग बागेश्री का आलाप, विलंबित गत/मसीतखानी गत तथा तोड़ों को बजा सकेंगे।

4.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- बागेश्री राग के स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- बागेश्री राग के आलाप, विलंबित गत/मसीतखानी गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- बागेश्री राग के आलाप, विलंबित गत/मसीतखानी गत तथा तोड़ों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को वादन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी वादन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा

- बागेश्री राग के आलाप, विलंबित गत/मसीतखानी गत तथा तोड़ों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- बागेश्री राग के आलाप, विलंबित गत/मसीतखानी गत तथा तोड़ों को बजाने में सक्षम होंगे।
- राग बागेश्री के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

4.3 राग बागेश्री

4.3.1 बागेश्री राग का परिचय

राग - बागेश्री

थाट - काफ़ी

जाति - औडव संपूर्ण

वादी - मध्यम

संवादी - षड्ज

स्वर - गंधार तथा निषाद कोमल (ग़ नि़)

वर्जित - आरोह में रिषभ तथा पंचम

समय - रात्रि का तीसरा प्रहर

समप्रकृतिक राग - रागेश्री

आरोह – ऩी सा ग़ म ध नि़ सां

अवरोह - सां नि़ ध, म प ध ग़, म ग़ रे सा

पकड़ - सां नि ध म प ध ग, रे सा

बागेश्री राग काफी थाट का एक राग है। इसकी जाति औडव-संपूर्ण मानी जाती है। वादी स्वर मध्यम तथा संवादी स्वर षड्ज है। इस राग में गंधार तथा निषाद कोमल प्रयुक्त होते हैं। बागेश्री राग के आरोह में रिषभ तथा पंचम वर्जित रहते हैं। इसका समय रात्रि का तीसरा प्रहर माना जाता है। बागेश्री एक अत्यन्त मधुर राग है। इस राग का उपयोग कर विद्वानों ने कई मधुर सांगीतिक रचनाएं की हैं। आरोह करते समय रिषभ वर्जित रहता है अतः प्रारम्भ में नी सा ग म ध, नी सा ग म आदि किया जाता है।

इस राग में षड्ज से सीधे मध्यम पर भी आते हैं। जैसे-नी सा म ग रे सा। षड्ज से मध्यम पर आना इस राग की अपनी विशेषता है। बागेश्री राग में पंचम का अल्प प्रयोग होता है। राग का अवरोह करते समय पंचम का प्रयोग केवल एक विशेष ढंग से किया जाता है, जैसे सां नी ध, म प ध ऽ ग, म ग रे सा। पंचम का सीधा प्रयोग राग में नहीं किया जाता है, जैसे सां नी ध प म आदि।

इस राग का प्रमुख स्वर समुदाय ध़ नी सा म, ग म ध नी ध तथा म प ध ग ऽ है। इन्हीं के आधार पर आलाप तान आदि की रचनाएं की जाती हैं। इस राग में ध ग की संगति प्रयुक्त होती है, जैसे- म प ध ग, रे सा। बाग्रश्री राग का आरम्भ (आलाप) सा नी ध़ नी सा म या ध़ नी सा म करते हुए ही करना चाहिए।

इसका समप्रकृतिक राग रागेश्री है। दोनों में अंतर यह है कि बागेश्री में पंचम का प्रयोग किया जाता है वही रागेश्री में पंचम वर्जित रहता है।

बागेश्री में कोमल गंधार का प्रयोग है वहीं दूसरी ओर रागेश्री में गंधार शुद्ध है जैसे- बागेश्री - नी सा म ग, म ध नी ध, म प ध ग, म ग रे सा। रागेश्री – नी सा ग म, ग म ध नी ध म, ग म रे सा।

4.3.2 बागेश्री राग का आलाप

- सा, नी़ सा, सा, नी़ ध़ - सा रे सा,
- ध़ नी़ नी़ ध़ नी़ सा, सा नी़ ध़ म़ -, म़ ध़ नी़ नी़ सा, सा,
- ध़ नी़ सा म ग़ – म ग़ रे सा
- सा नी़ ध़ नी़ ध़ -, म़ म़ ध़, म़ ध़ नी़ नी़ सा, सा
- ध़ नी़ सा म -, ग़ म ग़ रे सा, ग़ म ग़ – ग़ म ध – म ग़, म ग़ रे सा
- म ग़ ध, ध म – ध नी ध म, म ध नी नी सां, सां
- सां – गं गं रें सां -, ध नी नी सां, मं गं रें सां सां,
- सां नी ध नी ध – म प ध ग़ – म ग़ रे सा, ध़ नी़ नी़ सा म ग़ रे सा, सा

4.3.3 बागेश्री राग विलंबित गत/मसीतखानी गत

राग: बागेश्री **ताल: तीन ताल** **लय: विलम्बित लय**

x				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
स्थाई															
											गम	ग	रेरे	सा	ध़नी
											दिर	दा	दिर	दा	दिर
सा	सा	सा	गम	ध	मम	नी	ध	म	गरे	सा					
दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दा	दा	रा					
											गम	ग	रेरे	सा	ध़नी
											दिर	दा	दिर	दा	दिर
सा	सा	सा	गम	ध	मम	नी	ध	म	गरे	सा					
दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दा	दा	रा					
अन्तरा															
											मम	ग	मम	ध	नीनी
											दिर	दा	दिर	दा	दिर
सां	सां	सां	सांसां	नी	सांसां	रें	सां	ध	नीनी	ध					
दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	रा					
											गंगं	मं	गरें	सां	नीसां
											दिर	दा	दिर	दा	दिर
रें	सां	सां	धनी	ध	मम	प	ध	ग	रेरे	सा					
दा	दिर	दा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा					

4.3.4 बागेश्री राग के तोड़े

- गत से सम तक

ध़नीसानी	सा---	ध़नीसानी	सा---	ध़नीसानी

- पाँचवीं मात्रा से गत तक

सानीधनी	रेसानीसा	मगरेसा	धमगम
नीधसांनी	धमगम	गरेसा-	

- सम से सम तक

मगरेसा	गरेसानी	रेसानीध़	सानीध़नी
सासानीसा	गगसाग	ममगम	धधमध
नीनीधनी	सांसांनीसां	गंगंरेंसां	नीधसांनी
धनीधम	गमधनी	सांनीधम	धमगरे

- सम से गत तक

सानीध़नी	रेसानीध़	मगरेसा	धमगम
नीधनीध	सांनीसांनी	रेंसांरेंसां	नीधनीध
सासाधनी	धमगम	गरेसा-	

- सम से सम तक

नीसागग	सागमम	गमधध	मधनीनी

धनीसांसां	नीसांगंगं	रेंसांनीसां	धनीधम
मगरेसा	मगरेसा	नीसाध़नी	सा-मग
रेसानीसा	ध़नीसा-	मगरेसा	नीसाध़नी

स्वयं जांच अभ्यास 1

4.1 बागेश्री राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) म

ख) नि

ग) नी

घ) ग

4.2 बागेश्री राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) सा

ग) प

घ) म

4.3 बागेश्री राग का समय निम्न में से कौन सा है?

क) दिन का प्रथम प्रहर

ख) दिन का तीसरा प्रहर

ग) रात्रि का तीसरा प्रहर

घ) दोपहर

4.4 बागेश्री राग में, निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में कोमल होता है?

क) कोई भी नहीं

ख) षड़ज

ग) मध्यम

घ) गंधार

4.5 बागेश्री राग में निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में वर्जित होता है?

क) प

ख) म

ग) म

घ) सा

4.6 बागेश्री राग का थाट निम्न में से कौन सा है?

क) कल्याण

ख) काफी

ग) भैरवी

घ) तोड़ी

4.7 बागेश्री राग के संदर्भ में निम्न में से कौन सी स्वर संगति ठीक है?

क) ध नि ध प, म॑ ग

ख) ध सां नि ध प, म ग

ग) नि ध म प ध ग

घ) ध नि सां नी ध म ग

4.8 बागेश्री राग की बंदिशों/गतों में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 9

ख) 16

ग) 2

घ) 1

4.9 बागेश्री राग की बंदिशों/गतों के साथ केवल एकताल का ही प्रयोग होता है।

क) नहीं

ख) हां

4.10 बागेश्री राग, काफी तथा श्री रागों के मिश्रण से बना है।

क) सही

ख) गलत

4.4 सारांश

बागेश्री राग भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रचलित राग है। शास्त्रीय संगीत की वादन विधा के अंतर्गत इस राग को बजाया जाता है। शास्त्रीय संगीत में रागों के प्रस्तुतिकरण के लिए तथा संगीत के अभ्यास के लिए राग का अभ्यास शुरू से ही किया जाता है। बागेश्री राग का आलाप अनिबद्ध (ताल रहित) होता है। इस राग में विलंबित गत/मसीतखानी गत, विलंबित लय में बजाई जाती है। इसमें तोड़ों का अपना महत्व है और विभिन्न प्रकार की तोड़ों को इसमें विभिन्न प्रकार की लयकारियों के साथ बजाया जाता है।

4.5 शब्दावली

- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप सें राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।
- विलंबित गत: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी स्वर रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा विलंबित लय में बजाई जाती हो उसे विलंबित गत कहते हैं।
- मसीतखानी गत: वादन के अंतर्गत, जराग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी स्वर रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो, विलंबित लय में बजाई जाती हो तथा जिसके बोल निश्चित हों (दिर दा दिर दा रा दा दा रा), उसे मसीतखानी गत कहते हैं।
- द्रुत गत: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी स्वर रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा द्रुत लय में बजाई जाती हो उसे द्रुत गत कहते हैं।
- तोड़ा: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, बजाया जाता है तो उसे तोड़ा कहते हैं।

- लय: वादन/आायन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।
- विलंबित लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत धीमी गति मे चलती है तो उसे विलंबित लय कहते हैं।
- द्रुत लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति मे चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।

4.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

4.1 उत्तर: क)

4.2 उत्तर: ख)

4.3 उत्तर: ग)

4.4 उत्तर: घ)

4.5 उत्तर: क)

4.6 उत्तर: ख)

4.7 उत्तर: ग)

4.8 उत्तर: घ)

4.9 उत्तर: क)

4.10 उत्तर: ख)

4.7 संदर्भ

मिश्र, शंकर लाल (4998).नवीन ख्याल रचनावली, अभिषेक पब्लिकेशन, चंडीगढ

अत्रे, डॉ. प्रभा. (2007). स्वरंजनी रात्रिकालीन रागों की बंदिशों का संकलन, बी. आर. रिदम्स, दिल्ली।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2045). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2004). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

झा, पं. रामाश्रय. (2040). अभिनव गीतांजलि (भाग 4-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

4.8 अनुशंसित पठन

भातखंडे, विष्णुनारायण. (2017). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

मिश्र, शंकर लाल (1998).नवीन ख्याल रचनावली, अभिषेक पब्लिकेशन, चंडीगढ

अत्रे, डॉ. प्रभा. (2007). स्वरंजनी रात्रिकालीन रागों की बंदिशों का संकलन, बी. आर. रिदम्स, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

झा, पं. रामाश्रय. (2040). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

4.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग बागेश्री का परिचय लिखिए/बताइए।

प्रश्न 2. राग बागेश्री का आलाप लिखिए।

प्रश्न 3. राग बागेश्री की विलंबित गत को लिखिए।

प्रश्न 4. राग बागेश्री में पांच तोड़ों को लिखिए।

इकाई-5
जौनपुरी राग की विलंबित गत/मसीतखानी गत (वादन के संदर्भ में)

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
5.1	भूमिका
5.2	उद्देश्य तथा परिणाम
5.3	राग जौनपुरी
5.3.1	जौनपुरी राग का परिचय
5.3.2	जौनपुरी राग का आलाप
5.3.3	जौनपुरी राग की विलंबित गत/मसीतखानी गत 1
5.3.4	जौनपुरी राग की विलंबित गत/मसीतखानी गत 2
5.3.5	जौनपुरी राग के तोड़े
	स्वयं जांच अभ्यास 1
5.4	सारांश
5.5	शब्दावली
5.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
5.7	संदर्भ
5.8	अनुशंसित पठन
5.9	पाठगत प्रश्न

5.1 भूमिका

संगीत (वादन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA204PR की यह पांचवीं इकाई है। इस इकाई में वादन संगीत के संदर्भ में, राग जौनपुरी का परिचय, आलाप, विलंबित गत/मसीतखानी गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग का, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग जौनपुरी के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, विलंबित गत/मसीतखानी गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग जौनपुरी का आलाप, विलंबित गत/मसीतखानी गत तथा तोड़ों को बजा सकेंगे।

5.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- जौनपुरी राग के स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- जौनपुरी राग के आलाप, विलंबित गत/मसीतखानी गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- जौनपुरी राग के आलाप, विलंबित गत/मसीतखानी गत तथा तोड़ों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को वादन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी वादन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा

- जौनपुरी राग के आलाप, विलंबित/मसीतखानी गत तथा तोड़ों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- जौनपुरी राग के आलाप, विलंबित गत/मसीतखानी गत तथा तोड़ों को बजाने में सक्षम होंगे।
- राग जौनपुरी के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

5.3 राग जौनपुरी

5.3.1 जौनपुरी राग का परिचय

थाट – आसावरी

जाति - षाडव-संपूर्ण

वादी - धैवत

संवादी - गंधार

स्वर - गंधार, धैवत, निषाद कोमल, अन्य स्वर शुद्ध

वर्जित - आरोह में गंधार

न्यास के स्वर - गंधार, धैवत, पंचम

समय - दिन का दूसरा प्रहर

आरोह – सा रे म प ध॒ नी॒ सां

अवरोह - सां नि॒ ध॒ प म ग॒ रे सा

पकड़ - म प, नी॒ ध॒ प, ध॒ म प ग॒ रे म प

राग जौनपुरी, आसावरी थाट का एक राग है। इसके आरोह में गंधार स्वर वर्जित हैं। इसकी जाति षाड़व-संपूर्ण है। जौनपुरी का वादी स्वर धैवत तथा संवादी स्वर गंधार है। इस राग में गंधार, धैवत, निषाद कोमल, अन्य स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं तथा इसका गायन/वादन समय दिन का दूसरा प्रहर माना गया है। जौनपुरी राग के आरोह में गंधार वर्जित रहता है, जैसे - सा रे म प ध प । जौनपुरी राग में रे म प और प ग स्वरों की संगति बार बार सुनने को मिलती है। इस राग में ग स्वर पर म और ध स्वर पर नि का कण लगाया जाता है। राग में गंधार तथा धैवत स्वरों को आंदोलित किया जाता है।

5.3.2 जौनपुरी राग का आलाप

- सा रे म प ध प, ध म प ग – रे म प, प ध म प ग- रे सा रे सा, प ध म प, प नि ध प।
- सा रे म प ध प, म प नि ध प म प नि ध प, म प ध नि सां ध – प
- म प ध – नि सां सां नि ध प म प ध नि सां, प ध म प ध नि सां,
- प नि ध प म प ध नि सां रें नि ध प नि ध म प ध नि सां रे नि ध प ध म प – ग -रे म प ग रे सा।
- म प ध नि सां, सां रें गं – रें सां, रें मं गं -रें सां, रें मं प – गं – गं रें सां

  सां, नि सा रे नि ध प म प नि ध प , ध म प ग – रे सा, रे म प नि ध -प ।

5.3.3 जौनपुरी राग विलंबित गत/मसीतखानी गत 1

राग: जौनपुरी **ताल: तीन ताल** **लय: विलम्बित लय**

x				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16

स्थाई

											सासा	रे	मम	प	ध
											दिर	दा	दिर	दा	रा
नि	ध	प	धध	म	पप	ध	प	ग	रे	सा					
दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दा	दा	रा					

अंतरा

											मम	म	पप	ध	नि
											दिर	दा	दिर	दा	रा
सां	सां	सां	सांसां	नि	सांसां	रें	सां	नि	ध	प					
दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दा	दा	रा					
											सांसां	नि	धप	म	प
											दिर	दा	दिर	दा	रा
नि	ध	ध	पम	रे	मम	प	ध	ग	रे	सा					
दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दा	दा	रा					

5.3.4 जौनपुरी राग विलंबित गत/मसीतखानी गत 2

राग: जौनपुरी **ताल: तीन ताल** **लय: विलम्बित लय**

x				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
स्थाई															
											रेरे	म	पप	नि	नि
											दिर	दा	दिर	दा	रा
ध	ध	प	मम	प	धध	प	ग	ग	रे	सा					
दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दा	दा	रा					
											रेरे	म	पप	नि	नि
											दिर	दा	दिर	दा	रा
ध	ध	प	मम	प	धध	प	ग	ग	रे	सा					
दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दा	दा	रा					
अंतरा															
											मम	प	धध	नि	नि
											दिर	दा	दिर	दा	रा
सां	सां	सां	निनि	सां	धनि	सां	गं	रेसा	ध	प					
दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दिर	दा	रा					
											मम	प	धध	नि	नि
											दिर	दा	दिर	दा	रा
सां	सां	सां	निनि	सां	धनि	सां	गं	रेसा	ध	प					
दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दिर	दा	रा					

5.3.5 जौनपुरी राग के तोड़े

- मम रेम गरे सा- पप मप मग रेसा
  धप मप मग रेसा निनिधनि धप मग
  सांसां निसां धप मप गंगं रेंसां रेंरें सांनि
  सांसां निध निनि धप धधपम गरे सा-

- नीसारे सारेम रेमप मपध पधनी
  धनीसां सांनीध नीधप धपम पमग
  मगरे गरेसा

- मपपधप धनीनीधप मपपमग रेसासानीसा
  रे रेरे मप ध - रे रेरे मप ध - रे रेरे मप

- सारेमम रेमपप मपधध पधनीनी धनीसासा
  नीसारेरे सानीधप मगरेसा रेम रेम पधमप
  ध- रेम रेम पधमप ध- रेम रेम पधमप

- सासासा रेंरेंरे मममम पपप धधध
  नीनीनी सासासा रेंरेंरे सासासा नीनीनी
  धधध पपप मममम गगग रेंरेंरे ससासा

- सारेसारेम रेमरेमप मपमपध पधपधनी धनीधनीसा

सनीसनीध नीधनीधप धपधपम पमपमग मगमगरे गरेगेरेसा

- रेरेरे पपप ममम धधध पपप

  नीनीनी धधध सासासा सासासा नीनीनी

  धधध पपप नीनीनी धधध पपप

  ममम धधध पपप ममम रेरेरे सासासा

- नीनीध धधप पपम ममग गगरे

  रेरेसा सानीनीध नीधधप धपपम पममग गरेरेसा

- रेमपधनी मपधनीसा पधनीसारे धनीसरेग

  गरेसनीध रेसनीधप सानीधपम नीधपमग

  धपमगरे पमगरेसा सारेमपधनीसा धनीसा

  सारेमपधनीसा धनीसा सारेमपधनीसा धनीसा

- मपधनि सांनिधप मपधप मगरेसा

- सांसां निसा धप मप गरे सासा सानि धप

  गम पध पध निध निसां रेसा सांनि धप

- सारे मप धनि धप मप धप मग रेसा

- सांनि धप मप धनि सांनि धप मग रेसा

- सारें गरें सांनि सांनि धपनिनि धप मग रे-सा-।

- मप मप धनि धप मप धप मग रेसा

  मप धनि सांनि धप मप गम गरे सासा

- सांनि धप निध मप धप मप गम रेसा

  सारें सांनि धनि धप मप धप मग रेसा

स्वयं जांच अभ्यास 1

5.1 जौनपुरी राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) ध

ख) नि

ग) म

घ) ग

5.2 जौनपुरी राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) ग

ग) प

घ) सा

5.3 जौनपुरी राग का समय निम्न में से कौन सा है?

क) दिन का प्रथम प्रहर

ख) दिन का तीसरा प्रहर

ग) दिन का दूसरा प्रहर

घ) दोपहर

5.4 जौनपुरी राग में, निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में कोमल होता है?

क) ऋषभ

ख) षड़ज

ग) मध्यम

घ) कोई भी नहीं

5.5 जौनपुरी राग में निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में वर्जित होता है?

क) ग

ख) प

ग) म

घ) सा

5.6 जौनपुरी राग का थाट निम्न में से कौन सा है?

क) कल्याण

ख) आसावरी

ग) भैरवी

घ) तोड़ी

5.7 जौनपुरी राग के संदर्भ में निम्न में से कौन सी स्वर संगति ठीक है?

क) ध नि ध प, म॑ ग

ख) ध सां नि ध प, म ग

ग) ध नि ध प, ध म ग

घ) ध नि सां नी ध म ग

5.8 जौनपुरी राग की बंदिशों/गतों में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 2

ख) 16

ग) 9

घ) 1

5.9 जौनपुरी राग की बंदिशों/गतों के साथ केवल एकताल का ही प्रयोग होता है।

क) हां

ख) नहीं

5.10 जौनपुरी राग, मालकौंस तथा पूरिया रागों के मिश्रण से बना है।

क) सही

ख) गलत

5.4 सारांश

जौनपुरी राग भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रचलित राग है। शास्त्रीय संगीत की वादन विधा के अंतर्गत इस राग को बजाया जाता है। शास्त्रीय संगीत में रागों के प्रस्तुतिकरण के लिए तथा संगीत के अभ्यास के लिए राग का अभ्यास शुरू से ही किया जाता है। जौनपुरी राग का आलाप अनिबद्ध (ताल रहित) होता है। इस राग में विलंबित गत/मसीतखानी गत, विलंबित लय में बजाई जाती है। इसमें तोड़ों का अपना महत्व है और विभिन्न प्रकार की तोड़ों को इसमें विभिन्न प्रकार की लयकारियों के साथ बजाया जाता है।

5.5 शब्दावली

- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप सें राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।
- विलंबित गत: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी स्वर रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा विलंबित लय में बजाई जाती हो उसे विलंबित गत कहते हैं।
- मसीतखानी गत: वादन के अंतर्गत, जराग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी स्वर रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो, विलंबित लय में बजाई जाती हो तथा जिसके बोल निश्चित हों (दिर दा दिर दा रा दा दा रा), उसे मसीतखानी गत कहते हैं।
- द्रुत गत: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी स्वर रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा द्रुत लय में बजाई जाती हो उसे द्रुत गत कहते हैं।

- तोड़ा: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, बजाया जाता है तो उसे तोड़ा कहते हैं।
- लय: वादन/आायन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।
- विलंबित लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत धीमी गति मे चलती है तो उसे विलंबित लय कहते हैं।
- द्रुत लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति मे चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।

5.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

5.1 उत्तर: क)

5.2 उत्तर: ख)

5.3 उत्तर: ग)

5.4 उत्तर: घ)

5.5 उत्तर: क)

5.6 उत्तर: ख)

5.7 उत्तर: ग)

5.8 उत्तर: घ)

5.9 उत्तर: क)

5.10 उत्तर: ख)

5.7 संदर्भ

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

झा, पं. रामाश्रय. (2040). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

5.8 अनुशंसित पठन

भातखंडे, विष्णुनारायण. (2017). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

झा, पं. रामाश्रय. (2040). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

5.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग जौनपुरी का परिचय लिखिए/बताइए।

प्रश्न 2. राग जौनपुरी का आलाप लिखिए।

प्रश्न 3. राग जौनपुरी में विलंबित गत/मसीतखानी गत को लिखिए।

प्रश्न 4. राग जौनपुरी में पांच तोड़ों को लिखिए।

इकाई-6
मियां मल्हार राग की विलंबित गत/मसीतखानी गत (वादन के संदर्भ में)

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
6.1	भूमिका
6.2	उद्देश्य तथा परिणाम
6.3	राग मियां मल्हार
6.3.1	मियां मल्हार राग का परिचय
6.3.2	मियां मल्हार राग का आलाप
6.3.3	मियां मल्हार राग की विलंबित गत/मसीतखानी गत
6.3.4	मियां मल्हार राग के तोड़े
	स्वयं जांच अभ्यास 1
6.4	सारांश
6.5	शब्दावली
6.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
6.7	संदर्भ
6.8	अनुशंसित पठन
6.9	पाठगत प्रश्न

6.1 भूमिका

संगीत (वादन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA204PR की यह छटी इकाई है। इस इकाई में वादन संगीत के संदर्भ में, राग मियां मल्हार का परिचय, आलाप, विलंबित गत/मसीतखानी गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग का, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग मियां मल्हार के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, विलंबित गत/मसीतखानी गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग मियां मल्हार का आलाप, विलंबित गत/मसीतखानी गत तथा तोड़ों को बजा सकेंगे।

6.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- मियां मल्हार राग के स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- मियां मल्हार राग के आलाप, विलंबित गत/मसीतखानी गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- मियां मल्हार राग के आलाप, विलंबित गत/मसीतखानी गत तथा तोड़ों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को वादन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी वादन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा

- मियां मल्हार राग के आलाप, विलंबित गत/मसीतखानी गत तथा तोड़ों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- मियां मल्हार राग के आलाप, विलंबित गत/मसीतखानी गत तथा तोड़ों को बजाने में सक्षम होंगे।
- राग मियां मल्हार के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

6.3 राग मियां मल्हार

6.3.1 मियां मल्हार राग का परिचय

राग - मियां मल्हार

थाट – काफी

जाति – संपूर्ण-षाडव

वादी - षड्ज

संवादी - पंचम

वर्जित स्वर – अवरोह में धैवत

स्वर – गंधार कोमल(ग) , दोनों निषाद (नी नी), अन्य स्वर शुद्ध

न्यास के स्वर – षडज, ऋषभ, पंचम, निषाद

समय – मध्य रात्रि

समप्रकृतिक राग – बहार

आरोह: ऩी सा, ᵐरे ऽ प, ᵐग ऽ ग म रे सा, म रे प, नी ऽ ध नी ऽ सा।

अवरोह: सां नि प, म प ᵐगऽ म रे ऽऩि ऽ ध़ नि ऽ सा ऽ।

पकड़: , ᵐरे ऽ प, ᵐग ऽ ग म रे सा, ऽऩि ऽ ध़ नि ऽ सा

मियां मल्हार राग, काफी थाट का एक मधुर राग है। इस राग की जाति संपूर्ण-षाडव है। मियां मल्हार राग का वादी स्वर ऋषभ तथा संवादी स्वर पंचम है। प्रस्तुत राग में गंधार कोमल(ग), दोनों निषाद (नी नी), अन्य स्वर शुद्ध लगते हैं। राग में अवरोह में धैवत स्वर वर्जित होता है। इस राग का प्रस्तुति समय मध्य रात्रि माना जाता है। इस राग में षडज, ऋषभ, पंचम, निषाद पर न्यास किया जाता है। इस राग की प्रकृति गंभीर है। संगीतकारों का मानना है कि तानसेन ने इस राग को रचा था।

इस राग का समय मध्ययुग माना जाता है क्योंकि प्राचीन ग्रन्थों में इस राग का वर्णन नहीं मिलता है। इस राग को मियाँ मल्हार के स्थान पर 'मल्हार' भी कहा जाता है। मियाँ मल्हार में गंधार कोमल(ग) रूप में प्रयुक्त होता है तथा आन्दोलित रहता है। अवरोह में गंधार का वक्र प्रयोग होता है (म प ^{म}ग म रे सा), इसमें गंधार का आन्दोलन मध्यम का स्पर्ष करते हुए किया जाता है। मियाँ मल्हार के आरोह में सा रे ग म का सीधा प्रयोग नहीं किया जाता है परन्तु सा रे प के बाद ग म रे सा करते हैं। सा रे प या स्वर संगति मल्हार की विशेष या राग वाचक संगति भी कही गई है।

मियाँ मल्हार के आरोह में शुद्ध निषाद तथा अवरोह में कोमल निषाद का प्रयोग किया जाता है। साथ ही अवरोह में धैवत वर्जित रहने के कारण नि प की संगति रहती है, जैसे- सा म रे ऽ प, म प नि ध नि सां, सां नि प, म प ग म रे सा। कभी-कभी इस राग में दोनों निषादों का एक साथ प्रयोग किया जाता है, जैसे-ग म रे सा, नि़ ध़ नि़ नि़ सा। यह क्रिया अधिकतर मींड से ही ली जाती है। दोनों निषादों का एक साथ प्रयोग मियाँ मल्हार की निजी विशेषता है।

मियाँ मल्हार का समप्रकृतिक राग बहार है। स्वरों की दृष्टि से ये दोनों राग एक समान हैं। दोनों ही रागों में ग म रे सा, नि़ ध़ नि़ सा तथा नि प स्वर समुदाय प्रयुक्त किये जाते हैं। अन्तर की दृष्टि से देखे तो पता चलता है कि बहार राग उत्तरांग प्रधान है तथा मियाँ मल्हार राग मंद्र तथा मध्य सप्तक में अधिक गाया बजाया जाता है। बहार राग में गंधार का सीधा प्रयोग होता है। दूसरी ओर मियाँ मल्हार में गंधार हमेशा मध्यम का कण लेकर आंदोलित रहता है। मियाँ मल्हार में जहाँ रे प की संगति की जाती है वहीं बहार में सा म की संगति रहती है। यह संगतियाँ राग वाचक मानी जाती हैं, जैसे - मियाँ मल्हार (सा रे प, म प ग म रे सा) बहार (सा म म, म प ग म नि ध नि सां)। दूसरा मुख्य अंतर यह है कि नि़ ध़ नि सा स्वर समुदाय दोनों रागों में अलग अलग ढंग से लगते हैं। बहार राग में इस स्वर समुदाय के हर स्वर को सीधा लिया जाता है, जैसे-नि़ ध़ नि़ सा जबकि मियाँ मल्हार में दोनों निषादों को बढ़ाया जाता है, जैसे -नि़ ऽ ध़ नि़ ऽ सा।

6.3.2 मियां मल्हार राग का आलाप

- सा ऽ रे ऽ सा, सा ऽ ऩी ऽ ध़ ऽ ऩी ऽ ऩी ऽ सा ऽ
- सा, ऩी सा, रे सा, ऩी सा ऽ ऩी ध़ ऩी ऽ नी ऽ सा, ऩी सा रे सा ऩी ऽ ध़ ऩी ऽ नी ऽ सा।
- ध़ ऩी म़ प़, म़ प़ ऩी ध़ ऩी ऽ ध़ ऩी ऽ सा, ऩी सा ध़ ऩी प़, प़, म़ प़ ऩी ध़ ऩी सा ऽ रे ऽ सा ऽ।
- सा, सा ᵐरे ऽ प प, म प ग ऽ म रे, सा, म प ऽ प ᵐग म रे रे सा, ऩी ध़ ऩी सा, सा
- साऽ म रे प ऽ, प, ᵐग म रे ऽ सा, ऩी सा ᵐरे प, प, म प नी ध नी प ऽ, ᵐग ऽ म रे प, प म प ग म रे ऽ सा ।
- ᵐरे प ऽ प, म प नी ऽ ध नी ऽ नी ऽ सां ऽ सां ऽ, नी सां नी प ऽ, नी म प ᵐग म रे सा, ᵐरे प ऽ ।
- प म प ᵈनी ऽ ᵈनी ऽऽ सां ऽ सां ऽ , रें नी सां, ध नी म प ध नी ऽ सां, सां ऽ,गं मं रें सां, सां, सां, ध नी म प ऽ, म प ध नी सां ऽ नी प ᵐग म ˢᵃरे सा ऽ, ऩी ऽ ध़ नी़ ऽ सा ऽ सा ऽ।

6.3.3 मियां मल्हार राग विलंबित गत/मसीतखानी गत

राग: मियां मल्हार **ताल: तीनताल** **लय: विलम्बित लय**

x				2				0			3				
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
स्थाई															
											सारेप	गम	रेसा	नीमप	नीध
											दारादा	दिर	दिर	दारादा	दिर
नी	नी	सा	सासा	रे	पप	ग	म	रे	धनी	सा					
दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा					
											सारेप	गम	रेसा	नीमप	नीध
											दारादा	दिर	दिर	दारादा	दिर
नी	नी	सा	सासा	रे	पप	ग	म	रे	धनी	सा					
दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा					
अन्तरा															
											मरे	प	नीध	नी	नी
											दिर	दा	दिर	दा	रा
सां	सां	सां	सांसां	रें	पंपं	गं	मं	रें	धनी	सां					
दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा					
											मप	नी	धध	नी	नी
											दिर	दा	दिर	दा	रा
सां	गंमं	रें	सांसां	नीध	नीप	मप	गम	रे	धनी	सा					
दा	दिर	रा	दिर	दिर	दिर	दिर	दिर	दा	दिर	रा					

6.3.4 मियां मल्हार राग के तोड़े

- धनीसारें नीसांनीनी पमगम रेसाऩीसा
- मपगम रेसाऩीसा -ध़ऩीसा -ध़ऩीसा -ध़ऩीसा
- नीनीपनी नीपमप गमगम रेसाऩीसा ऽऽऩीसा
- सारेमप नीधनीप मपगम रेसाऩीसा
- रेपमप गमरेसा ऩीऽऽऽ रेपमप गमरेसा
  ऩीऽऽऽ रेपमप गमरेसा
- मपनीध नीपमप धनीसांसां नीधनीप मपधनी
  सारेंनीसां नीधनीप मपधनी सारेंमंमं गंमरेंसां
  नीपमप गमरेसा
- ऩीसारेम गमरेसा ऩीसारेम पमगम रेसारेप
  मपनीध नीपमप गमरेसा ऩीसारेम पपनीध
  नीसांगंमं रेंसांनीसां नीधनीप मपगम रेरेसासा
  ऩीसारेसा
- गमरेसा ऩीसारेसा ऩीऽऽऽ गमरेसा ऩीसारेसा
  ऩीऽऽऽ गमरेसा ऩीसारेसा

- ऩीध़ऩीसा गमरेसा ऩीसाऩीध़ ऩीसारेप मपग़म
  रेसाऩीसा ऩीध़ऩीसा सासारेऽ पपमप गगमम
  रेरेसासा ऩीध़ऩीसा मरेपऽ मपनीध नीनीसांऽ
  गंमरेंसां नीसारेंसां नीधनीप मपग़म रेरेसासा ऩीध़ऩीसा
- ध़ऩीसासा ऩीसारेरे सारेमम रेमपप मपनीनी
  धनीसांसां नीसारेंरें सारेंनीसां गंमरेंसां नीसारेंसां
  नीधनीप मपनीध नीनीसांऽ मपग़म रेरेसासा
  ऽध़ऩीसा
- नी़सारेऩी सारेऩीसा ऩीध़ऩीऩी सारेऩीसा ग़मग़म
  रेसाऩीसा मपमप ग़मग़म रेसाऩीसा रेपमप
  ग़मग़म रेसाऩीसा रेसाऩीसा रेपमप मपनीध
  नीनीसांनी रेंसांनीसां नीनीपनी नीपमप ग़मग़म
  रेसाऩीसा ऩीध़ऩीऩी साऽऽऽ ऩीध़ऩीऩी साऽऽऽ
  ऩीध़ऩीऩी साऽऽऽ

स्वयं जांच अभ्यास 1

6.1 मियां मल्हार राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) सा

ख) नि

ग) म

घ) ग

6.2 मियां मल्हार राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) प

ग) ग̲

घ) सा

6.3 मियां मल्हार राग का समय निम्न में से कौन सा है?

क) दिन का प्रथम प्रहर

ख) दिन का तीसरा प्रहर

ग) मध्य रात्रि

घ) दोपहर

6.4 मियां मल्हार राग में, निम्न में से कौन सा स्वर अवरोह में कोमल होता है?

क) पंचम

ख) षड़ज

ग) मध्यम

घ) गंधार

6.5 मियां मल्हार राग में निम्न में से कौन सी स्वर संगति प्रमुख है?

क) रे प

ख) ग̲ प

ग) म सा

घ) प रे

6.6 मियां मल्हार राग का थाट निम्न में से कौन सा है?

क) कल्याण

ख) काफी

ग) भैरव

घ) तोड़ी

6.7 मियां मल्हार राग के संदर्भ में निम्न में से कौन सी स्वर संगति ठीक है?

क) म ग रे सा

ख) ग म रे सा

ग) ग म रे सा

घ) ग म रे सा

6.8 मियां मल्हार राग की बंदिशों/गतों में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 2

ख) 16

ग) 16

घ) 1

6.9 मियां मल्हार राग की बंदिशों/गतों के साथ केवल एकताल का ही प्रयोग होता है।

क) नहीं

ख) हां

6.10 मियां मल्हार राग, मल्हार तथा मियां रागों के मिश्रण से बना है।

क) सही

ख) गलत

6.4 सारांश

मियां मल्हार राग भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रचलित राग है। शास्त्रीय संगीत की वादन विधा के अंतर्गत इस राग को बजाया जाता है। शास्त्रीय संगीत में रागों के प्रस्तुतिकरण के लिए तथा संगीत के अभ्यास के लिए राग का अभ्यास शुरू से ही किया जाता है। मियां मल्हार राग का आलाप अनिबद्ध (ताल रहित) होता है। इस राग में विलंबित गत/मसीतखानी गत, विलंबित लय में बजाया जाता है। इसमें तोड़ों का अपना महत्व है और विभिन्न प्रकार की तोड़ों को इसमें विभिन्न प्रकार की लयकारियों के साथ बजाया जाता है।

6.5 शब्दावली

- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप सें राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।
- विलंबित गत: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी स्वर रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा विलंबित लय में बजाई जाती हो उसे विलंबित गत कहते हैं।
- मसीतखानी गत: वादन के अंतर्गत, जराग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी स्वर रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो, विलंबित लय में बजाई जाती हो तथा जिसके बोल निश्चित हों (दिर दा दिर दा रा दा दा रा), उसे मसीतखानी गत कहते हैं।
- तोड़ा: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, बजाया जाता है तो उसे तोड़ा कहते हैं।
- लय: वादन/आायन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।
- विलंबित लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत धीमी गति मे चलती है तो उसे विलंबित लय कहते हैं।

6.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

6.1 उत्तर: क)

6.2 उत्तर: ख)

6.3 उत्तर: ग)

6.4 उत्तर: घ)

6.5 उत्तर: क)

6.6 उत्तर: ख)

6.7 उत्तर: ग)

6.8 उत्तर: घ)

6.9 उत्तर: क)

6.10 उत्तर: ख)

6.7 संदर्भ

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

झा, पं. रामाश्रय. (2040). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

6.8 अनुशंसित पठन

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

झा, पं. रामाश्रय. (2040). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

6.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग मियां मल्हार का परिचय लिखिए/बताइए।

प्रश्न 2. राग मियां मल्हार का आलाप लिखिए।

प्रश्न 3. राग मियां मल्हार में विलंबित गत/मसीतखानी गत को लिखिए।

प्रश्न 4. राग मियां मल्हार में पांच तोड़ों को लिखिए।

इकाई-7
बागेश्री राग का छोटा ख्याल (मध्य लय/ द्रुत लय ख्याल) (गायन के संदर्भ में)

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
7.1	भूमिका
7.2	उद्देश्य तथा परिणाम
7.3	राग बागेश्री
7.3.1	बागेश्री राग का परिचय
7.3.2	बागेश्री राग का आलाप
7.3.3	बागेश्री राग का छोटा ख्याल
7.3.4	बागेश्री राग की तानें
	स्वयं जांच अभ्यास 1
7.4	सारांश
7.5	शब्दावली
7.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
7.7	संदर्भ
7.8	अनुशंसित पठन
7.9	पाठगत प्रश्न

7.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA204PR की यह सातवीं इकाई है। इस इकाई में गायन संगीत के संदर्भ में, राग बागेश्री का परिचय, आलाप, छोटा ख्याल (मध्य लय/ द्रुत लय ख्याल) तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग का, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग बागेश्री के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, छोटा ख्याल (मध्य लय/ द्रुत लय ख्याल) तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग बागेश्री का आलाप, छोटा ख्याल (मध्य लय/ द्रुत लय ख्याल) तथा तानों को गा सकेंगे।

7.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- बागेश्री राग के स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- बागेश्री राग के आलाप, छोटा ख्याल (मध्य लय/ द्रुत लय ख्याल) तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- बागेश्री राग के आलाप, छोटा ख्याल (मध्य/ द्रुत लय ख्याल) तथा तानों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को गायन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी गायन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा

- बागेश्री राग के आलाप, छोटा ख्याल (मध्य लय/ द्रुत लय ख्याल) तथा तानों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- बागेश्री राग के आलाप, छोटा ख्याल (मध्य लय/ द्रुत लय ख्याल) तथा तानों को गाने में सक्षम होंगे।
- राग बागेश्री के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

7.3 राग बागेश्री

7.3.1 बागेश्री राग का परिचय

राग - बागेश्री

थाट - काफ़ी

जाति - औडव संपूर्ण

वादी - मध्यम

संवादी - षड्ज

स्वर - गंधार तथा निषाद कोमल (ग़ नि़)

वर्जित - आरोह में रिषभ तथा पंचम

समय - रात्रि का तीसरा प्रहर

समप्रकृतिक राग - रागेश्री

आरोह – नी़ सा ग़ म ध नि़ सां

अवरोह - सां नि़ ध, म प ध ग़, म ग़ रे सा

पकड़ - सां नि ध म प ध ग, रे सा

बागेश्री राग काफी थाट का एक राग है। इसकी जाति औडव-संपूर्ण मानी जाती है। वादी स्वर मध्यम तथा संवादी स्वर षड्ज है। इस राग में गंधार तथा निषाद कोमल प्रयुक्त होते हैं। बागेश्री राग के आरोह में रिषभ तथा पंचम वर्जित रहते हैं। इसका समय रात्रि का तीसरा प्रहर माना जाता है। बागेश्री एक अत्यन्त मधुर राग है।

इस राग का उपयोग कर विद्वानों ने कई मधुर सांगीतिक रचनाएं की हैं। आरोह करते समय रिषभ वर्जित रहता है अतः प्रारम्भ में नी सा ग म ध, नी सा ग म आदि किया जाता है। इस राग में षड्ज से सीधे मध्यम पर भी आते हैं। जैसे-नी सा म ग रे सा। षड्ज से मध्यम पर आना इस राग की अपनी विशेषता है।

बागेश्री राग में पंचम का अल्प प्रयोग होता है। राग का अवरोह करते समय पंचम का प्रयोग केवल एक विशेष ढंग से किया जाता है, जैसे सां नी ध, म प ध ऽ ग, म ग रे सा। पंचम का सीधा प्रयोग राग में नहीं किया जाता है, जैसे सां नी ध प म आदि।

इस राग का प्रमुख स्वर समुदाय ध़ नी सा म, ग म ध नी ध तथा म प ध ग ऽ है। इन्हीं के आधार पर आलाप तान आदि की रचनाएं की जाती हैं। इस राग में ध ग की संगति प्रयुक्त होती है, जैसे- म प ध ग, रे सा। बाग्रश्री राग का आरम्भ (आलाप) सा नी ध़ नी सा म या ध़ नी सा म करते हुए ही करना चाहिए।

इसका समप्रकृतिक राग रागेश्री है। दोनों में अंतर यह है कि बागेश्री में पंचम का प्रयोग किया जाता है वही रागेश्री में पंचम वर्जित रहता है।

बागेश्री में कोमल गंधार का प्रयोग है वहीं दूसरी ओर रागेश्री में गंधार शुद्ध है जैसे- बागेश्री - नी सा म ग, म ध नी ध, म प ध ग, म ग रे सा। रागेश्री – नी सा ग म, ग म ध नी ध म, ग म रे सा।

7.3.2 बागेश्री राग का आलाप

- सा, नी सा, सा, ऩी ध़ - सा रे सा,
- ध़ ऩी ऩी ध़ ऩी सा, सा ऩी ध़ म़ -, म़
  ध़ ऩी ऩी सा, सा,
- ध़ ऩी सा म ग़ – म ग़ रे सा
- सा ऩी ध़ ऩी ध़ -, म़ म़ ध़,
  म़ ध़ ऩी ऩी सा, सा
- ध़ ऩी सा म -, ग़ म ग़ रे सा, ग़
  म ग़ – ग़ म ध – म ग़, म ग़ रे सा
- म ग़ ध, ध म – ध नी ध म,
  म ध नी नी सां, सां
- सां – गं गं रें सां -, ध नी नी सां,
  मं गं रें सां सां,
- सां नी ध नी ध – म प ध ग़ – म ग़
  रे सा, ध़ ऩी ऩी सा म ग़ रे सा, सा

7.3.3 बागेश्री राग छोटा ख्याल (मध्य लय/ द्रुत लय ख्याल)

राग: बागेश्री **ताल: एकताल** **लय: द्रुत लय**

स्थाई

पीऊ-पीऊ बोले पपीहा वन में, हूँक उठत है मोरे मन में,

अन्तरा

जब से गये परदेस बेदर्दी, जीना मारना मुश्किल करदी।
"सुजन" जले बिरहा के अगन में।

स्थायी

X				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
								सां	सां	सां	नि	ध	प	ध	नि
								पी	ऊ	पी	ऊ	बो	ऽ	ले	प
ध	ऽ	ग	म	ग	रे	सा	ऽ								
पी	ऽ	ऽ	हा	व	न	में	ऽ								
								प	नि	सा	म	ग	रे	सा	ऽ
								हूँ	ऽ	क	उ	ठ	त	है	ऽ
म	ध	मध	निसां	निध	पम	गरे	साऽ								
मो	ऽ	रेऽ	ऽऽ	मऽ	नऽ	मेंऽ	ऽऽ								
अंतरा															
								ग	म	ध	नि	सां	ऽ	सां	सां
								जा	ब	से	ग	ये	ऽ	प	र
सां	ऽ	सां	सां	नि	सां	नि	ध								
दे	ऽ	स	बी	द	र	दी	ऽ								
								ध	नि	सां	मं	गं	रें	सां	ऽ
								जी	ऽ	ना	ऽ	म	र	न	ऽ
सां	सां	सां	सां	नि	सां	नि	ध								
मु	शि	क	ल	क	र	दी	ऽ								
								ध	ध	ध	प	ध	नि	ध	ध
								सु	ज	न	ज	ले	ऽ	बि	र
ग	ऽ	ग	ग	ग	रे	सा	ऽ								
हा	ऽ	के	अ	ग	न	में	ऽ								

7.3.4 बागेश्री राग की तानें

- सम से मुखड़ा

  सांनी धनी साग मध नीनी धम मग रेसा

- सम से मुखड़ा

  सांनी धनी ध- सांनी धनी ध- सांनी धनी

- सम से सम

  गम धनी सांनी धनी ध- -- गम धनी

  सांनी धनी ध- -- गम धनी सांनी धनी

- सम से मुखड़ा

  गम धनी सांनी धनी सां- सां- सां- --

  गम धनी सांनी धनी सां- सां- सां- --

  गम धनी सांनी धनी सां- सां- सां- --

- सम से सम

  ऩीसा गम धनी धम गम धम गरे सासा

  ऩीसा गम ध- ऩीसा गम ध- ऩीसा गम

- सम से सम

  सांनी धनी धम पध ग- मग रेसा ऩीसा

ग़म ग़म ध- ग़म ग़म ध- ग़म ग़म

- तीसरी मात्रा से मुखड़ा

ध़नी़ सा,ध़ नी़सा, ध़नी़, ग़म ध,ग़ मध, ग़म,

धनी़ सां,ध नीसां, धनी़, धनी़ सांनी़ धम ग़म

धम ग़म ग़रे सासा ग़म धनी़ सां- ग़म

धनी़ सां- ग़म धनी़

- सम से सम

ध़नी़ साग़ नी़सा ग़म साग़ मध ग़म धनी़

मध नीसां धनी़ सांगं रंसां नीसां नीध नीध

मग़ मग़ रेसा नी़सा ग़- ग़म ध- --

नी़सा ग़- ग़म ध- -- नी़सा ग़- ग़म

स्वयं जांच अभ्यास 1

7.1 बागेश्री राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) म

ख) नि

ग) नी़

घ) ग

7.2 बागेश्री राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) सा

ग) प

घ) म

7.3 बागेश्री राग का समय निम्न में से कौन सा है?

क) दिन का प्रथम प्रहर

ख) दिन का तीसरा प्रहर

ग) रात्रि का तीसरा प्रहर

घ) दोपहर

7.4 बागेश्री राग में, निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में कोमल होता है?

क) कोई भी नहीं

ख) षड़ज

ग) मध्यम

घ) गंधार

7.5 बागेश्री राग में निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में वर्जित होता है?

क) प

ख) म

ग) म

घ) सा

7.6 बागेश्री राग का थाट निम्न में से कौन सा है?

क) कल्याण

ख) काफी

ग) भैरवी

घ) तोड़ी

7.7 बागेश्री राग के संदर्भ में निम्न में से कौन सी स्वर संगति ठीक है?

क) ध नि ध प, म॑ ग

ख) ध सां नि ध प, म ग

ग) नि ध म प ध ग

घ) ध नि सां नी ध म ग

7.8 बागेश्री राग की बंदिशों/गतों में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 9

ख) 16

ग) 2

घ) 1

7.9 बागेश्री राग की बंदिशों/गतों के साथ केवल एकताल का ही प्रयोग होता है।

क) नहीं

ख) हां

7.10 बागेश्री राग, काफी तथा श्री रागों के मिश्रण से बना है।

क) सही

ख) गलत

7.4 सारांश

बागेश्री राग भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रचलित राग है। शास्त्रीय संगीत की गायन विधा के अंतर्गत इस राग को गाया जाता है। शास्त्रीय संगीत में रागों के प्रस्तुतिकरण के लिए तथा संगीत के अभ्यास के लिए राग का अभ्यास शुरू से ही किया जाता है। बागेश्री राग का आलाप अनिबद्ध (ताल रहित) होता है। इस राग में छोटा ख्याल, मध्य लय/ द्रुत लय, में गाया जाता है। इसमें तानों का अपना महत्व है और विभिन्न प्रकार की तानों को इसमें विभिन्न प्रकार की लयकारियों के साथ गाया जाता है।

7.5 शब्दावली

- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप सें राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।

- छोटा ख्याल: गायन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी गीत रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा मध्य या द्रुत लय में गाई जाती हो उसे छोटा ख्याल कहते हैं।
- तान: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, गाया जाता है तो उसे तान कहते हैं।
- लय: गायन/वादन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।
- विलंबित लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत धीमी गति मे चलती है तो उसे विलंबित लय कहते हैं।
- द्रुत लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति मे चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।

7.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

7.1 उत्तर: क)

7.2 उत्तर: ख)

7.3 उत्तर: ग)

7.4 उत्तर: घ)

7.5 उत्तर: क)

7.6 उत्तर: ख)

7.7 उत्तर: ग)

7.8 उत्तर: घ)

7.9 उत्तर: क)

7.10 उत्तर: ख)

7.7 संदर्भ

मिश्र, शंकर लाल (1998).नवीन ख्याल रचनावली, अभिषेक पब्लिकेशन, चंडीगढ

अत्रे, डॉ. प्रभा. (2007). स्वरंजनी रात्रिकालीन रागों की बंदिशों का संकलन, बी. आर. रिदम्स, दिल्ली।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

झा, पं. रामाश्रय. (2040). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

7.8 अनुशंसित पठन

भातखंडे, विष्णुनारायण. (2017). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

मिश्र, शंकर लाल (1998).नवीन ख्याल रचनावली, अभिषेक पब्लिकेशन, चंडीगढ

अत्रे, डॉ. प्रभा. (2007). स्वरंजनी रात्रिकालीन रागों की बंदिशों का संकलन, बी. आर. रिदम्स, दिल्ली।

झा, पं. रामाश्रय. (2040). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

7.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग बागेश्री का परिचय लिखिए/बताइए।

प्रश्न 2. राग बागेश्री का आलाप लिखिए।

प्रश्न 3. राग बागेश्री के छोटा ख्याल (मध्य लय/ द्रुत लय ख्याल) को लिखिए।

प्रश्न 4. राग बागेश्री में पांच तानों को लिखिए।

इकाई-8
जौनपुरी राग का छोटा ख्याल (मध्य लय/द्रुत लय ख्याल) (गायन के संदर्भ में)

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
8.1	भूमिका
8.2	उद्देश्य तथा परिणाम
8.3	राग जौनपुरी
8.3.1	जौनपुरी राग का परिचय
8.3.2	जौनपुरी राग का आलाप
8.3.3	जौनपुरी राग का छोटा ख्याल
8.3.4	जौनपुरी राग की तानें
	स्वयं जांच अभ्यास 1
8.4	सारांश
8.5	शब्दावली
8.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
8.7	संदर्भ
8.8	अनुशंसित पठन
8.9	पाठगत प्रश्न

8.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA204PR की यह आठवीं इकाई है। इस इकाई में गायन संगीत के संदर्भ में, राग जौनपुरी का परिचय, आलाप, छोटा ख्याल (मध्य लय/ द्रुत लय ख्याल) तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग का, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग जौनपुरी के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, छोटा ख्याल (मध्य लय/ द्रुत लय ख्याल) तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग जौनपुरी का आलाप, छोटा ख्याल (मध्य लय/ द्रुत लय ख्याल) तथा तानों को गा सकेंगे।

8.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- जौनपुरी राग के स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- जौनपुरी राग के आलाप, छोटा ख्याल (मध्य लय/ द्रुत लय ख्याल) तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- जौनपुरी राग के आलाप, छोटा ख्याल (मध्य/ द्रुत लय ख्याल) तथा तानों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को गायन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी गायन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा

- जौनपुरी राग के आलाप, छोटा ख्याल (मध्य लय/ द्रुत लय ख्याल) तथा तानों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- जौनपुरी राग के आलाप, छोटा ख्याल (मध्य लय/ द्रुत लय ख्याल) तथा तानों को गाने में सक्षम होंगे।
- राग जौनपुरी के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

8.3 राग जौनपुरी

8.3.1 जौनपुरी राग का परिचय

थाट – आसावरी

जाति - षाडव-संपूर्ण

वादी - धैवत

संवादी - गंधार

स्वर - गंधार, धैवत, निषाद कोमल, अन्य स्वर शुद्ध

वर्जित - आरोह में गंधार

न्यास के स्वर - गंधार, धैवत, पंचम

समय - दिन का दूसरा प्रहर

आरोह – सा रे म प ध॒ नी॒ सां

अवरोह - सां नि॒ ध॒ प म ग॒ रे सा

पकड़ - म प, नी॒ ध॒ प, ध॒ म प ग॒ रे म प

राग जौनपुरी, आसावरी थाट का एक राग है। इसके आरोह में गंधार स्वर वर्जित हैं। इसकी जाति षाड़व-संपूर्ण है। जौनपुरी का वादी स्वर धैवत तथा संवादी स्वर गंधार है। इस राग में गंधार, धैवत, निषाद कोमल, अन्य स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं तथा इसका गायन/वादन समय दिन का दूसरा प्रहर माना गया है। जौनपुरी राग के आरोह में गंधार वर्जित रहता है, जैसे - सा रे म प ध प । जौनपुरी राग में रे म प और प ग स्वरों की संगति बार बार सुनने को मिलती है। इस राग में ग स्वर पर म और ध स्वर पर नि का कण लगाया जाता है। राग में गंधार तथा धैवत स्वरों को आंदोलित किया जाता है।

8.3.2 जौनपुरी राग का आलाप

- सा रे म प ध प, ध म प ग – रे म प, प ध म प ग- रे सा रे सा, प ध म प, प नि ध प।
- सा रे म प ध प, म प नि ध प म प नि ध प, म प ध नि सां ध – प
- म प ध – नि सां सां नि ध प म प ध नि सां, प ध म प ध नि सां,
- प नि ध प म प ध नि सां रें नि ध प नि ध म प ध नि सां रे नि ध प ध म प – ग -रे म प ग रे सा।
- म प ध नि सां, सां रें गं – रें सां, रें मं गं -रें सां, रें मं प – गं – गं रें सां
- सां, नि सा रे नि ध प म प नि ध प , ध म प ग – रे सा, रे म प नि ध -प ।

8.3.3 जौनपुरी राग छोटा ख्याल (मध्य लय/ द्रुत लय ख्याल)

राग: जौनपुरी **ताल: तीनताल** **लय: मध्य/द्रुत लय**

स्थाई:

पायल की झनकार वैरनियाँ
झन-झन बाजे कैसे मोरी
पिया से मिलन को जाऊँ अब मैं

अंतरा:

बिरहा से तन ताप तपत है
अंग-अंग मन लागे रहिलवा
सदा रँगीले उठत जिया हुक

x				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
स्थाई:															
								प	सां	नि	सा	ध	म	ध	प
								पा	s	य	ल	की	s	झ	न
प	सा	नि	सा	ध	म	ध	प								
का	s	र	बै	र	नि	या	s								
								प	सां	नि	सा	ध	म	ध	प
								पा	s	य	ल	की	s	झ	न
प	सा	नि	सा	ध	म	ध	प								
का	s	र	बै	र	नि	या	s								
								म	म	प	सां	ध	ध	म	प
								झ	न	झ	न	बा	s	जे	ऽ
ग	ग	रे	सा	रे	रे	सा	सा								
कै	s	से	s	मो	ऽ	री	s								
								सा	रे	म	म	प	ध	सां	सां
								पि	या	से	मि	ल	न	को	ऽ
सां	रें	नि	सां	ध	नि	ध	प								
जा	s	ऊं	s	अ	ब	मै	s								

x				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
अंतरा:															
								म	म	प	प	ध	ध	प	ध
								बि	र	हा	s	से	s	त	न
सां	s	सां	सां	रें	नि	सां	सां								
ता	s	प	त	प	त	है	s								
								म	म	प	प	ध	ध	प	ध
								बि	र	हा	s	से	s	त	न
सां	s	सां	सां	रें	नि	सां	सां								
ता	s	प	त	प	त	है	s								
								ध	ध	प	ध	सां	s	सां	रें
								अं	s	ग	अं	s	ग	म	न
सारें	गं	रें	सां	नि	सां	ध	प								
लाs	s	गे	र	हि	ल	वा	s								
								प	प	गं	गं	रें	रें	सां	सां
								स	दा	s	रं	गी	s	ले	s
नि	नि	सां	रें	सां	नि	ध	प								
उ	ठ	त	जि	या	s	हू	क								

8.3.4 जौनपुरी राग की तानें

- गम पध पध निध निसां रेसा सांनि धप
- सांनि धप मप धनि सांनि धप मग रेसा
- मप धनि सांनि धप मप धप मग रेसा
- सांसां निसा धप मप गरे सासा सानि़ ध़प
- सारे मप धनि धप मप धप मग रेसा
- सारें गरें सांनि सांनि धप निनि धप मग रेसा।
- मप मप धनि धप मप धप मग रेसा मप धनि
  सांनि धप मप गम गरे सासा
- सांनि धप निध मप धप मप गम रेसा सारें सांनि
  धनि धप मप धप मग रेसा
- मम रेम गरे सा- पप मप मग रेसा धप मप मग रेसा निनि
  धनि धप मग सांसां निसां धप मप गंगं रेंसां रेंरें सांनि सांसां
  निध निनि धप धध पम गरे सा-

स्वयं जांच अभ्यास 1

8.1 जौनपुरी राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) ध

ख) नि

ग) म

घ) ग

8.2 जौनपुरी राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) ग

ग) प

घ) सा

8.3 जौनपुरी राग का समय निम्न में से कौन सा है?

क) दिन का प्रथम प्रहर

ख) दिन का तीसरा प्रहर

ग) दिन का दूसरा प्रहर

घ) दोपहर

8.4 जौनपुरी राग में, निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में कोमल होता है?

क) ऋषभ

ख) षड़ज

ग) मध्यम

घ) कोई भी नहीं

8.5 जौनपुरी राग में निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में वर्जित होता है?

क) ग

ख) प

ग) म

घ) सा

8.6 जौनपुरी राग का थाट निम्न में से कौन सा है?

क) कल्याण

ख) आसावरी

ग) भैरवी

घ) तोड़ी

8.7 जौनपुरी राग के संदर्भ में निम्न में से कौन सी स्वर संगति ठीक है?

क) ध नि ध प, म॑ ग

ख) ध सां नि ध प, म ग

ग) ध नि ध प, ध म ग

घ) ध नि सां नी ध म ग

8.8 जौनपुरी राग की बंदिशों/गतों में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 2

ख) 16

ग) 9

घ) 1

8.9 जौनपुरी राग की बंदिशों/गतों के साथ केवल एकताल का ही प्रयोग होता है।

क) हां

ख) नहीं

8.10 जौनपुरी राग, मालकौंस तथा पूरिया रागों के मिश्रण से बना है।

क) सही

ख) गलत

8.4 सारांश

जौनपुरी राग भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रचलित राग है। शास्त्रीय संगीत की गायन विधा के अंतर्गत इस राग को गाया जाता है। शास्त्रीय संगीत में रागों के प्रस्तुतिकरण के लिए तथा संगीत के अभ्यास के लिए राग का अभ्यास शुरू से ही किया जाता है। जौनपुरी राग का आलाप अनिबद्ध (ताल रहित) होता है। इस राग में छोटा ख्याल, मध्य लय/ द्रुत लय, में गाया जाता है। इसमें तानों का अपना महत्व है और विभिन्न प्रकार की तानों को इसमें विभिन्न प्रकार की लयकारियों के साथ गाया जाता है।

8.5 शब्दावली

- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप सें राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।
- छोटा ख्याल: गायन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी गीत रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा मध्य या द्रुत लय में गाई जाती हो उसे छोटा ख्याल कहते हैं।
- तान: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, गाया जाता है तो उसे तान कहते हैं।
- लय: गायन/वादन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।
- विलंबित लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत धीमी गति मे चलती है तो उसे विलंबित लय कहते हैं।
- द्रुत लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति मे चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।

8.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

8.1 उत्तर: क)

8.2 उत्तर: ख)

8.3 उत्तर: ग)

8.4 उत्तर: घ)

8.5 उत्तर: क)

8.6 उत्तर: ख)

8.7 उत्तर: ग)

8.8 उत्तर: घ)

8.9 उत्तर: क)

8.10 उत्तर: ख)

8.7 संदर्भ

मिश्र, शंकर लाल (1998).नवीन ख्याल रचनावली, अभिषेक पब्लिकेशन, चंडीगढ

अत्रे, डॉ. प्रभा. (2007). स्वरंजनी रात्रिकालीन रागों की बंदिशों का संकलन, बी. आर. रिदम्स, दिल्ली।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

झा, पं. रामाश्रय. (2040). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

8.8 अनुशंसित पठन

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

मिश्र, शंकर लाल (1998).नवीन ख्याल रचनावली, अभिषेक पब्लिकेशन, चंडीगढ

अत्रे, डॉ. प्रभा. (2007). स्वरंजनी रात्रिकालीन रागों की बंदिशों का संकलन, बी. आर. रिदम्स, दिल्ली।

झा, पं. रामाश्रय. (2040). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

8.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग जौनपुरी का परिचय लिखिए/बताइए।

प्रश्न 2. राग जौनपुरी का आलाप लिखिए।

प्रश्न 3. राग जौनपुरी के छोटा ख्याल (मध्य लय/ द्रुत लय ख्याल) को लिखिए।

प्रश्न 4. राग जौनपुरी में पांच तानों को लिखिए।

इकाई-9
मियां मल्हार राग का छोटा ख्याल
(गायन के संदर्भ में)

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
9.1	भूमिका
9.2	उद्देश्य तथा परिणाम
9.3	राग मियां मल्हार
9.3.1	मियां मल्हार राग का परिचय
9.3.2	मियां मल्हार राग का आलाप
9.3.3	मियां मल्हार राग का छोटा ख्याल
9.3.4	मियां मल्हार राग की तानें
	स्वयं जांच अभ्यास 1
9.4	सारांश
9.5	शब्दावली
9.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
9.7	संदर्भ
9.8	अनुशंसित पठन
9.9	पाठगत प्रश्न

9.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA204PR की यह नवम इकाई है। इस इकाई में गायन संगीत के संदर्भ में, राग मियां मल्हार का परिचय, आलाप, छोटा ख्याल (मध्य लय/ द्रुत लय ख्याल) तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग का, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग मियां मल्हार के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, छोटा ख्याल (मध्य लय/ द्रुत लय ख्याल) तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग मियां मल्हार का आलाप, छोटा ख्याल (मध्य लय/ द्रुत लय ख्याल) तथा तानों को गा सकेंगे।

9.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- मियां मल्हार राग के स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- मियां मल्हार राग के आलाप, छोटा ख्याल (मध्य लय/ द्रुत लय ख्याल) तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- मियां मल्हार राग के आलाप, छोटा ख्याल (मध्य/ द्रुत ख्याल) तथा तानों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को गायन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी गायन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा

- मियां मल्हार राग के आलाप, छोटा ख्याल (मध्य लय/ द्रुत लय ख्याल) तथा तानों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- मियां मल्हार राग के आलाप, छोटा ख्याल (मध्य लय/ द्रुत लय ख्याल) तथा तानों को गाने में सक्षम होंगे।
- राग मियां मल्हार के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

9.3 राग मियां मल्हार

9.3.1 मियां मल्हार राग का परिचय

राग - मियां मल्हार

थाट – काफी

जाति – संपूर्ण-षाडव

वादी - षड्ज

संवादी - पंचम

वर्जित स्वर – अवरोह में धैवत

स्वर – गंधार कोमल(ग) , दोनों निषाद (नी नी), अन्य स्वर शुद्ध

न्यास के स्वर – षडज, ऋषभ, पंचम, निषाद

समय – मध्य रात्रि

समप्रकृतिक राग – बहार

आरोह: ऩी सा, ᵐरे ऽ प, ᵐग ऽ ग म रे सा, म रे प, नी ऽ ध नी ऽ सा।

अवरोह: सां नि प, म प ᵐगऽ म रे ऽनि ऽ ध़ नि ऽ सा ऽ।

पकड़: , ᵐरे ऽ प, ᵐग ऽ ग म रे सा, ऽनि ऽ ध़ नि ऽ सा

मियां मल्हार राग, काफी थाट का एक मधुर राग है। इस राग की जाति संपूर्ण-षाडव है। मियां मल्हार राग का वादी स्वर ऋषभ तथा संवादी स्वर पंचम है। प्रस्तुत राग में गंधार कोमल(ग), दोनों निषाद (नी नी), अन्य स्वर शुद्ध लगते हैं। राग में अवरोह में धैवत स्वर वर्जित होता है। इस राग का प्रस्तुति समय मध्य रात्रि माना जाता है। इस राग में षडज, ऋषभ, पंचम, निषाद पर न्यास किया जाता है। इस राग की प्रकृति गंभीर है। संगीतकारों का मानना है कि तानसेन ने इस राग को रचा था।

इस राग का समय मध्ययुग माना जाता है क्योंकि प्राचीन ग्रन्थों में इस राग का वर्णन नहीं मिलता है। इस राग को मियाँ मल्हार के स्थान पर 'मल्हार' भी कहा जाता है। मियाँ मल्हार में गंधार कोमल(ग) रूप में प्रयुक्त होता है तथा आन्दोलित रहता है। अवरोह में गंधार का वक्र प्रयोग होता है (म प ^{म}ग म रे सा), इसमें गंधार का आन्दोलन मध्यम का स्पर्ष करते हुए किया जाता है। मियाँ मल्हार के आरोह में सा रे ग म का सीधा प्रयोग नहीं किया जाता है परन्तु सा रे प के बाद ग म रे सा करते हैं। सा रे प या स्वर संगति मल्हार की विशेष या राग वाचक संगति भी कही गई है।

मियाँ मल्हार के आरोह में शुद्ध निषाद तथा अवरोह में कोमल निषाद का प्रयोग किया जाता है। साथ ही अवरोह में धैवत वर्जित रहने के कारण नि प की संगति रहती है, जैसे- सा म रे ऽ प, म प नि ध नि सां, सां नि प, म प ग म रे सा। कभी-कभी इस राग में दोनों निषादों का एक साथ प्रयोग किया जाता है, जैसे-ग म रे सा, नि़ ध़ नि़ नि़ सा। यह क्रिया अधिकतर मींड से ही ली जाती है। दोनों निषादों का एक साथ प्रयोग मियाँ मल्हार की निजी विशेषता है।

मियाँ मल्हार का समप्रकृतिक राग बहार है। स्वरों की दृष्टि से ये दोनों राग एक समान हैं। दोनों ही रागों में ग म रे सा, नि़ ध़ नि़ सा तथा नि प स्वर समुदाय प्रयुक्त किये जाते हैं। अन्तर की दृष्टि से देखे तो पता चलता है कि बहार राग उत्तरांग प्रधान है तथा मियाँ मल्हार राग मंद्र तथा मध्य सप्तक में अधिक गाया बजाया जाता है। बहार राग में गंधार का सीधा प्रयोग होता है। दूसरी ओर मियाँ मल्हार में गंधार हमेशा मध्यम का कण लेकर आंदोलित रहता है। मियाँ मल्हार में जहाँ रे प की संगति की जाती है वहीं बहार में सा म की संगति रहती है। यह संगतियाँ राग वाचक मानी जाती हैं, जैसे - मियाँ मल्हार (सा रे प, म प ग म रे सा) बहार (सा म म, म प ग म नि ध नि सां)। दूसरा मुख्य अंतर यह है कि नि़ ध़ नि सा स्वर समुदाय दोनों रागों में अलग अलग ढंग से लगते हैं। बहार राग में इस स्वर समुदाय के हर स्वर को सीधा लिया जाता है, जैसे-नि़ ध़ नि़ सा जबकि मियाँ मल्हार में दोनों निषादों को बढ़ाया जाता है, जैसे -नि़ ऽ ध़ नि़ ऽ सा।

9.3.2 मियां मल्हार राग का आलाप

- सा ऽ रे ऽ सा, सा ऽ ऩी ऽ ध़ ऽ ऩी ऽ ऩी ऽ सा ऽ
- सा, ऩी सा, रे सा, ऩी सा ऽ ऩी ध़ ऩी ऽ नी ऽ सा, ऩी सा रे सा ऩी ऽ ध़ ऩी ऽ नी ऽ सा।
- ध़ ऩी म़ प़, म़ प़ ऩी ध़ ऩी ऽ ध़ ऩी ऽ सा, ऩी सा ध़ ऩी प़, प़, म़ प़ ऩी ध़ ऩी सा ऽ रे ऽ सा ऽ।
- सा, सा ᵐरे ऽ प प, म प ग ऽ म रे, सा, म प ऽ प ᵐग म रे रे सा, ऩी ध़ ऩी सा, सा
- साऽ म रे प ऽ, प, ᵐग म रे ऽ सा, ऩी सा ᵐरे प, प, म प नी ध नी प ऽ, ᵐग ऽ म रे प, प म प ग म रे ऽ सा ।
- ᵐरे प ऽ प, म प नी ऽ ध नी ऽ नी ऽ सां ऽ सां ऽ, नी सां नी प ऽ, नी म प ᵐग म रे सा, ᵐरे प ऽ ।
- प म प ᵈनी ऽ ᵈनी ऽऽ सां ऽ सां ऽ , रें नी सां, ध नी म प ध नी ऽ सां, सां ऽ,गं मं रें सां, सां, सां, ध नी म प ऽ, म प ध नी सां ऽ नी प ᵐग म ˢᵃरे सा ऽ, ऩी ऽ ध़ नी़ ऽ सा ऽ सा ऽ।

9.3.3 मियां मल्हार राग छोटा ख्याल (मध्य लय/ द्रुत लय ख्याल)

राग: मियां मल्हार **ताल: एकताल** **लय: द्रुत लय**

स्थायी

जा रे बदरिया जा रे
पिया का संदेसवा ला रे।

अंतरा

बदरा कारे नैना कारे
बरसत मोरे अंगना रे।

x		**0**		**2**		**0**		**3**		**4**	
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
स्थायी											
रे	प	प	प	नीनी	पम	पनी	पप	म	ग	ग	म
जा	-	रे	ब	द-	रि-	या-	--	जा	-	-	रे
नी	नी	ध	नी	सा	रे	नी	सा	नीनी	पम	गम	रेसा
पि	या	का	सं	दे	स	वा	-	ला-	--	--	रे-
अंतरा											
म	पसां	नीनी	म	प	प	प	रें	रें	रें	सां	सां
ब	द-	रा-	का	-	रे	नै	-	ना	का	-	रे
नी	सां	मंगं	गंमं	रें	सां	मनी	नीनी	पम	गम	रेसा	नीसा
ब	र	स-	त-	मो	रे	अं-	ग-	ना-	--	--	रे-

9.3.4 मियां मल्हार राग की तानें

- सारे मप नीध नीप मप गम रेसा नीसा
- धनी सारें नीसां नीनी पम गम रेसा नीसा
- रेप मप गम रेसा नीऽ ऽऽ रेप मप गम रेसा
  नीऽ ऽऽ रेप मप गम रेसा
- मप गम रेसा नीसा -ध नीसा -ध नीसा -ध नीसा
- नीनी पनी नीप मप गम गम रेसा नीसा ऽऽ नीसा
- मप नीध नीप मप धनी सांसां नीध
  नीप मप धनी सारें नीसां नीध नीप
  मप धनी सारें मंमं गंमं रेंसां नीप
  मप गम रेसा
- नीसा रेम गम रेसा नीसा रेम पम गम रेसा रेप
  मप नीध नीप मप गम रेसा नीसा रेम पप नीध
  नीसां गंमं रेंसां नीसां नीध नीप मप गम रेरे सासा
  नीसा रेसा
- गम रेसा नीसा रेसा नीऽ ऽऽ गम रेसा नीसा रेसा
  नीऽ ऽऽ गम रेसा नीसा रेसा

- ऩीध़ ऩीसा गम रेसा ऩीसा ऩीध़ ऩीसा रेप मप गम
  रेसा ऩीसा ऩीध़ ऩीसा सासा रेऽ पप मप गग मम
  रेरे सासा ऩीध़ ऩीसा मरे पऽ मप नीध नीनी सांऽ
  गंमं रेंसां नीसां रेंसां नीध नीप मप गम रेरे सासा
  ऩीध़ ऩीसा

- ध़ऩी सासा ऩीसा रेरे सारे मम रेम पप मप नीनी
  धनी सांसां नीसां रेंरें सारें नीसां गंमं रेंसां नीसां रेंसां
  नीध नीप मप नीध नीनी सांऽ मप गम रेरे सासा
  ऽध़ ऩीसा

- नी़सा रेऩी सारे ऩीसा ऩीध़ ऩीऩी सारे ऩीसा गम गम
  रेसा ऩीसा मप मप गम गम रेसा ऩीसा रेप मप
  गम गम रेसा ऩीसा रेसा ऩीसा रेप मप मप नीध
  नीनी सांनी रेंसां नीसां नीनी पनी नीप मप गम गम
  रेसा ऩीसा ऩीध़ ऩीऩी साऽ ऽऽ ऩीध़ ऩीऩी साऽ ऽऽ
  ऩीध़ ऩीऩी साऽ ऽऽ

स्वयं जांच अभ्यास 1

9.1 मियां मल्हार राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) सा

ख) नि

ग) म

घ) ग

9.2 मियां मल्हार राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) प

ग) ग

घ) सा

9.3 मियां मल्हार राग का समय निम्न में से कौन सा है?

क) दिन का प्रथम प्रहर

ख) दिन का तीसरा प्रहर

ग) मध्य रात्रि

घ) दोपहर

9.4 मियां मल्हार राग में, निम्न में से कौन सा स्वर अवरोह में कोमल होता है?

क) पंचम

ख) षड़ज

ग) मध्यम

घ) गंधार

9.5 मियां मल्हार राग में निम्न में से कौन सी स्वर संगति प्रमुख है?

क) रे प

ख) ग प

ग) म सा

घ) प रे

9.6 मियां मल्हार राग का थाट निम्न में से कौन सा है?

क) कल्याण

ख) काफी

ग) भैरव

घ) तोड़ी

9.7 मियां मल्हार राग के संदर्भ में निम्न में से कौन सी स्वर संगति ठीक है?

क) म ग़ रे सा

ख) ग म रे सा

ग) ग़ म रे सा

घ) ग़ म रे़ सा

9.8 मियां मल्हार राग की बंदिशों/गतों में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 2

ख) 16

ग) 16

घ) 1

9.9 मियां मल्हार राग की बंदिशों/गतों के साथ केवल एकताल का ही प्रयोग होता है।

क) नहीं

ख) हां

9.10 मियां मल्हार राग, मल्हार तथा मियां रागों के मिश्रण से बना है।

क) सही

ख) गलत

9.4 सारांश

मियां मल्हार राग भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रचलित राग है। शास्त्रीय संगीत की गायन विधा के अंतर्गत इस राग को गाया जाता है। शास्त्रीय संगीत में रागों के प्रस्तुतिकरण के लिए तथा संगीत के अभ्यास के लिए राग का अभ्यास शुरू से ही किया जाता है। मियां मल्हार राग का आलाप अनिबद्ध (ताल रहित) होता है। इस राग में छोटा ख्याल, मध्य लय/ द्रुत लय, में गाया जाता है। इसमें तानों का अपना महत्व है और विभिन्न प्रकार की तानों को इसमें विभिन्न प्रकार की लयकारियों के साथ गाया जाता है।

9.5 शब्दावली

- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप सें राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।
- छोटा ख्याल: गायन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी गीत रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा मध्य या द्रुत लय में गाई जाती हो उसे छोटा ख्याल कहते हैं।
- तान: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, गाया जाता है तो उसे तान कहते हैं।
- लय: गायन/वादन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।
- विलंबित लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत धीमी गति मे चलती है तो उसे विलंबित लय कहते हैं।
- द्रुत लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति मे चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।

9.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

9.1 उत्तर: क)

9.2 उत्तर: ख)

9.3 उत्तर: ग)

9.4 उत्तर: घ)

9.5 उत्तर: क)

9.6 उत्तर: ख)

9.7 उत्तर: ग)

9.8 उत्तर: घ)

9.9 उत्तर: क)

9.10 उत्तर: ख)

9.7 संदर्भ

मिश्र, शंकर लाल (1998).नवीन ख्याल रचनावली, अभिषेक पब्लिकेशन, चंडीगढ

अत्रे, डॉ. प्रभा. (2007). स्वरंजनी रात्रिकालीन रागों की बंदिशों का संकलन, बी. आर. रिदम्स, दिल्ली।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

झा, पं. रामाश्रय. (2040). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

9.8 अनुशंसित पठन

भातखंडे, विष्णुनारायण. (2017). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

मिश्र, शंकर लाल (1998).नवीन ख्याल रचनावली, अभिषेक पब्लिकेशन, चंडीगढ

अत्रे, डॉ. प्रभा. (2007). स्वरंजनी रात्रिकालीन रागों की बंदिशों का संकलन, बी. आर. रिदम्स, दिल्ली।

झा, पं. रामाश्रय. (2040). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

9.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग मियां मल्हार का परिचय लिखिए/बताइए।

प्रश्न 2. राग मियां मल्हार का आलाप लिखिए।

प्रश्न 3. राग मियां मल्हार के छोटा ख्याल (मध्य लय/ द्रुत लय ख्याल) को लिखिए।

प्रश्न 4. राग मियां मल्हार में पांच तानों को लिखिए।

इकाई-10
बागेश्री राग की द्रुत गत/रजाखनी गत
(वादन के संदर्भ में)

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
10.1	भूमिका
10.2	उद्देश्य तथा परिणाम
10.3	राग बागेश्री
10.3.1	बागेश्री राग का परिचय
10.3.2	बागेश्री राग का आलाप
10.3.3	बागेश्री राग की द्रुत गत/रजाखनी गत
10.3.4	बागेश्री राग के तोड़े
	स्वयं जांच अभ्यास 1
10.4	सारांश
10.5	शब्दावली
10.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
10.7	संदर्भ
10.8	अनुशंसित पठन
10.9	पाठगत प्रश्न

10.1 भूमिका

संगीत (वादन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA204PR की यह दसवीं इकाई है। इस इकाई में वादन संगीत के संदर्भ में, राग बागेश्री का परिचय, आलाप, की द्रुत गत/रजाखनी गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग का, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग बागेश्री के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, द्रुत गत/रजाखनी गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग बागेश्री का आलाप, द्रुत गत/रजाखनी गत तथा तोड़ों को बजा सकेंगे।

10.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- बागेश्री राग के स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- बागेश्री राग के आलाप, द्रुत गत/रजाखनी गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- बागेश्री राग के आलाप, द्रुत गत/रजाखनी गत तथा तोड़ों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को वादन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी वादन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा

- बागेश्री राग के आलाप, द्रुत गत/रजाखनी गत तथा तोड़ों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- बागेश्री राग के आलाप, द्रुत गत/रजाखनी गत तथा तोड़ों को बजाने में सक्षम होंगे।
- राग बागेश्री के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

10.3 राग बागेश्री

10.3.1 बागेश्री राग का परिचय

राग - बागेश्री

थाट - काफ़ी

जाति - औडव संपूर्ण

वादी - मध्यम

संवादी - षड्ज

स्वर - गंधार तथा निषाद कोमल (ग़ नि़)

वर्जित - आरोह में रिषभ तथा पंचम

समय - रात्रि का तीसरा प्रहर

समप्रकृतिक राग - रागेश्री

आरोह – नी़ सा ग़ म ध नि़ सां

अवरोह - सां नि़ ध, म प ध ग़, म ग़ रे सा

पकड़ - सां नि़ ध म प ध ग़, रे सा

बागेश्री राग काफी थाट का एक राग है। इसकी जाति औडव-संपूर्ण मानी जाती है। वादी स्वर मध्यम तथा संवादी स्वर षड्ज है। इस राग में गंधार तथा निषाद कोमल प्रयुक्त होते हैं। बागेश्री राग के आरोह में रिषभ तथा पंचम वर्जित रहते हैं। इसका समय रात्रि का तीसरा प्रहर माना जाता है। बागेश्री एक अत्यन्त मधुर राग है।

इस राग का उपयोग कर विद्वानों ने कई मधुर सांगीतिक रचनाएं की हैं। आरोह करते समय रिषभ वर्जित रहता है अतः प्रारम्भ में नी सा ग म ध, नी सा ग म आदि किया जाता है। इस राग में षड्ज से सीधे मध्यम पर भी आते हैं। जैसे-नी सा म ग रे सा। षड्ज से मध्यम पर आना इस राग की अपनी विशेषता है।

बागेश्री राग में पंचम का अल्प प्रयोग होता है। राग का अवरोह करते समय पंचम का प्रयोग केवल एक विशेष ढंग से किया जाता है, जैसे सां नी ध, म प ध ऽ ग, म ग रे सा। पंचम का सीधा प्रयोग राग में नहीं किया जाता है, जैसे सां नी ध प म आदि।

इस राग का प्रमुख स्वर समुदाय ध़ नी सा म, ग म ध नी ध तथा म प ध ग ऽ है। इन्हीं के आधार पर आलाप तान आदि की रचनाएं की जाती हैं। इस राग में ध ग की संगति प्रयुक्त होती है, जैसे- म प ध ग, रे सा।

बाग्रश्री राग का आरम्भ (आलाप) सा नी ध़ नी सा म या ध़ नी सा म करते हुए ही करना चाहिए। इसका समप्रकृतिक राग रागेश्री है। दोनों में अंतर यह है कि बागेश्री में पंचम का प्रयोग किया जाता है वही रागेश्री में पंचम वर्जित रहता है।

बागेश्री में कोमल गंधार का प्रयोग है वहीं दूसरी ओर रागेश्री में गंधार शुद्ध है जैसे- बागेश्री - नी सा म ग, म ध नी ध, म प ध ग, म ग रे सा। रागेश्री – नी सा ग म, ग म ध नी ध म, ग म रे सा।

10.3.2 बागेश्री राग का आलाप

- सा, नी॒ सा, सा, ऩी॒ ध़ - सा रे सा,
- ध़ ऩी॒ ऩी॒ ध़ ऩी॒ सा, सा ऩी॒ ध़ म़ -,

  म़ ध़ ऩी॒ ऩी॒ सा, सा,
- ध़ ऩी॒ सा म ग॒ – म ग॒ रे सा
- सा ऩी॒ ध़ ऩी॒ ध़ -, म़ म़ ध़,

  म़ ध़ ऩी॒ ऩी॒ सा, सा
- ध़ ऩी॒ सा म -, ग॒ म ग॒ रे सा, ग॒

  म ग॒ – ग॒ म ध – म ग॒, म ग॒ रे सा
- म ग॒ ध, ध म – ध नी॒ ध म,

  म ध नी॒ नी॒ सां, सां
- सां – गं॒ गं॒ रें सां -, ध नी॒ नी॒ सां,

  मं गं॒ रें सां सां,
- सां नी॒ ध नी॒ ध – म प ध ग॒ – म ग॒

  रे सा, ध़ ऩी॒ ऩी॒ सा म ग॒ रे सा, सा

10.3.3 बागेश्री राग द्रुत गत/रजाखनी गत

राग: बागेश्री **ताल: तीन ताल** **लय: द्रुत लय**

x				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
स्थाई															
												सां	नीनी	ध	नी
												दा	दिर	दा	दा
ध	-	म	ग	म	गग	रे	सा	नी	सा	म	-				
दा	-	दा	रा	दा	दिर	दा	रा	दा	दा	रा	-				
												ग	मम	ध	नी
												दा	दिर	दा	दा
सां	नीनी	ध	म	प	ध	ग	-	रे	रेरे	सा	सा				
दा	दिर	दा	रा	दा	दा	रा	-	दा	दिर	दा	रा				
अन्तरा															
												ग	मम	ध	नी
												दा	दिर	दा	दा
सां	-	सां	सां	नी	सांसां	गं	रें	सां	नीनी	ध	म				
दा	-	दा	रा	दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा				
												गं	रेंरें	सां	रें
												दा	दिर	दा	दा
सां	नीनी	ध	म	प	ध	ग	-	रे	रेरे	सा	सा				
दा	दिर	दा	रा	दा	दा	रा	-	दा	दिर	दा	रा				

10.3.4 बागेश्री राग के तोड़े

- सम से गत तक

सांनी धनी ध- -- सांनी धनी ध- --

सांनी धनी ध- --

- सम से सम तक

गम धनी सांनी धनी ध- -- गम धनी

सांनी धनी ध- -- गम धनी सांनी धनी

- पाँचवी मात्रा से गत तक

गम धनी सांनी धनी सां- सां- सां- --

गम धनी सांनी धनी सां- सां- सां- --

गम धनी सांनी धनी सां- सां- सां- --

- सम से सम तक

नीसा गम धनी धम गम धम गरे सासा

नीसा गम ध- नीसा गम ध- नीसा गम

- सम से सम तक

सांनी धनी धम पध ग- मग रेसा नीसा

गम गम ध- गम गम ध- गम गम

- सम से गत तक

ध़ऩी	सा,ध़	ऩीसा,	ध़ऩी,	गम	ध,ग	मध,	गम,
धनी	सां,ध	नीसां,	धनी,	धनी	सांनी	धम	गम
धम	गम	गरे	सासा	गम	धनी	सां-	गम
धनी	सां-	गम	धनी				

- सम से सम तक

ध़ऩी	साग	ऩीसा	गम	साग	मध	गम	धनी
मध	नीसां	धनी	सांगं	रंसां	नीसां	नीध	नीध
मग	मग	रेसा	ऩीसा	ग-	गम	ध-	--
ऩीसा	ग-	गम	ध-	--	ऩीसा	ग-	गम

स्वयं जांच अभ्यास 1

10.1 बागेश्री राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) म

ख) नि

ग) नी

घ) ग

10.2 बागेश्री राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) सा

ग) प

घ) म

10.3 बागेश्री राग का समय निम्न में से कौन सा है?

क) दिन का प्रथम प्रहर

ख) दिन का तीसरा प्रहर

ग) रात्रि का तीसरा प्रहर

घ) दोपहर

10.4 बागेश्री राग में, निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में कोमल होता है?

क) कोई भी नहीं

ख) षड़ज

ग) मध्यम

घ) गंधार

10.5 बागेश्री राग में निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में वर्जित होता है?

क) प

ख) म

ग) म

घ) सा

10.6 बागेश्री राग का थाट निम्न में से कौन सा है?

क) कल्याण

ख) काफी

ग) भैरवी

घ) तोड़ी

10.7 बागेश्री राग के संदर्भ में निम्न में से कौन सी स्वर संगति ठीक है?

क) ध नि ध प, म॑ ग

ख) ध सां नि ध प, म ग

ग) नि ध म प ध ग

घ) ध नि सां नी ध म ग

10.8 बागेश्री राग की बंदिशों/गतों में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 9

ख) 16

ग) 2

घ) 1

10.9 बागेश्री राग की बंदिशों/गतों के साथ केवल एकताल का ही प्रयोग होता है।

क) नहीं

ख) हां

10.10 बागेश्री राग, काफी तथा श्री रागों के मिश्रण से बना है।

क) सही

ख) गलत

10.4 सारांश

बागेश्री राग भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रचलित राग है। शास्त्रीय संगीत की वादन विधा के अंतर्गत इस राग को बजाया जाता है। शास्त्रीय संगीत में रागों के प्रस्तुतिकरण के लिए तथा संगीत के अभ्यास के लिए राग का अभ्यास शुरू से ही किया जाता है। बागेश्री राग का आलाप अनिबद्ध (ताल रहित) होता है। इस राग में द्रुत गत/रजाखनी गत, विलंबित लय में बजाई जाती है। इसमें तोड़ों का अपना महत्व है और विभिन्न प्रकार की तोड़ों को इसमें विभिन्न प्रकार की लयकारियों के साथ बजाया जाता है।

10.5 शब्दावली

- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप सें राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।

- विलंबित गत: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी स्वर रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा विलंबित लय में बजाई जाती हो उसे विलंबित गत कहते हैं।
- मसीतखानी गत: वादन के अंतर्गत, जराग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी स्वर रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो, विलंबित लय में बजाई जाती हो तथा जिसके बोल निश्चित हों (दिर दा दिर दा रा दा दा रा), उसे मसीतखानी गत कहते हैं।
- द्रुत गत: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी स्वर रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा द्रुत लय में बजाई जाती हो उसे द्रुत गत कहते हैं।
- तोड़ा: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, बजाया जाता है तो उसे तोड़ा कहते हैं।
- लय: वादन/आायन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।
- विलंबित लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत धीमी गति मे चलती है तो उसे विलंबित लय कहते हैं।
- द्रुत लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति मे चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।

10.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

10.1 उत्तर: क)

10.2 उत्तर: ख)

10.3 उत्तर: ग)

10.4 उत्तर: घ)

10.5 उत्तर: क)

10.6 उत्तर: ख)

10.7 उत्तर: ग)

10.8 उत्तर: घ)

10.9 उत्तर: क)

10.10 उत्तर: ख)

10.7 संदर्भ

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2045). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2004). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

झा, पं. रामाश्रय. (2040). अभिनव गीतांजलि (भाग 4-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

10.8 अनुशंसित पठन

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

झा, पं. रामाश्रय. (2040). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

10.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग बागेश्री का परिचय लिखिए/बताइए।

प्रश्न 2. राग बागेश्री का आलाप लिखिए।

प्रश्न 3. राग बागेश्री की विलंबित गत को लिखिए।

प्रश्न 4. राग बागेश्री में पांच तोड़ों को लिखिए।

इकाई-11
जौनपुरी राग की द्रुत गत/रजाखनी गत (वादन के संदर्भ में)

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
11.1	भूमिका
11.2	उद्देश्य तथा परिणाम
11.3	राग जौनपुरी
11.3.1	जौनपुरी राग का परिचय
11.3.2	जौनपुरी राग का आलाप
11.3.3	जौनपुरी राग की द्रुत गत/रजाखनी गत 1
11.3.4	जौनपुरी राग की द्रुत गत/रजाखनी गत 2
11.3.5	जौनपुरी राग के तोड़े
	स्वयं जांच अभ्यास 1
11.4	सारांश
11.5	शब्दावली
11.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
11.7	संदर्भ
11.8	अनुशंसित पठन
11.9	पाठगत प्रश्न

11.1 भूमिका

संगीत (वादन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA204PR की यह ग्याहरवीं इकाई है। इस इकाई में वादन संगीत के संदर्भ में, राग जौनपुरी का परिचय, आलाप, द्रुत गत/रजाखनी गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग का, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग जौनपुरी के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, द्रुत गत/रजाखनी गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग जौनपुरी का आलाप, द्रुत गत/रजाखनी गत तथा तोड़ों को बजा सकेंगे।

11.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- जौनपुरी राग के स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- जौनपुरी राग के आलाप, द्रुत गत/रजाखनी गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- जौनपुरी राग के आलाप, द्रुत गत/रजाखनी गत तथा तोड़ों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को वादन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी वादन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा

- जौनपुरी राग के आलाप, द्रुत गत/रजाखनी गत तथा तोड़ों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- जौनपुरी राग के आलाप, द्रुत गत/रजाखनी गत तथा तोड़ों को बजाने में सक्षम होंगे।
- राग जौनपुरी के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

11.3 राग जौनपुरी

11.3.1 जौनपुरी राग का परिचय

राग - जौनपुरी

थाट – आसावरी

जाति - षाडव-संपूर्ण

वादी - धैवत

संवादी - गंधार

स्वर - गंधार, धैवत, निषाद कोमल, अन्य स्वर शुद्ध

वर्जित - आरोह में गंधार

न्यास के स्वर - गंधार, धैवत, पंचम

समय - दिन का दूसरा प्रहर

आरोह – सा रे म प ध॒ नी॒ सां

अवरोह - सां नि॒ ध॒ प म ग॒ रे सा

पकड़ - म प, नी॒ ध॒ प, ध॒ म प ग॒ रे म प

राग जौनपुरी, आसावरी थाट का एक राग है। इसके आरोह में गंधार स्वर वर्जित हैं। इसकी जाति षाड़व-संपूर्ण है। जौनपुरी का वादी स्वर धैवत तथा संवादी स्वर गंधार है। इस राग में गंधार, धैवत, निषाद कोमल, अन्य स्वर शुद्ध प्रयुक्त होते हैं तथा इसका गायन/वादन समय दिन का दूसरा प्रहर माना गया है। जौनपुरी राग के आरोह में गंधार वर्जित रहता है, जैसे - सा रे म प ध प । जौनपुरी राग में रे म प और प ग स्वरों की संगति बार बार सुनने को मिलती है। इस राग में ग स्वर पर म और ध स्वर पर नि का कण लगाया जाता है। राग में गंधार तथा धैवत स्वरों को आंदोलित किया जाता है।

11.3.2 जौनपुरी राग का आलाप

- सा रे म प ध प, ध म प ग – रे म प, प ध म प ग- रे सा रे सा, प ध म प, प नि ध प।
- सा रे म प ध प, म प नि ध प म प नि ध प, म प ध नि सां ध – प
- म प ध – नि सां सां नि ध प म प ध नि सां, प ध म प ध नि सां,
- प नि ध प म प ध नि सां रें नि ध प नि ध म प ध नि सां रे नि ध प ध म प – ग -रे म प ग रे सा।
- म प ध नि सां, सां रें गं – रें सां, रें मं गं -रें सां, रें मं प – गं – गं रें सां
- सां, नि सा रे नि ध प म प नि ध प , ध म प ग – रे सा, रे म प नि ध -प ।

11.3.3 जौनपुरी राग द्रुत गत/रजाखनी गत 1

राग: जौनपुरी ताल: तीन ताल लय: द्रुत लय

x				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
स्थाई															
								प	सांसां	नि	सां	ध	प	म	प
								दा	दिर	दा	रा	दा	रा	दा	रा
ग	–	रे	सा	रे	–	म	म								
दा	ऽ	दा	रा	दा	ऽ	दा	रा								
								नि	सासा	रे	सा	नि	धध	प	-
								दा	दिर	दा	रा	दा	रा	दा	ऽ
म	पप	ध	नि	सा-	सारे	-म	प-								
दा	दिर	दा	रा	दाऽ	रदा	ऽर	दाऽ								
अंतरा															
								प	गग	रे	सा	नि	धध	प	-
								दा	दिर	दा	रा	दा	रा	दा	ऽ
मप	धनि	सांनि	धप	मप	धप	मग	रेसा								
दिर	दिर	दिर	दिर	दिर	दिर	दिर	दिर								
								म	पप	ध	नि	सां	–	सां	सां
								दा	दिर	दा	रा	दा	ऽ	दा	रा
नि	सांसां	रें	नि	–	ध	प	–								
दा	दिर	दा	रा	ऽ	दा	रा	ऽ								
								पं	गंगं	रें	सां	नि	धध	प	–
								दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	ऽ
मप	धनि	सांनि	धप	मप	धप	मग	रेसा								
दिर	दिर	दिर	दिर	दिर	दिर	दिर	दिर								

11.3.4 जौनपुरी राग द्रुत गत/रजाखनी गत 2

राग: जौनपुरी ताल: तीन ताल लय: द्रुत लय

x				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
स्थाई															
								रे	मम	प	ध	–	नि	ध	नि
								दा	दिर	दा	रा	ऽ	दा	रा	दा
सां	–	सां	नि	ध	पप	म	प								
दा	ऽ	दा	रा	दा	दिर	दा	रा								
								रे	मम	प	ध	–	नि	ध	नि
								दा	दिर	दा	रा	ऽ	दा	रा	दा
सां	–	सां	नि	ध	पप	म	प								
दा	ऽ	दा	रा	दा	दिर	दा	रा								
								ध	धनि	सा	सा	प	गग	रे	सा
								दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा
रे	मम	प	ध	प	गरे	-रे	सा								
दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	ऽदा	रा								
अंतरा															
								म	पप	ध	नि	सां	सांसां	रें	सां
								दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा
ध	धनी	सां	रें	गं	गंगं	रें	सां								
दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा								
								म	पप	ध	नि	सां	सांसां	रें	सां
								दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा
ध	धनी	सां	रें	गं	गंगं	रें	सां								
दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा								
								सां	रेंरें	सां	नि	ध	निनि	ध	प
								दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा
म	पप	ध	प	ग-	गरे	-रे	सा								
दा	दिर	दा	रा	दाऽ	रदा	ऽर	दा								

11.3.5 जौनपुरी राग के तोड़े

- सारे मप धनि धप मप धप मग रेसा
- सांनि धप मप धनि सांनि धप मग रेसा
- मप धनि सांनि धप मप धप मग रेसा
- सांसां निसा धप मप गरे सासा सानि़ ध़प
- गम पध पध निध निसां रेसा सांनि धप
- सारें गरें सांनि सांनि धप निनि धप मग रेसा।
- मप मप धनि धप मप धप मग रेसा मप धनि
  सांनि धप मप गम गरे सासा
- सांनि धप निध मप धप मप गम रेसा सारें सांनि
  धनि धप मप धप मग रेसा
- मम रेम गरे सा- पप मप मग रेसा
  धप मप मग रेसा निनि धनि धप
  मग सांसां निसां धप मप गंगं रेंसां
  रेंरें सांनि सांसां निध निनि धप धध
  पम गरे सा-

स्वयं जांच अभ्यास 1

11.1 जौनपुरी राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) ध

ख) नि

ग) म

घ) ग

11.2 जौनपुरी राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) ग

ग) प

घ) सा

11.3 जौनपुरी राग का समय निम्न में से कौन सा है?

क) दिन का प्रथम प्रहर

ख) दिन का तीसरा प्रहर

ग) दिन का दूसरा प्रहर

घ) दोपहर

11.4 जौनपुरी राग में, निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में कोमल होता है?

क) ऋषभ

ख) षड़ज

ग) मध्यम

घ) कोई भी नहीं

11.5 जौनपुरी राग में निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में वर्जित होता है?

क) ग

ख) प

ग) म

घ) सा

16 जौनपुरी राग का थाट निम्न में से कौन सा है?

क) कल्याण

ख) आसावरी

ग) भैरवी

घ) तोड़ी

11.7 जौनपुरी राग के संदर्भ में निम्न में से कौन सी स्वर संगति ठीक है?

क) ध नि ध प, म॑ ग

ख) ध सां नि ध प, म ग

ग) ध नि ध प, ध म ग

घ) ध नि सां नी ध म ग

11.8 जौनपुरी राग की बंदिशों/गतों में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 2

ख) 16

ग) 9

घ) 1

11.9 जौनपुरी राग की बंदिशों/गतों के साथ केवल एकताल का ही प्रयोग होता है।

क) हां

ख) नहीं

11.10 जौनपुरी राग, मालकौंस तथा पूरिया रागों के मिश्रण से बना है।

क) सही

ख) गलत

11.4 सारांश

जौनपुरी राग भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रचलित राग है। शास्त्रीय संगीत की वादन विधा के अंतर्गत इस राग को बजाया जाता है। शास्त्रीय संगीत में रागों के प्रस्तुतिकरण के लिए तथा संगीत के अभ्यास के लिए राग का अभ्यास शुरू से ही किया जाता है। जौनपुरी राग का आलाप अनिबद्ध (ताल रहित) होता है। इस राग में द्रुत गत/रजाखनी गत, विलंबित लय में बजाई जाती है। इसमें तोड़ों का अपना महत्व है और विभिन्न प्रकार की तोड़ों को इसमें विभिन्न प्रकार की लयकारियों के साथ बजाया जाता है।

11.5 शब्दावली

- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप सें राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।
- विलंबित गत: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी स्वर रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा विलंबित लय में बजाई जाती हो उसे विलंबित गत कहते हैं।
- मसीतखानी गत: वादन के अंतर्गत, जराग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी स्वर रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो, विलंबित लय में बजाई जाती हो तथा जिसके बोल निश्चित हों (दिर दा दिर दा रा दा दा रा), उसे मसीतखानी गत कहते हैं।
- द्रुत गत: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी स्वर रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा द्रुत लय में बजाई जाती हो उसे द्रुत गत कहते हैं।
- तोड़ा: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, बजाया जाता है तो उसे तोड़ा कहते हैं।
- लय: वादन/आायन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।
- विलंबित लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत धीमी गति मे चलती है तो उसे विलंबित लय कहते हैं।

- द्रुत लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति मे चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।

11.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

11.1 उत्तर: क)

11.2 उत्तर: ख)

11.3 उत्तर: ग)

11.4 उत्तर: घ)

11.5 उत्तर: क)

11.6 उत्तर: ख)

11.7 उत्तर: ग)

11.8 उत्तर: घ)

11.9 उत्तर: क)

11.10 उत्तर: ख)

11.7 संदर्भ

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

झा, पं. रामाश्रय. (2040). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

11.8 अनुशंसित पठन

भातखंडे, विष्णुनारायण. (2017). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

मिश्र, शंकर लाल (1998).नवीन ख्याल रचनावली, अभिषेक पब्लिकेशन, चंडीगढ

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

झा, पं. रामाश्रय. (2040). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

11.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग जौनपुरी का परिचय लिखिए/बताइए।

प्रश्न 2. राग जौनपुरी का आलाप लिखिए।

प्रश्न 3. राग जौनपुरी में द्रुत गत/रजाखनी गत को लिखिए।

प्रश्न 4. राग जौनपुरी में पांच तोड़ों को लिखिए।

इकाई-12
मियां मल्हार राग की द्रुत गत/रजाखनी गत (वादन के संदर्भ में)

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
12.1	भूमिका
12.2	उद्देश्य तथा परिणाम
12.3	राग मियां मल्हार
12.3.1	मियां मल्हार राग का परिचय
12.3.2	मियां मल्हार राग का आलाप
12.3.3	मियां मल्हार राग की द्रुत गत/रजाखनी गत
12.3.4	मियां मल्हार राग के तोड़े
	स्वयं जांच अभ्यास 1
12.4	सारांश
12.5	शब्दावली
12.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
12.7	संदर्भ
12.8	अनुशंसित पठन
12.9	पाठगत प्रश्न

12.1 भूमिका

संगीत (वादन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA204PR की यह बारहवीं इकाई है। इस इकाई में वादन संगीत के संदर्भ में, राग मियां मल्हार का परिचय, आलाप, द्रुत गत/रजाखनी गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग का, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग मियां मल्हार के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, द्रुत गत/रजाखनी गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग मियां मल्हार का आलाप, द्रुत गत/रजाखनी गत तथा तोड़ों को बजा सकेंगे।

12.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- मियां मल्हार राग के स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- मियां मल्हार राग के आलाप, द्रुत गत/रजाखनी गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- मियां मल्हार राग के आलाप, द्रुत गत/रजाखनी गत तथा तोड़ों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को वादन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी वादन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा

- मियां मल्हार राग के आलाप, द्रुत गत/रजाखनी गत तथा तोड़ों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- मियां मल्हार राग के आलाप, द्रुत गत/रजाखनी गत तथा तोड़ों को बजाने में सक्षम होंगे।
- राग मियां मल्हार के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

12.3 राग मियां मल्हार

12.3.1 मियां मल्हार राग का परिचय

राग - मियां मल्हार

थाट – काफी

जाति – संपूर्ण-षाडव

वादी - षड्ज

संवादी - पंचम

वर्जित स्वर – अवरोह में धैवत

स्वर – गंधार कोमल(ग) , दोनों निषाद (नी नी), अन्य स्वर शुद्ध

न्यास के स्वर – षडज, ऋषभ, पंचम, निषाद

समय – मध्य रात्रि

समप्रकृतिक राग – बहार

आरोह: ऩी सा, ᵐरे ऽ प, ᵐग ऽ ग म रे सा, म रे प, नी ऽ ध नी ऽ सा।

अवरोह: सां नि प, म प ᵐगऽ म रे ऽनि ऽ ध़ नि ऽ सा ऽ।

पकड़: , ᵐरे ऽ प, ᵐग ऽ ग म रे सा, ऽनि ऽ ध़ नि ऽ सा

मियां मल्हार राग, काफी थाट का एक मधुर राग है। इस राग की जाति संपूर्ण-षाडव है। मियां मल्हार राग का वादी स्वर ऋषभ तथा संवादी स्वर पंचम है। प्रस्तुत राग में गंधार कोमल(ग), दोनों निषाद (नी नी), अन्य स्वर शुद्ध लगते हैं। राग में अवरोह में धैवत स्वर वर्जित होता है। इस राग का प्रस्तुति समय मध्य रात्रि माना जाता है। इस राग में षडज, ऋषभ, पंचम, निषाद पर न्यास किया जाता है। इस राग की प्रकृति गंभीर है। संगीतकारों का मानना है कि तानसेन ने इस राग को रचा था।

इस राग का समय मध्ययुग माना जाता है क्योंकि प्राचीन ग्रन्थों में इस राग का वर्णन नहीं मिलता है। इस राग को मियाँ मल्हार के स्थान पर 'मल्हार' भी कहा जाता है। मियाँ मल्हार में गंधार कोमल(ग) रूप में प्रयुक्त होता है तथा आन्दोलित रहता है। अवरोह में गंधार का वक्र प्रयोग होता है (म प ^{m}ग म रे सा), इसमें गंधार का आन्दोलन मध्यम का स्पर्ष करते हुए किया जाता है। मियाँ मल्हार के आरोह में सा रे ग म का सीधा प्रयोग नहीं किया जाता है परन्तु सा रे प के बाद ग म रे सा करते हैं। सा रे प या स्वर संगति मल्हार की विशेष या राग वाचक संगति भी कही गई है।

मियाँ मल्हार के आरोह में शुद्ध निषाद तथा अवरोह में कोमल निषाद का प्रयोग किया जाता है। साथ ही अवरोह में धैवत वर्जित रहने के कारण नि प की संगति रहती है, जैसे- सा म रे ऽ प, म प नि ध नि सां, सां नि प, म प ग म रे सा। कभी-कभी इस राग में दोनों निषादों का एक साथ प्रयोग किया जाता है, जैसे-ग म रे सा, नि़ ध़ नि़ नि़ सा। यह क्रिया अधिकतर मींड से ही ली जाती है। दोनों निषादों का एक साथ प्रयोग मियाँ मल्हार की निजी विशेषता है।

मियाँ मल्हार का समप्रकृतिक राग बहार है। स्वरों की दृष्टि से ये दोनों राग एक समान हैं। दोनों ही रागों में ग म रे सा, नि़ ध़ नि़ सा तथा नि प स्वर समुदाय प्रयुक्त किये जाते हैं। अन्तर की दृष्टि से देखे तो पता चलता है कि बहार राग उत्तरांग प्रधान है तथा मियाँ मल्हार राग मंद्र तथा मध्य सप्तक में अधिक गाया बजाया जाता है। बहार राग में गंधार का सीधा प्रयोग होता है। दूसरी ओर मियाँ मल्हार में गंधार हमेशा मध्यम का कण लेकर आंदोलित रहता है। मियाँ मल्हार में जहाँ रे प की संगति की जाती है वहीं बहार में सा म की संगति रहती है। यह संगतियाँ राग वाचक मानी जाती हैं, जैसे - मियाँ मल्हार (सा रे प, म प ग म रे सा) बहार (सा म म, म प ग म नि ध नि सां)। दूसरा मुख्य अंतर यह है कि नि़ ध़ नि सा स्वर समुदाय दोनों रागों में अलग अलग ढंग से लगते हैं। बहार राग में इस स्वर समुदाय के हर स्वर को सीधा लिया जाता है, जैसे-नि़ ध़ नि़ सा जबकि मियाँ मल्हार में दोनों निषादों को बढ़ाया जाता है, जैसे -नि़ ऽ ध़ नि़ ऽ सा।

12.3.2 मियां मल्हार राग का आलाप

- सा ऽ रे ऽ सा, सा ऽ ऩी ऽ ध़ ऽ ऩी ऽ ऩी ऽ सा ऽ
- सा, ऩी सा, रे सा, ऩी सा ऽ ऩी ध़ ऩी ऽ नी ऽ सा, ऩी सा रे सा ऩी ऽ ध़ ऩी ऽ नी ऽ सा।
- ध़ ऩी म़ प़, म़ प़ ऩी ध़ ऩी ऽ ध़ ऩी ऽ सा, ऩी सा ध़ ऩी प़, प़, म़ प़ ऩी ध़ ऩी सा ऽ रे ऽ सा ऽ।
- सा, सा ᵐरे ऽ प प, म प ग ऽ म रे, सा, म प ऽ प ᵐग म रे रे सा, ऩी ध़ ऩी सा, सा
- साऽ म रे प ऽ, प, ᵐग म रे ऽ सा, ऩी सा ᵐरे प, प, म प नी ध नी प ऽ, ᵐग ऽ म रे प, प म प ग म रे ऽ सा ।
- ᵐरे प ऽ प, म प नी ऽ ध नी ऽ नी ऽ सां ऽ सां ऽ, नी सां नी प ऽ, नी म प ᵐग म रे सा, ᵐरे प ऽ ।
- प म प ᵈनी ऽ ᵈनी ऽऽ सां ऽ सां ऽ , रें नी सां, ध नी म प ध नी ऽ सां, सां ऽ,गं मं रें सां, सां, सां, ध नी म प ऽ, म प ध नी सां ऽ नी प ᵐग म ˢᵃरे सा ऽ, ऩी ऽ ध़ नी़ ऽ सा ऽ सा ऽ।

12.3.3 मियां मल्हार राग द्रुत गत/रजाखनी गत

राग: मियां मल्हार **ताल: तीनताल** **लय: द्रुत लय**

x				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
स्थाई															
								रे	पप	म	प	ग	मम	रे	सा
								दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा
नी	ऽ	ध़	ध़	नी	ऽ	सा	ऽ								
दा	ऽ	दा	रा	दा	ऽ	रा	ऽ								
								सा	सा	रे	-	प	पप	म	प
								दा	रा	दा	ऽ	दा	दिर	दा	रा
नीनी	पनी	नीप	मप	गम	रेसा	नीसा	रेसा								
दिर	दिर	दिर	दिर	दिरा	दिर	दिर	दिर								
अन्तरा															
								म	पप	नी	ध	नी	नीनी	सां	सां
								दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा
नी	सांसां	गं	मं	रें	सांसां	नी	सां								
दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा								
								नी	धध	नी	सां	नी	धध	नी	प
								दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा
नीनी	पनी	नीप	मप	गम	रेसा	नीसा	रेसा								
दिर	दिर	दिर	दिर	दिरा	दिर	दिर	दिर								

12.3.4 मियां मल्हार राग के तोड़े

- मप गम रेसा ऩीसा -ध़ ऩीसा -ध़ ऩीसा -ध़ ऩीसा
- नीनी पनी नीप मप गम गम रेसा ऩीसा ऽऽ ऩीसा
- सारे मप नीध नीप मप गम रेसा ऩीसा
- धनी सारें नीसां नीनी पम गम रेसा ऩीसा
- रेप मप गम रेसा ऩीऽ ऽऽ रेप मप गम रेसा
  ऩीऽ ऽऽ रेप मप गम रेसा
- मप नीध नीप मप धनी सांसां नीध
  नीप मप धनी सारें नीसां नीध नीप
  मप धनी सारें मंमं गंमं रेंसां नीप
  मप गम रेसा
- ऩीसा रेम गम रेसा ऩीसा रेम पम
  गम रेसा रेप मप नीध नीप मप
  गम रेसा ऩीसा रेम पप नीध नीसां
  गंमं रेंसां नीसां नीध नीप मप गम
  रेरे सासा ऩीसा रेसा
- गम रेसा ऩीसा रेसा ऩीऽ ऽऽ गम

रेसा ऩीसा रेसा नीऽ ऽऽ गम रेसा

ऩीसा रेसा

- नीध़ ऩीसा गम रेसा ऩीसा नीध़ ऩीसा रेप मप गम

  रेसा ऩीसा नीध़ ऩीसा सासा रेऽ पप मप गग मम

  रेरे सासा नीध़ ऩीसा मरे पऽ मप नीध नीनी सांऽ

  गंमं रेंसां नीसां रेंसां नीध नीप मप गम रेरे सासा

  नीध़ ऩीसा

- ध़ऩी सासा ऩीसा रेरे सारे मम रेम पप मप

  नीनी धनी सांसां नीसां रेंरें सारें नीसां गंमं रेंसां

  नीसां रेंसां नीध नीप मप नीध नीनी सांऽ मप

  गम रेरे सासा ऽध़ ऩीसा

- नी़सा रेऩी सारे ऩीसा नीध़

  ऩीऩी सारे ऩीसा गम गम

  रेसा ऩीसा मप मप गम

  गम रेसा ऩीसा रेप मप

  गम गम रेसा ऩीसा रेसा

  ऩीसा रेप मप मप नीध

  नीनी सांनी रेंसां नीसां नीनी

पनी	नीप	मप	गम	गम
रेसा	ऩीसा	ऩीध़	ऩीऩी	साऽ
ऽऽ	ऩीध़	ऩीऩी	साऽ	ऽऽ
ऩीध़	ऩीऩी	साऽ	ऽऽ	

स्वयं जांच अभ्यास 1

12.1 मियां मल्हार राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) सा

ख) नि

ग) म

घ) ग

12.2 मियां मल्हार राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) प

ग) ग

घ) सा

12.3 मियां मल्हार राग का समय निम्न में से कौन सा है?

क) दिन का प्रथम प्रहर

ख) दिन का तीसरा प्रहर

ग) मध्य रात्रि

घ) दोपहर

12.4 मियां मल्हार राग में, निम्न में से कौन सा स्वर अवरोह में कोमल होता है?

क) पंचम

ख) षड़ज

ग) मध्यम

घ) गंधार

12.5 मियां मल्हार राग में निम्न में से कौन सी स्वर संगति प्रमुख है?

क) रे प

ख) ग प

ग) म सा

घ) प रे

12.6 मियां मल्हार राग का थाट निम्न में से कौन सा है?

क) कल्याण

ख) काफी

ग) भैरव

घ) तोड़ी

12.7 मियां मल्हार राग के संदर्भ में निम्न में से कौन सी स्वर संगति ठीक है?

क) म ग रे सा

ख) ग म रे सा

ग) ग म रे सा

घ) ग म रे सा

12.8 मियां मल्हार राग की बंदिशों/गतों में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 2

ख) 16

ग) 16

घ) 1

12.9 मियां मल्हार राग की बंदिशों/गतों के साथ केवल एकताल का ही प्रयोग होता है।

क) नहीं

ख) हां

12.10 मियां मल्हार राग, मल्हार तथा मियां रागों के मिश्रण से बना है।

क) सही

ख) गलत

12.4 सारांश

मियां मल्हार राग भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रचलित राग है। शास्त्रीय संगीत की वादन विधा के अंतर्गत इस राग को बजाया जाता है। शास्त्रीय संगीत में रागों के प्रस्तुतिकरण के लिए तथा संगीत के अभ्यास के लिए राग का अभ्यास शुरू से ही किया जाता है। मियां मल्हार राग का आलाप अनिबद्ध (ताल रहित) होता है। इस राग में द्रुत गत/रजाखनी गत, विलंबित लय में बजाया जाता है। इसमें तोड़ों का अपना महत्व है और विभिन्न प्रकार की तोड़ों को इसमें विभिन्न प्रकार की लयकारियों के साथ बजाया जाता है।

12.5 शब्दावली

- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप सें राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।
- विलंबित गत: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी स्वर रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा विलंबित लय में बजाई जाती हो उसे विलंबित गत कहते हैं।
- मसीतखानी गत: वादन के अंतर्गत, जराग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी स्वर रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो, विलंबित लय में बजाई जाती हो तथा जिसके बोल निश्चित हों (दिर दा दिर दा रा दा दा रा), उसे मसीतखानी गत कहते हैं।
- द्रुत गत: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी स्वर रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा द्रुत लय में बजाई जाती हो उसे द्रुत गत कहते हैं।

- तोड़ा: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, बजाया जाता है तो उसे तोड़ा कहते हैं।
- लय: वादन/आायन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।
- विलंबित लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत धीमी गति मे चलती है तो उसे विलंबित लय कहते हैं।
- द्रुत लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति मे चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।

12.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

12.1 उत्तर: क)

12.2 उत्तर: ख)

12.3 उत्तर: ग)

12.4 उत्तर: घ)

12.5 उत्तर: क)

12.6 उत्तर: ख)

12.7 उत्तर: ग)

12.8 उत्तर: घ)

12.9 उत्तर: क)

12.10 उत्तर: ख)

12.7 संदर्भ

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

झा, पं. रामाश्रय. (2040). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

12.8 अनुशंसित पठन

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

भातखंडे, विष्णुनारायण. (2017). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

झा, पं. रामाश्रय. (2040). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

12.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग मियां मल्हार का परिचय लिखिए/बताइए।

प्रश्न 2. राग मियां मल्हार का आलाप लिखिए।

प्रश्न 3. राग मियां मल्हार में द्रुत गत/रजाखनी गत को लिखिए।

प्रश्न 4. राग मियां मल्हार में पांच तोड़ों को लिखिए।

इकाई-13
ताल

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
13.1	भूमिका
13.2	उद्देश्य तथा परिणाम
13.3	चौताल का परिचय तथा स्वरलिपि
13.4	रूपक ताल का परिचय तथा स्वरलिपि
13.5	कहरवा का परिचय तथा स्वरलिपि
	स्वयं जांच अभ्यास 1
13.6	सारांश
13.7	शब्दावली
13.8	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
13.9	संदर्भ
13.10	अनुशंसित पठन
13.11	पाठगत प्रश्न

13.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA204PR की यह तेरहवीं इकाई है। इस इकाई में संगीत में प्रयुक्त होने वाली कुछ तालों को विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

भारतीय शास्त्रीय संगीत में तालों का विशेष महत्व रहता है। गायन और वादन के साथ विभिन्न प्रकार की तालों को बजाया जाता है। इन तालों में चौताल, रूपक ताल, कहरवा ताल आदि तालें प्रयोग की जाती हैं। इन तालों को एकगुण, दुगुण, तिगुण व चौगुण लयकारियों में तबले पर बजाया जाता है तथा हाथ पर ताली देकर भी प्रदर्शित किया जाता है। इस तालों को शास्त्रीय संगीत की बंदिशों के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि क साथ भी बजाया जाता है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी चौताल, रूपक ताल, कहरवा ताल की मूलभूत जानकारी प्राप्त कर सकेंगे तथा क्रियात्मक रूप से उन्हें बजा सकेगें।

13.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- चौताल, रूपक ताल, कहरवा ताल का परिचय प्रदान करना।
- चौताल, रूपक ताल, कहरवा ताल को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- चौताल, रूपक ताल, कहरवा ताल की लिखने की क्षमता विकसित करना।
- विद्यार्थी में कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी, ताल के संदर्भ में, चौताल, रूपक ताल, कहरवा ताल के विषय में जान पाएगा।
- विद्यार्थी, ताल के संदर्भ में, चौताल, रूपक ताल, कहरवा ताल को बजाने में सक्षम होगा।

- विद्यार्थी में, ताल के संदर्भ में, चौताल, रूपक ताल, कहरवा ताल के वादन द्वारा कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास होगा।
- विद्यार्थी में, ताल के संदर्भ में, चौताल, रूपक ताल, कहरवा ताल को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी।

13.3 चौताल का परिचय तथा स्वरलिपि

मात्राएं	12
विभाग	06
ताली	02
खाली	04

एक ताल 12 मात्रा की ताल है। यह ताल 6 विभागों में विभक्त है। हर विभाग 2 मात्राओं का होता है। इस ताल में पहली मात्रा पर सम तथा ताली, पांचवी, नवीं, ग्यारहवीं मात्रा पर ताली तथा तीसरी व सातवीं मात्रा पर खाली रहती है। चौताल पखावज की एक ताल है। इस ताल की मात्रा, संख्या, ताली, खाली आदि सब एक ताल के समान हैं।

ध्रुवपद गायकी के साथ इस ताल का खूब प्रयोग किया जाता है। इस ताल का मृंदग पर स्वतन्त्र वादन भी किया जाता है। इस ताल का वादन खुले हाथों से बोल बजाकर किया जाता है। इस ताल का प्रयोग शास्त्रीय संगीत में होता है। यह ताल विलंबित लय, मध्य लय, द्रुत लय तीनों लयों में बजाई जाती है।

##ताललिपि

एकगुण

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
धा	धा	दिं	ता	किट	धा	दिं	ता	तिट	कत	गदि	गन
x		**0**		**2**		**0**		**3**		**4**	

दुगुण

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
धाधा	दिंता	किटधा	दिंता	तिटकत	गदिगन	धाधा	दिंता	किटधा	दिंता	तिटकत	गदिगन
x		**0**		**2**		**0**		**3**		**4**	

तिगुण

1	2	3	4	5	6
धाधादिं	ताकिटधा	दिंतातिट	कतगदिगन	धाधादिं	ताकिटधा
x		**0**		**2**	
7	8	9	10	11	12
दिंतातिट	कतगदिगन	धाधादिं	ताकिटधा	दिंतातिट	कतगदिगन
0	**3**			**4**	

चौगुण

1	2	3	4	5	6
धाधादिंता	किटधा दिंता	तिटकतगदिगन	धाधादिंता	किटधा दिंता	तिटकतगदिगन
x		**0**		**2**	
7	8	9	10	11	12
धाधादिंता	किटधा दिंता	तिटकतगदिगन	धाधादिंता	किटधा दिंता	तिटकतगदिगन
0		**3**		**4**	

13.4 रूपक ताल का परिचय तथा स्वरलिपि

मात्राएं 07

विभाग 03

ताली 02

खाली 01

एक ताल 07 मात्रा की ताल है। यह ताल 3 विभागों में विभक्त है। पहला विभाग 3 मात्राओं का तथा दूसरा व तसरा विभाग 2 मात्राओं का होता है। इस ताल में पहली मात्रा पर खाली, चौथी व छटी मात्रा पर ताली होती है। विद्वान मौखिक रूप में प्रथम मात्रा पर खाली मानते हैं, किन्तु क्रिया में उसी पर सम मानते हैं। इस प्रकार ताल रूपक में पहली मात्रा पर सम अथवा खाली दोनों आते हैं। इस ताल का प्रयोग शास्त्रीय संगीत, उप शास्त्रीय संगीत, सुगम संगीत इत्यादि लगभग सभी विधाओं में होता है। यह ताल विलंबित लय, मध्य लय, द्रुत लय तीनों लयों में बजाई जाती है। इस ताल में

छोटा ख्याल, मध्य लय की गतें, द्रुत गतें, इत्यादि गाए-बजाए जाते हैं। सुगम संगीत इत्यादि में इस ताल का प्रयोग अधिक किया जाता है।

तालिपि

एकगुण

1	2	3	4	5	6	7
ती	ती	ना	धी	ना	धी	ना
0			**2**		**3**	

दुगुण

1	2	3	4	5	6	7
तीती	नाधी	नाधी	नाती	तीना	धीना	धीना
0			**2**		**3**	

तिगुण

1	2	3	4	5	6	7
तीतीना	धीनाधी	नातीती	नाधीना	धीनाती	तीनाधी	नाधीना
0			**2**		**3**	

चौगुण

1	2	3	4	5	6	7
तीतीनाधी	नाधीनाती	तीनाधीना	धीनातीती	नाधीनाधी	नातीतीना	धीनाधीना
0			**2**		**3**	

13.5 कहरवा ताल का परिचय तथा स्वरलिपि

मात्राएं 08

विभाग 02

ताली 01

खाली 01

कहरवा ताल आधुनिक समय की एक बहुत लोकप्रिय ताल है। इसका प्रयोग फिल्मी गीत, भजन, ग़ज़ल, लोक संगीत आदि में अधिक होता है। यह प्रमुख रूप से तबले, ढोलक, नाल आदि पर बजाई जाती है। यह चंचल प्रकृति की ताल मानी गई है। इस ताल में 8 मात्राएं है तथा 2 विभाग हैं। प्रत्येक विभाग 4-4 मात्राओं का है। पहली मात्रा पर सम तथा पांचवी मात्रा पर खाली है।

तालिपि

X				0			
1	2	3	4	5	6	7	8
एकगुण							
धा	गे	ना	ती	न	क	धिं	न
X				0			
1	2	3	4	5	6	7	8
दुगुण							
धागे	नाती	नक	धिंन	धागे	नाती	नक	धिंन

X				0			
1	2	3	4	5	6	7	8
तिगुण							
धागेना	तीनक	धिंनधा	गेनाती	नकधिं	नधागे	नातीन	कधिंन

X				0			
1	2	3	4	5	6	7	8
चारगुण							
धागेनाती	नकधिंन	धागेनाती	नकधिंन	धागेनाती	नकधिंन	धागेनाती	नकधिंन

स्वयं जांच अभ्यास 1

13.1. चौताल में कितनी मात्राएं होती हैं?

क) 10

ख) 16

ग) 14

घ) 12

13.2. चौताल में कितनी ताली होती हैं?

क) 1

ख) 3

ग) 2

घ) 4

13.3. चौताल में खाली कौन सी मात्रा पर होती हैं?

क) 1

ख) 7

ग) 11

घ) 10

13.4. चौताल में कितने विभाग होते हैं?

क) 6

ख) 4

ग) 2

घ) 8

13.5. चौताल में 5वीं मात्रा पर कौन सा बोल होता है?

क) धा

ख) किट

ग) धीं

घ) तिट

13.6. रूपक में कितनी मात्राएं होती हैं?

क) 8

ख) 10

ग) 6

घ) 7

13.7. रूपक में कितनी ताली होती हैं?

क) 3

ख) 2

ग) 1

घ) 4

13.8. रूपक में खाली कौन सी मात्रा पर होती हैं?

क) 2

ख) 1

ग) 4

घ) 6

13.9. रूपक में कितने विभाग होते हैं?

क) 3

ख) 8

ग) 2

घ) 5

13.10. रूपक में 5वीं मात्रा पर कौन सा बोल होता है?

क) धा

ख) किट

ग) धी

घ) ना

13.11. कहरवा ताल में कितनी मात्राएं होती हैं?

क) 10

ख) 12

ग) 6

घ) 8

13.12. कहरवा ताल में कितनी ताली होती हैं?

क) 1

ख) 2

ग) 3

घ) 4

13.13. कहरवा ताल में खाली कौन सी मात्रा पर होती हैं?

क) 6

ख) 5

ग) 4

घ) 7

13.14. कहरवा ताल में कितने विभाग होते हैं?

क) 2

ख) 8

ग) 3

घ) 5

13.15. कहरवा ताल में 5वीं मात्रा पर कौन सा बोल होता है?

क) धा

ख) गे

ग) क

घ) न

13.6 सारांश

भारतीय शास्त्रीय संगीत में गायन और वादन के साथ विभिन्न प्रकार की तालों को बजाया जाता है। इन तालों में एक ताल तथा झप ताल विशेष रूप से प्रयोग की जाती हैं। चौताल 12 मात्रा, रूपक ताल 07 मात्रा, कहरवा ताल 08 मात्रा की ताल है। इन तालों को एकगुण, दुगुण, तिगुण व चौगुण लयकारियों में तबले पर बजाया जाता है तथा हाथ पर ताली देकर भी प्रदर्शित किया जाता है। इन तालों का प्रयोग शास्त्रीय संगीत की बंदिशों, गतों के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि क साथ भी बजाया जाता है।

13.7 शब्दावली

- एकगुण: ठाह लय में बोलों को बजाना।
- दुगुण:- दुगनी लय में बोलों को बजाना।
- तिगुण: तिगुनी लय में बोलों को बजाना।
- चौगुण:- चौगुनी लय में बोलों को बजाना।

13.8 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

13.1 उत्तर: घ)

13.2 उत्तर: ग)

13.3 उत्तर: ख)

13.4 उत्तर: क)

13.5 उत्तर: घ)

13.6 उत्तर: घ)

13.7 उत्तर: ग)

13.8 उत्तर: ख)

13.9 उत्तर: क)

13.10 उत्तर: घ)

13.11 उत्तर: घ)

13.12 उत्तर: ग)

13.13 उत्तर: ख)

13.14 उत्तर: क)

13.15 उत्तर: घ)

13.9 संदर्भ

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

भातखंडे, विष्णुनारायण. (1970). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

13.10 अनुशंसित पठन

भातखंडे, विष्णुनारायण. (2017). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

13.11 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. चौताल का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. रूपक ताल का परिचय लिखिए।

प्रश्न 3. कहरवा ताल का परिचय लिखिए।

प्रश्न 4. चौताल, की एकगुण, दुगुण, तिगुण, चौगुण को हाथ पर प्रदर्शित करें तथा बोलकर बताइए।

प्रश्न 5. कहरवा ताल की एकगुण, दुगुण, तिगुण, चौगुण को हाथ पर प्रदर्शित करें तथा बोलकर बताइए।

प्रश्न 6. रूपक ताल की एकगुण, दुगुण, तिगुण, चौगुण को हाथ पर प्रदर्शित करें तथा बोलकर बताइए।

इकाई-14
धमार

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
14.1	भूमिका
14.2	उद्देश्य तथा परिणाम
14.3	धमार
14.3.1	धमार गायन शैली का परिचय
14.3.2	मियां मल्हार राग का परिचय
14.3.3	राग मियां मल्हार में धमार
14.3.4	तानें
	स्वयं जांच अभ्यास 1
1.4	सारांश
1.5	शब्दावली
1.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
1.7	संदर्भ
1.8	अनुशंसित पठन
1.9	पाठगत प्रश्न

14.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA204PR की यह चौदहवीं इकाई है। इस इकाई में गायन संगीत के संदर्भ में, धमार गायन शैली का परिचय, आलाप, बंदिश, तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

धमार उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत की एक कर्णप्रिय गायन शैली है। धमार एक गंभीर प्रकृति की गायन शैली है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में धमार का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार धमार को कई रागों में बांधकर अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी धमार के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, बंदिश आदि को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से ध्रुवपद शैली को गा सकेंगे।

14.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- धमार के स्वरूप की जानकारी प्रदान करना।
- धमार को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- धमार के आलाप, बंदिश तथा तानों को गाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को धमार गायन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी धमार गायन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- धमार के आलाप, बंदिश तथा तानों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- धमार के आलाप, बंदिश तथा तानों को गाने में सक्षम होंगे।

- धमार के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

14.3 धमार

14.3.1 धमार गायन शैली का परिचय

धमार गायन, ध्रुवपद गायन शैली से गाया जाने वाले गीत का एक प्रकार है। यह 14 चौदह मात्रा की 'धमार' ताल में ही गाया जाता है। धमार के गीत में राधा और कृष्ण मुख्य नायक-नायिका होती हैं और होली के अवसर का रंगारंग वर्णन इसमें होता है। 'फाग' से संबंधित होने के कारण इसे 'पक्की होरी' भी कहा जाता है। इसी विषयवस्तु को लेकर होरी नामक अन्य गीतों का भी प्रचलन है, जो दीपचन्दी और त्रिताल में गाए जाते हैं। धमार गीत, ध्रुवपद तथा ख्याल के बीच वाली स्थिति है। इनकी बंदिश, ख्याल के समान दो तुकबंदी वाली होती है, परन्तु गायन की शैली ध्रुवपद के समान होती है। इसके धमार में केवल श्रृंगार रस का ही वर्णन होता है। धमार का उदेश्य गम्भीरता से हट कर श्रृंगारिकता का माहौल पैदा करना है। यह गायन शैली लय प्रधान है। स्वरों का विस्तार विविध आलापों के द्वारा किया जाता है। धमार की संगति मृदंग अथवा पखावज के खुले बाज द्वारा की जाती है।

14.3.2 मियां मल्हार राग का परिचय

राग - मियां मल्हार

थाट – काफी

जाति – संपूर्ण-षाडव

वादी - षड्ज

संवादी - पंचम

वर्जित स्वर – अवरोह में धैवत

स्वर – गंधार कोमल(ग) , दोनों निषाद (नी नी), अन्य स्वर शुद्ध

न्यास के स्वर – षडज, ऋषभ, पंचम, निषाद

समय – मध्य रात्रि

समप्रकृतिक राग – बहार

आरोह: ऩी सा, ᵐरे ऽ प, ᵐग ऽ ग म रे सा, म रे प, नी ऽ ध नी ऽ सा।

अवरोह: सां नि प, म प ᵐगऽ म रे ऽनि ऽ ध़ नि़ ऽ सा ऽ।

पकड़: , ᵐरे ऽ प, ᵐग ऽ ग म रे सा, ऽनि़ ऽ ध़ नि़ ऽ सा

मियां मल्हार राग, काफी थाट का एक मधुर राग है। इस राग की जाति संपूर्ण-षाडव है। मियां मल्हार राग का वादी स्वर ऋषभ तथा संवादी स्वर पंचम है। प्रस्तुत राग में गंधार कोमल(ग), दोनों निषाद (नी नी), अन्य स्वर शुद्ध लगते हैं। राग में अवरोह में धैवत स्वर वर्जित होता है। इस राग का प्रस्तुति समय मध्य रात्रि माना जाता है। इस राग में षडज, ऋषभ, पंचम, निषाद पर न्यास किया जाता है। इस राग की प्रकृति गंभीर है। संगीतकारों का मानना है कि तानसेन ने इस राग को रचा था।

इस राग का समय मध्ययुग माना जाता है क्योंकि प्राचीन ग्रन्थों में इस राग का वर्णन नहीं मिलता है। इस राग को मियाँ मल्हार के स्थान पर 'मल्हार' भी कहा जाता है। मियाँ मल्हार में गंधार कोमल(ग) रूप में प्रयुक्त होता है तथा आन्दोलित रहता है। अवरोह में गंधार का वक्र प्रयोग होता है (म प ᵐग म रे सा), इसमें गंधार का आन्दोलन मध्यम का स्पर्ष करते हुए किया जाता है। मियाँ मल्हार के आरोह में सा रे ग म का सीधा प्रयोग नहीं किया जाता है परन्तु सा रे प के बाद ग म रे सा करते हैं। सा रे प या स्वर संगति मल्हार की विशेष या राग वाचक संगति भी कही गई है।

मियाँ मल्हार के आरोह में शुद्ध निषाद तथा अवरोह में कोमल निषाद का प्रयोग किया जाता है। साथ ही अवरोह में धैवत वर्जित रहने के कारण नि प की संगति रहती है, जैसे- सा म रे ऽ प, म प नि ध नि सां, सां नि प, म प ग म रे सा। कभी-कभी इस राग में दोनों निषादों का एक साथ प्रयोग किया जाता है, जैसे-ग म रे सा, नि़ ध़ नि़ नि़ सा। यह क्रिया अधिकतर मींड से ही ली जाती है। दोनों निषादों का एक साथ प्रयोग मियाँ मल्हार की निजी विशेषता है।

मियाँ मल्हार का समप्रकृतिक राग बहार है। स्वरों की दृष्टि से ये दोनों राग एक समान हैं। दोनों ही रागों में ग म रे सा, नि ध़ नि़ सा तथा नि प स्वर समुदाय प्रयुक्त किये जाते हैं। अन्तर की दृष्टि से देखे तो पता चलता है कि बहार राग उत्तरांग प्रधान है तथा मियाँ मल्हार राग मंद्र तथा मध्य सप्तक में अधिक गाया बजाया जाता है। बहार राग में गंधार का सीधा प्रयोग होता है। दूसरी ओर मियाँ मल्हार में गंधार हमेशा मध्यम का कण लेकर आंदोलित रहता है। मियाँ मल्हार में जहाँ रे प की संगति की जाती है वहीं बहार में सा म की संगति रहती है। यह संगतियाँ राग वाचक मानी जाती हैं, जैसे - मियाँ मल्हार (सा रे प, म प ग म रे सा) बहार (सा म म, म प ग म नि ध नि सां)। दूसरा मुख्य अंतर यह है कि नि़ ध़ नि सा स्वर समुदाय दोनों रागों में अलग अलग ढंग से लगते हैं। बहार राग में इस स्वर समुदाय के हर स्वर को सीधा लिया जाता है, जैसे-नि़ ध़ नि़ सा जबकि मियाँ मल्हार में दोनों निषादों को बढ़ाया जाता है, जैसे -नि़ ऽ ध़ नि़ ऽ सा।

14.3.3 धमार (राग मियाँ मल्हार में)

स्थाई:

अहो धूम मची ब्रज में
होरी की, रंग की परत फुहार

अन्तरा :

अबीर गुलाल के बादर छाए
भर मारत पिचकार

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
x					2		0			3			
स्थाई													
							सा रे	सा	-	सा ध़	नी़	प़	प़
							अ	हो	s	धू	s	म	म
नी़	नी़	ध़	नी़	सा	सा	-							
ची	s	s	ब्र	ज	में	s							
							नी़ सा	-	-नी़	रे	-	सा	-
							हो	s	ss	री	s	की	s
म	प	मप	प नी़	ध	सां	नि							
रं	ग	ss	s	s	s	s							
							रे	सां	-	प नि	प	मप	पनी़
							s	की	s	प	र	तs	फुs
प	-	ग़	म	रे	-	सा							
हा	s	s	s	s	s	र							
अंतरा													
म	प	–	नि़ध	नि़ध	नी़	ध	नी	सां	-	नी	सां	सां	सां
अ	बी	s	रs	गुs	ला	s	ल	के	s	बा	s	द	र
नी	सां	-	रें	-	सां	सां	सां	नि़	ध	नी़	प	म	पनी़
छा	s	s	ए	s	भ	र	मा	s	s	र	त	पि	चs
प	-	ग	म	-	रे	सा							
का	s	s	s	s	र	s							

14.3.4 तानें

- धनिसासा निसारेरे सारेमम रेमपप मपनिनी धनिसासा निसारेरे सरेनिसा गमरेसा निसारेसा निधनिपा मपनिध निनिसा- मपगम रेरेसासा -निधसा
- निधनिसा गमरेसा निसानिध निसारेपा मपगम रेसानीसा निधनिसा सासारे- मपगम रेसानीसा निधनिसा सासारे-पपमप गगमम रेरेसासा निधनिसा मरेपा- मपनिध निनिसा- गमरेसा निसारेसा मपनिध निनिसा- गमरेसा निसारेसा निधनिपा मपगम रेरेसासा निधनिसा
- निसारेनी सरेनिसा निधनिनी सारेनिसा गमगम रेसनिसा मपमप गमगम रेसानीसा रेपमप गमगम रेसनिसा मपमप गमगम रेसानीसा रेपमप मपनिधा निनीसानी रेसानीसा निनीपनी निपमप गमगम रेसानीसा निधनिनी सा--- निधनिनी सा--- निधनिनी सा---
- मपगम रेसा़निसा -ध़निसा -ध़निसा -ध़निसा
- नीनीपनी निपमप गमगम रेसानिसा –धसा
- गमरेसा नीसारेसा नी--- गमरेसा नीसारेसा नी--- गमरेसा नीसारेसा
- निससरेस गममरेसा निपपमप गममरेसा निसासारेसा सानिनीपनी पपपमप गमरेसा

- धनिनीसा धनिनीसा धनिधनि नीसारेसा नीनिधनी सारेरेम सारेरेम सारेसारे रेमपनी पपमप रेममप रेममप रेमरेम मपनिसा निनिपनी
- निसारे सारेमा रेमप मपनी धनिसा सनीपा निपम पमरे मरेसा रेसानी
- निसारेम सारेमप रेमपनी मपनीसा सनीपम निपमरे पमरेसा मरेसानी
- निनीनी सासासा रेरेरे ममम पपप निनीनी सासासा निनीनी पपप ममम रेरेरे सासासा निनीनी

स्वयं जांच अभ्यास 1

14.1. धमार गायन शैली किस ताल में गाई जाती है?

क) धमार

ख) दादरा

ग) सूलताल

घ) तिलवाड़ा

14.2. धमार गायन शैली में मुख्य रूप से किसका वर्णन मिलता है?

क) भगवान शिव

ख) राम-सीता

ग) राधा-कृष्ण

घ) दुर्गा माता

14.3. धमार गायन शैली का साहित्य मुख्य रूप से किस भाषा में होता है?

क) उर्दू

ख) ब्रज भाषा

ग) हिन्दी

घ) पंजाबी

14.4 सारांश

धमार, उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत की एक कर्णप्रिय गायन शैली है। धमार एक गंभीर परंतु श्रृंगार प्रधान गायन शैली है। धमार गायन शैली प्राचीन गायन शैली है। कई जगह इसे होरी नाम से भी जाना जाता है। इस गायन शैली को धमार ताल में ही गाया जाता है। धमार गायन शैली में मुख्य रूप से राधा-कृष्ण तथा उनकी विभिन्न लीलाओं का वर्णन मिलता है। धमार गायन शैली का साहित्य मुख्य रूप से ब्रज भाषा में होता है। धमार के साथ मुख्य रूप से पखावज को बजाया जाता है। धमार गायन शैली ध्रुवपद गायन शैली से मिलती है।

14.5 शब्दावली

धमार : उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में गायन के अंतर्गत धमार ताल में गाई जाने वाली गायन शैली।

बंदिश: शास्त्रीय संगीत के लिए उपयुक्त गेय शब्द रचना करने की प्रक्रिया को 'बंदिश' कहा जाता है।

14.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

14.1 उत्तर: क)

14.2 उत्तर: ग)

14.3 उत्तर: ख)

14.7 संदर्भ

तैलंग, लक्ष्मण भटट. (2008). संगीत रस मंजरी, कनिष्क पब्लिर्शज, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

14.8 अनुशंसित पठन

तैलंग, लक्ष्मण भटट. (2008). संगीत रस मंजरी, कनिष्क पब्लिर्शज, दिल्ली।

भातखंडे, विष्णुनारायण. (1970). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस

14.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. धमार गायन शैली का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. किसी भी राग में धमार को गाकर सुनाइए।।

प्रश्न 3. किसी भी राग में धमार को लिखिए।।

इकाई-15
बागेश्री राग की द्रुत गत/रजाखनी गत (एकताल में)

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
15.1	भूमिका
15.2	उद्देश्य तथा परिणाम
15.3	राग बागेश्री
15.3.1	बागेश्री राग का परिचय
15.3.2	बागेश्री राग का आलाप
15.3.3	बागेश्री राग की द्रुत गत/रजाखनी गत (एक ताल में)
15.3.4	बागेश्री राग के तोड़े
	स्वयं जांच अभ्यास 1
15.4	सारांश
15.5	शब्दावली
15.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
15.7	संदर्भ
15.8	अनुशंसित पठन
15.9	पाठगत प्रश्न

15.1 भूमिका

संगीत (वादन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA204PR की यह पंद्रहवीं इकाई है। इस इकाई में वादन संगीत के संदर्भ में, राग बागेश्री का परिचय, आलाप, एक ताल में द्रुत गत/रजाखनी गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को कई तालों में बांधकर अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग का, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग बागेश्री में, एकताल में द्रुत गत/रजाखनी गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे, साथ ही क्रियात्मक रूप से बजा सकेंगे।

15.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- बागेश्री राग के स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- एक ताल में द्रुत गत/रजाखनी गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- एक ताल में द्रुत गत/रजाखनी गत तथा तोड़ों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को वादन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी वादन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- एक ताल में द्रुत गत/रजाखनी गत तथा तोड़ों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- एक ताल में द्रुत गत/रजाखनी गत तथा तोड़ों को बजाने में सक्षम होंगे।

- एक ताल में द्रुत गत/रजाखनी गत के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

15.3 राग बागेश्री

15.3.1 बागेश्री राग का परिचय

राग - बागेश्री

थाट - काफ़ी

जाति - औडव संपूर्ण

वादी - मध्यम

संवादी - षड्ज

स्वर - गंधार तथा निषाद कोमल (ग़ नि़)

वर्जित - आरोह में रिषभ तथा पंचम

समय - रात्रि का तीसरा प्रहर

समप्रकृतिक राग - रागेश्री

आरोह – ऩी सा ग़ म ध नि़ सां

अवरोह - सां नि़ ध, म प ध ग़, म ग़ रे सा

पकड़ - सां नि़ ध म प ध ग़, रे सा

बागेश्री राग काफी थाट का एक राग है। इसकी जाति औडव-संपूर्ण मानी जाती है। वादी स्वर मध्यम तथा संवादी स्वर षड्ज है। इस राग में गंधार तथा निषाद कोमल प्रयुक्त होते हैं। बागेश्री राग के आरोह में रिषभ तथा पंचम वर्जित रहते हैं।

इसका समय रात्रि का तीसरा प्रहर माना जाता है। बागेश्री एक अत्यन्त मधुर राग है। इस राग का उपयोग कर विद्वानों ने कई मधुर सांगीतिक रचनाएं की हैं। आरोह करते समय रिषभ वर्जित रहता है अतः प्रारम्भ में ऩी सा ग म ध, ऩी सा ग म आदि किया जाता है। इस राग में षड्ज से सीधे मध्यम पर भी आते हैं। जैसे-ऩी सा म ग रे सा। षड्ज से मध्यम पर आना इस राग की अपनी विशेषता है।

बागेश्री राग में पंचम का अल्प प्रयोग होता है। राग का अवरोह करते समय पंचम का प्रयोग केवल एक विशेष ढंग से किया जाता है, जैसे सां नी ध, म प ध ऽ ग, म ग रे सा। पंचम का सीधा प्रयोग राग में नहीं किया जाता है, जैसे सां नी ध प म आदि।

इस राग का प्रमुख स्वर समुदाय ध़ ऩी सा म, ग म ध नी ध तथा म प ध ग ऽ है। इन्हीं के आधार पर आलाप तान आदि की रचनाएं की जाती हैं। इस राग में ध ग की संगति प्रयुक्त होती है, जैसे- म प ध ग, रे सा। बाग्रश्री राग का आरम्भ (आलाप) सा ऩी ध़ ऩी सा म या ध़ ऩी सा म करते हुए ही करना चाहिए।

इसका समप्रकृतिक राग रागेश्री है। दोनों में अंतर यह है कि बागेश्री में पंचम का प्रयोग किया जाता है वही रागेश्री में पंचम वर्जित रहता है।

बागेश्री में कोमल गंधार का प्रयोग है वहीं दूसरी ओर रागेश्री में गंधार शुद्ध है जैसे- बागेश्री - ऩी सा म ग, म ध नी ध, म प ध ग, म ग रे सा। रागेश्री – ऩी सा ग म, ग म ध नी ध म, ग म रे सा।

15.3.2 बागेश्री राग का आलाप

- सा, नी सा, सा, ऩी ध़ - सा रे सा,
- ध़ ऩी ऩी ध़ ऩी सा, सा ऩी ध़ म़ -, म़ ध़ ऩी ऩी सा, सा,

- ध़ ऩी सा म ग – म ग रे सा
- सा ऩी ध़ ऩी ध़ -, म़ म़ ध़, म़ ध़ ऩी ऩी सा, सा
- ध़ ऩी सा म -, ग म ग रे सा, ग

  म ग – ग म ध – म ग, म ग रे सा
- म ग ध, ध म – ध नी ध म, म ध नी नी सां, सां
- सां – गं गं रें सां -, ध नी नी सां, मं गं रें सां सां,
- सां नी ध नी ध – म प ध ग – म ग

  रे सा, ध़ ऩी ऩी सा म ग रे सा, सा

15.3.3 बागेश्री राग द्रुत गत/रजाखनी गत

राग: बागेश्री **ताल: एक ताल** **लय: द्रुत लय**

x		0		2		0		3		4	
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
स्थाई											
सा	गग	म	ग	-ग	रे	सा	ऩी	सा	ग	रें	ऩी
दा	दिर	दा	दा	ऽर	दा	रा	दा	रा	ऽ	दा	रा
ध़	-ध़	म़	ध़	-ऩी	ऩी	सा	ऩी	ध़	ऩीऩी	गम	गरे
दा	ऽर	दा	दा	ऽर	दा	रा	दा	रा	दिर	दिर	दिर
अन्तरा											
म	गग	म	ध	-ध	ध	नी	-नी	नी	ध	-ध	नी
दा	दिर	दा	दा	ऽर	दा	रा	दा	रा	ऽ	दा	रा
सां	-सां	सां	नी	-नी	सां	ध	नी	सांमं	गंमं	गं	रें
दा	ऽर	दा	दा	ऽर	दा	दा	रा	दिर	दिर	दा	रा
सां	गंगं	ममं	गं	-गं	रें	सां	नी	सां	नीनी	ध	नी
दा	दिर	दिर	दा	ऽर	दा	दा	रा	दा	दिर	दा	रा
ध	-ध	ध	म	प	ध	ग	रें	-रे	रे	सा	धनी
दा	ऽर	दा	दा	रार	दा	रा	दा	-द	दा	रा	दिर

15.3.4 बागेश्री राग के तोड़े

- सांनी धनी सांनी धनी धम गम गरे साऩी
  ध़ऩी साध़ ऩीसा ध़ऩी
- गम धनी सांनी धनी सां- म- सा- --
  गम धनी सांनी धनी सां- म- सा- --
  गम धनी सांनी धनी सां- म- सा- --
- गम धनी सांनी धनी सां- सां- सां- --
  गम धनी सांनी धनी सां- सां- सां- --
  गम धनी सांनी धनी सां- सां- सां- --
- ऩीसा गम धनी धम गम धम गरे सासा
  ऩीसा गम गरे सा- ऩीसा गम गरे सा-
  ऩीसा गम गरे सा-
- सांनी धनी धम पध ग- मग रेसा ऩीसा
  गम गम ध- मग रेसा साग मग मध
  -म गरे सासा - ग मग मध -म गरे

• धऩी	सा,ध़	ऩीसा,	ध़ऩी,	गम	ध,ग	मध,	गम,
धनी	सां,ध	नीसां,	धनी,	धनी	सांनी	धम	गम
धम	गम	गरे	सासा	गम	धनी	सां-	गम
धनी	सां-	गम	धनी				

स्वयं जांच अभ्यास 1

15.1 बागेश्री राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) म

ख) नि

ग) नी

घ) ग

15.2 बागेश्री राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) सा

ग) प

घ) म

15.3 बागेश्री राग का समय निम्न में से कौन सा है?

क) दिन का प्रथम प्रहर

ख) दिन का तीसरा प्रहर

ग) रात्रि का तीसरा प्रहर

घ) दोपहर

15.4 बागेश्री राग में, निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में कोमल होता है?

क) कोई भी नहीं

ख) षड़ज

ग) मध्यम

घ) गंधार

15.5 बागेश्री राग में निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में वर्जित होता है?

क) प

ख) म

ग) म

घ) सा

15.6 बागेश्री राग का थाट निम्न में से कौन सा है?

क) कल्याण

ख) काफी

ग) भैरवी

घ) तोड़ी

15.7 बागेश्री राग के संदर्भ में निम्न में से कौन सी स्वर संगति ठीक है?

क) ध नि ध प, म॑ ग

ख) ध सां नि ध प, म ग

ग) नि ध म प ध ग

घ) ध नि सां नी ध म ग

15.8 बागेश्री राग की बंदिशों/गतों में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 9

ख) 16

ग) 2

घ) 1

15.9 बागेश्री राग की बंदिशों/गतों के साथ केवल एकताल का ही प्रयोग होता है।

क) नहीं

ख) हां

15.10 बागेश्री राग, काफी तथा श्री रागों के मिश्रण से बना है।

क) सही

ख) गलत

15.4 सारांश

बागेश्री राग भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रचलित राग है। शास्त्रीय संगीत की वादन विधा के अंतर्गत इस राग को बजाया जाता है। शास्त्रीय संगीत में रागों के प्रस्तुतिकरण के लिए तथा संगीत के अभ्यास के लिए राग का अभ्यास शुरू से ही किया जाता है। इस राग में द्रुत गत/रजाखनी गत को तीन ताल के अतिरिक्त अत्य तालों में भी बजाया जाता है। इसमें

15.5 शब्दावली

- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप सें राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।
- मसीतखानी गत: वादन के अंतर्गत, जराग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी स्वर रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो, विलंबित लय में बजाई जाती हो तथा जिसके बोल निश्चित हों (दिर दा दिर दा रा दा दा रा), उसे मसीतखानी गत कहते हैं।
- द्रुत गत: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी स्वर रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा द्रुत लय में बजाई जाती हो उसे द्रुत गत कहते हैं।
- तोड़ा: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, बजाया जाता है तो उसे तोड़ा कहते हैं।
- लय: वादन/आायन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।
- द्रुत लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति मे चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।

15.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

15.1 उत्तर: क)

15.2 उत्तर: ख)

15.3 उत्तर: ग)

15.4 उत्तर: घ)

15.5 उत्तर: क)

15.6 उत्तर: ख)

15.7 उत्तर: ग)

15.8 उत्तर: घ)

15.9 उत्तर: क)

15.10 उत्तर: ख)

15.7 संदर्भ

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (1999). मधुर स्वरलिपि संग्रह (भाग 1-3), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2045). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2004). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

15.8 अनुशंसित पठन

भातखंडे, विष्णुनारायण. (2017). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

झा, पं. रामाश्रय. (2040). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

15.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग बागेश्री का परिचय लिखिए/बताइए।

प्रश्न 2. राग बागेश्री का आलाप लिखिए।

प्रश्न 3. राग बागेश्री की विलंबित गत को लिखिए।

प्रश्न 4. राग बागेश्री में पांच तोड़ों को लिखिए।

इकाई-16
लोक गीत / लोक धुन

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
16.1	भूमिका
16.2	उद्देश्य तथा परिणाम
16.3	लोक गीत
16.3.1	लोक गीत का परिचय
16.3.2	लोक गीत के बोल
16.3.3	लोक गीत की स्वरलिपि
16.3.4	लोक धुन की स्वरलिपि
	स्वयं जांच अभ्यास 1
16.4	सारांश
16.5	शब्दावली
16.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
16.7	संदर्भ
16.8	अनुशंसित पठन
16.9	पाठगत प्रश्न

16.1 भूमिका

संगीत (वादन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA204PR की यह सोलहवीं इकाई है। इस इकाई में वादन/गायन संगीत के संदर्भ में, लोक गीत / लोक धुन को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

भारतीय संस्कृति का एक विशेष भाग है लोक संगीत। इस लोक संगीत के अंतर्गत गायन, वादन व नृत्य तीनों आते हैं। लोक गीत, लोक संगीत का प्रमुख भाग है। लोकगीतों में लोक संस्कृति से संबंधित सामग्री मिलती है। इसमें भक्ति भक्ति रस, श्रृंगार रस करुण रस, वीर रस, आदि से संबंधित गीत मिलते हैं। इन गीतों के रचयिता का पता नहीं होता है परंतु यह गीत लोक संस्कृति तथा उस क्षेत्र के बारे में विस्तृत रूप से जानकारी प्रदान करते हैं।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी लोक गीत / लोक धुन को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे, साथ ही क्रियात्मक रूप से बजा तथा गा सकेंगे।

16.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- लोक गीत / लोक धुन के स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- लोक गीत / लोक धुन को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- लोक गीत / लोक धुन को बजाने तथा गाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को वादन/गायन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी वादन/गायन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- लोक गीत / लोक धुन को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- लोक गीत / लोक धुन को बजाने/गाने में सक्षम होंगे।

- लोक गीत / लोक धुन के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

16.3 लोक गीत

16.3.1 लोक गीत का परिचय

लोक संगीत, भारतीय संस्कृति का एक विशेष भाग है। लोक संगीत के अंतर्गत गायन वादन व नृत्य तीनों आते हैं। लोक गीत, लोक संगीत का प्रमुख भाग है। लोकगीतों में लोक संस्कृति से संबंधित सामग्री मिलती है। इसमें भक्ति भक्ति रस, श्रृंगार रस करुण रस, वीर रस, आदि से संबंधित गीत मिलते हैं। इन गीतों के रचयिता का पता नहीं होता है परंतु यह गीत लोक संस्कृति तथा उस क्षेत्र के बारे में विस्तृत रूप से जानकारी प्रदान करते हैं।

प्रस्तुत लोकगीत हिमाचल प्रदेश का एक प्रसिद्ध लोकगीत है। यह यह भक्ति रस से प्रधान गीत है। इस गीत में भगवान शिव की स्तुति की गई है। भगवान शिव को कैलाश का वासी बताया गया है और धौलीधार पर्वत का राजा बताया गया है तथा प्रार्थना की गई है कि वह हमारे संकटों को दूर करें और हमें सुख समृद्धि प्रदान करें। यह गीत चाचर ताल में निबद्ध है जो दीपचंदी के लिए सदृश्य है। यह 14 मात्रा की ताल है। इसे मध्य लय में गाया जाता है।

16.3.2 लोंक गीत के बोल

शिव कैलाशों के वासी

स्थाई

शिव कैलाशों के वासी, धौलीधारों के राजा
शंकर संकट हरणा।

अन्तरा

तेरे कैलाशों का अंत ना पाया,
अंत बेअंत तेरी माया,
ओ भोले बाबा अंत बेअंत तेरी माया
शिव कैलाशों के वासी, धौलीधारों के राजा

बेल की पत्ती भांग धतूरा
शिवजी के मान को लुभाए
ओ भोले बाबा शिवजी के मन को लुभाए
शिव कैलाशों के वासी, धौलीधारों के राजा....

एक था डेरा तेरा,चांबे रे चौगाना
दूजा लाई दीता भरमौरा
ओ भोले बाबा दूजा लाई दीता भरमौरा
शिव कैलाशों के वासी, धौलीधारों के राजा....

दूरा बे दूरां ते जातरू जे आंदे,
करदे जै जै कारा,
ओ भोले बाबा करदे जय जयकारा
शिव कैलाशों के वासी, धौलीधारों के राजा....

16.3.3 लोक गीत की स्वरलिपि

x			2				0			3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
स्थाई													
										ग	रे	ग	-
										शि	व	कै	ऽ
म	-	-	ग	रे	ग	रे	सा	सा	-	ग	रे	ग	-
ला	ऽ	ऽ	शों	ऽ	ऽ	के	रा	जा	ऽ	धौ	ऽ	ली	ऽ
म	-	-	ग	रे	ग	रे	सा	सा	-	नि	-	-	-
धा	ऽ	ऽ	रों	ऽ	के	ऽ	रा	ऽ	ऽ	जा	ऽ	ऽ	ऽ
प़	-	-	नि़	-	-	नि़	सा	-	-	ग	रे	ग	रे
सं	ऽ	ऽ	क	ऽ	ऽ	ट	शं	ऽ	ऽ	क	ऽ	ऽ	र
नि़	नि़	ऽ	सा	-	-	-	-	-	-				
ह	र	ऽ	ना	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ				
										ग	रे	ग	-
										शि	व	कै	ऽ
म	-	-	ग	रे	ग	रे	सा	सा	-	ग	रे	ग	-
ला	ऽ	ऽ	शों	ऽ	ऽ	के	रा	जा	ऽ	धौ	ऽ	ली	ऽ
म	-	-	ग	रे	ग	रे	सा	सा	-	नि	-	-	-
धा	ऽ	ऽ	रों	ऽ	के	ऽ	रा	ऽ	ऽ	जा	ऽ	ऽ	ऽ
प़	-	-	नि़	-	-	नि़	सा	-	-	ग	रे	ग	रे
सं	ऽ	ऽ	क	ऽ	ऽ	ट	शं	ऽ	ऽ	क	ऽ	ऽ	र
नि़	नि़	ऽ	सा	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
ह	र	ऽ	ना	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

x			2				0			3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
अन्तरा													
रे	-	-	म	-	म	-	प	-	-	प	-	प	-
ते	ऽ	ऽ	रे	ऽ	कै	ऽ	ला	ऽ	ऽ	शा	ऽ	रा	ऽ
म	-	प	ध	प	ध	प	म	-	-	ग	-	रे	-
अं	ऽ	ऽ	त	ऽ	ऽ	नी	पा	ऽ	ऽ	या	ऽ	ऽ	ऽ
म	म	-	म	-	म	-	ग	-	-	सा	-	रे	-
ल	ग	ऽ	न	ऽ	र	ऽ	हे	ऽ	ऽ	ते	ऽ	रे	ऽ
नि़	नि़	ऽ	सा	-	-	रे	रे	म	प	सां	-	सां	-
च	र	ऽ	णा	ऽ	ऽ	हो	मे	रे	ऽ	शं	ऽ	भू	ऽ
प	ध	-	म	-	म	-	ग	-	-	सा	-	रे	-
ल	ग	ऽ	न	ऽ	र	ऽ	हे	ऽ	ऽ	ते	ऽ	रे	ऽ
नि़	नि़	ऽ	सा	-	-	-	-	-	-				
च	र	ऽ	णा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ				

16.3.4 लोक धुन की स्वरलिपि

x			2				0			3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
स्थाई													
										ग	रे	ग	-
										दा	रा	दा	ऽ
म	-	-	ग	रे	ग	रे	सा	सा	-	ग	रे	ग	-
दा	ऽ	ऽ	दा	रा	दा	रा	दा	रा	ऽ	दा	रा	दा	ऽ
म	-	-	ग	रे	ग	रे	सा	सा	-	नि	-	-	-
दा	ऽ	ऽ	दा	रा	दा	रा	दा	रा	ऽ	दा	ऽ	ऽ	ऽ
प़	-	-	नि़	-	-	नि़	सा	-	-	ग	रे	ग	रे
दा	ऽ	ऽ	दा	ऽ	ऽ	दा	रा	ऽ	ऽ	दा	रा	दा	रा
नि़	नि़	ऽ	सा	-	-	-	-	-	-				
दा	रा	ऽ	रा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ				

x			**2**				**0**			**3**			
1	**2**	**3**	**4**	**5**	**6**	**7**	**8**	**9**	**10**	**11**	**12**	**13**	**14**
अन्तरा													
रे	रे	-	म	-	म	-	प	-	-	प	-	प	-
दा	रा	ऽ	दा	ऽ	रा	ऽ	दा	ऽ	ऽ	दा	ऽ	रा	ऽ
म	-	प	ध	प	ध	प	म	-	-	ग	-	रे	-
दा	ऽ	दा	रा	दा	रा	दा	रा	ऽ	ऽ	दा	ऽ	रा	ऽ
म	म	-	म	-	म	-	ग	-	-	सा	-	रे	-
दा	रा	ऽ	दा	ऽ	रा	ऽ	दा	ऽ	ऽ	दा	ऽ	रा	ऽ
नि़	नि़	ऽ	सा	-	-	रे	रे	म	प	सां	-	सां	-
दा	रा	ऽ	दा	ऽ	ऽ	दा	रा	दा	रा	दा	ऽ	रा	ऽ
प	ध	-	म	-	म	-	ग	-	-	सा	-	रे	-
दा	रा	ऽ	दा	ऽ	रा	ऽ	दा	ऽ	ऽ	दा	ऽ	रा	ऽ
नि़	नि़	ऽ	सा	-	-	-	-	-	-				
दा	रा	ऽ	दा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ				

स्वयं जांच अभ्यास 1

16.1 दीपचंदी ताल में कितनी मात्राएं होती हैं?

क) 14

ख) 12

ग) 16

घ) 8

16.2 लोक संगीत के अंतर्गत निम्न में से कौन आता है?

क) गायन, नृत्य

ख) गायन, वादन, नृत्य

ग) वादन, नृत्य

घ) गायन, वादन, नृत्य, शास्त्रीय संगीत

16.3 प्रस्तुत लोक गीत किस राज्य का लोक गीत है?

क) हिमाचल प्रदेश

ख) पंजाब

ग) हरियाणा

घ) जम्मू कश्मीर

16.4 सारांश

भगवान शिव के संबंधित यह एक मधुर तथा लोकप्रिय लोकगीत है। जो 14 मात्रा की चाचर ताल में गाया जाता है। इसकी लय मध्य है। इस लोकगीत को हिमाचल प्रदेश के पारंपरिक लोक वाद्यों के साथ गाया जाता है

16.5 शब्दावली

- हरणा - हरण करने वाले
- जातरू - तीर्थयात्री
- आंदे - आते हैं
- लय: वादन/आायन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।
- द्रुत लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति मे चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।

16.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

16.1 उत्तर: क)

16.2 उत्तर: ख)

16.3 उत्तर: क)

16.7 संदर्भ

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

16.8 अनुशंसित पठन

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

झा, पं. रामाश्रय. (2040). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

16.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. किसी एक लोक गीत को गाकर सुनाइए।

प्रश्न 2. किसी एक लोकगीत की स्वरलिपि लिखिए।

प्रश्न 3. किसी एक लोक धुन को बजाकर सुनाइए।

प्रश्न 4. किसी एक लोकधुन की स्वरलिपि लिखिए।

महत्वपूर्ण प्रश्न - कार्यभार

प्रश्न 1. राग बागेश्री का परिचय, आलाप, विलंबित ख्याल, छोटा ख्याल को पांच-पांच तानों सहित लिखिए।

प्रश्न 2. राग मियां मल्हार का परिचय, आलाप, विलंबित ख्याल, छोटा ख्याल को पांच-पांच तानों सहित लिखिए।

प्रश्न 3. राग जौनपुरी का परिचय, आलाप, विलंबित ख्याल, छोटा ख्याल को पांच-पांच तानों सहित लिखिए।

प्रश्न 4. राग बागेश्री का परिचय, आलाप, विलंबित गत, द्रुत गत को पांच-पांच तोड़ों सहित लिखिए।

प्रश्न 5. राग मियां मल्हार का परिचय, आलाप, विलंबित गत, द्रुत गत को पांच-पांच तोड़ों सहित लिखिए।

प्रश्न 6. राग जौनपुरी का परिचय, आलाप, विलंबित गत, द्रुत गत को पांच-पांच तोड़ों सहित लिखिए।

प्रश्न 7. चौताल का पूर्ण परिचय तथा उसकी एकगुण, दुगुण, तिगुण, चौगुण लिखिए।

प्रश्न 8. झपताल का पूर्ण परिचय तथा उसकी एकगुण, दुगुण, तिगुण, चौगुण लिखिए।

प्रश्न 9. धमार ताल का पूर्ण परिचय तथा उसकी एकगुण, दुगुण, तिगुण, चौगुण लिखिए।

प्रश्न 10. रूपक ताल का पूर्ण परिचय तथा उसकी एकगुण, दुगुण, तिगुण, चौगुण लिखिए।